DEPOSIT MOBILISATION BY REGIONAL RURAL BANKS

(क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा निक्षेप एकत्रीकरण)
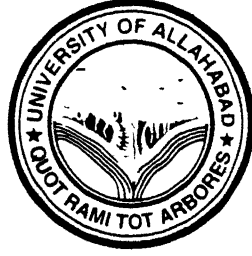
A

THESIS

Submitted for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

COMMERCE

by

SHYAM KRISHNA PANDEY

M Com

Under the Supervision of

Dr. SARFARAZ AHMAD ANSARI

Reader

DEPARTMENT OF COMMERCE AND BUSINESS ADMINISTRATION

UNIVERSITY OF ALLAHABAD

ALLAHABAD

1998

प्राक्कथन

प्रत्येक आर्थिक क्रिया का वित्त से अविभाज्य सम्बन्ध होता है क्योकि वित्तीय आधार प्रत्येक आर्थिक क्रिया की एक महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षा होती है। किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास मे वित्त की अद्वितीय भूमिका होती है। एक स्वस्थ शरीर के लिए जो कार्य धमनी और शिराओ का होता है वही कार्य वित्त का एक अर्थव्यवस्था के विकास मे होता है। यह तथ्य कृषि के लिए भी समान रूप से लागू होता है। कृषको को उर्वरक, बीज, कृषि यत्र एव कीटनाशक दवाइयॉ खरीदने, मजदूरी और लगान का भुगतान करने, भूमि मे आधारिक सुधार करने, विभिन्न उपभोग वस्तुओ की प्राप्ति एव पुराने ऋणो के परिशोधनार्थ वित्त की आवश्यकता होती है। नियोजन के पूर्व कृषि का स्वरूप मूलत परम्परावादी रहा। फलत कृषि साख की आवश्यकता कम थी और उसकी आपूर्ति मुख्यत निजी स्रोतो से हो जाती थी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात यह देखा गया कि सदियो के आर्थिक शोषण ने देश के अधिसख्य नागरिको को विपन्न कर दिया है। अत उनके विकास के लिए वित्त की आवश्यकता को प्रमुखता से महसूस किया गया। एक विशाल देश के दूर-दराज क्षेत्रो तक वित्तीय ससाधनो का प्रबध करना सभव नहीं था। इन परिस्थितियो मे काम करते हुए यह पाया गया है कि वित्त की माग की पूर्ति बैको की

सहायता से काफी हद तक पूरी हो सकती है अत इस दिशा मे शासन ने कदम बढाए और बैको पर सामाजिक नियन्त्रण व राष्ट्रीयकरण आदि के द्वारा वित्त की पर्याप्त व्यवस्था की गयी लेकिन इतना हो जाने के बावजूद व्यापकता की समस्या गभीर बनी हुई थी।

पूर्व स्थापित व्यावसायिक बैंको की स्थापना लागत अधिक थी अत देश के दूर-दराज के अचलो मे इनकी शाखाओ का खोला जाना व्यावहारिक नहीं पाया गया और यही कारण था कि गरीब तबके तक अधिकोषीय सुविधा प्रदान करना शासन के लिए दुश्कर हो गया। इन दो समस्याओ को देखते हुए शासन ने क्षेत्रीय ग्रामीण अधिकोषो की स्थापना की। क्षेत्रीय ग्रामीण अधिकोषो की स्थापना से स्थापना लागत पर नियत्रण एव व्यापक स्तर पर शाखा विस्तार सभव हो सका।

आजादी के बाद के दशको मे हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था मे एक सकारात्मक परिवर्तन यह आया कि लोग अपनी ऋण जरूरतो के लिए अब बैको की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। अत ग्रामीण ऋण के मामले मे इतने व्यापक सस्थागत सजाल की वजह से अनौपचारिक सस्थाओ तथा व्यक्तियो की भूमिका काफी सीमित हो गयी है। ग्रामीण क्षेत्रो की वित्तीय आवश्यकताओ को पूरा करने मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की भी काफी बडी भूमिका है।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का उद्देश्य न केवल किसानो वरन् छोटे एव सीमान्त कृषको, भूमिहीन, श्रमिको, लघु उद्यमकर्ताओ तथा छोटे कारीगरो को भी ऋण व अन्य सुविधाए दिलाना है, जिससे ग्रामीण इलाको मे न केवल कृषि वरन् उद्योग, व्यापार, वाणिज्य आदि का भी विकास हो और ग्रामीण विकास तीव्र हो सके।

कालान्तर मे यह देखा गया कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रो मे **"निक्षेप एकत्रीकरण"** की सम्भावना है क्योकि बैकिग शाखाओ के अभाव मे यह धन लोगो के पास निष्क्रिय रूप मे पडा रहता था जिसका न तो जनहित और न तो राष्ट्रहित मे ही उपयोग किया जा सकता था। इस प्रकार सग्रहण की प्रबल सम्भावना को देखते हुए ग्रामीण बैंको को यह कार्य भी करने की छूट प्रदान की गयी, जिसका बैंकिग उद्योग पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा क्योकि निष्क्रिय पूॅजी इन बैको के माध्यम से सरकार तक पहुॅच सकी और इस पूॅजी का उपयोग जन-कल्याण के कार्यों हेतु किया जाने लगा।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को निम्नलिखित महत्वपूर्ण अध्यायो में विभाजित किया गया है -

१ परिचय

२ भारत मे बैकिग ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ।

३ भारत मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापना से जून १९९७ तक ।

४ इलाहाबाद जनपद आर्थिक, सामाजिक एव सास्कृतिक समीक्षा ।

५ क्षेत्रीय ग्रामीण बैको द्वारा निक्षेप एकत्रीकरण (इलाहाबाद जनपद के विशेष सदर्भ मे)

६ निष्कर्ष एव परामर्श।

शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का सक्षिप्त परिचय, शोध विषय की परिकल्पना, अध्ययन का क्षेत्र, अध्ययन की विधि तथा सीमाओ का स्पष्ट उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अर्न्तगत भारत की सम्पूर्ण बैकिग प्रणाली का क्रमबद्ध वर्णन किया गया है तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैक और अन्य सभी अनुसूचित व्यावसायिक बैको का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय के अर्न्तगत भारत मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना, उद्देश्य तथा कार्य, जमाओ तथा अग्रिमो का वृहत अवलोकन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय मे इलाहाबाद जनपद की सामाजिक आर्थिक तथा सास्कृतिक समीक्षा मनोरम ढग से प्रस्तुत की गयी है। इसके अर्न्तगत जनपद की भौगोलिक स्थिति, प्रशासनिक व्यवस्था, जनसख्या, शिक्षा, रोजगार तथा सिचाई आदि के ऑकडों को दर्शाया गया है।

दी। वाणिज्य एव व्यवसाय प्रशासन विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो० जगदीश प्रकाश के प्रति भी मैं धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा, जिन्होने शोध कार्य करने का सुअवसर तथा सनय-समय पर मुझे शोध कार्य को पूरा करने में उत्साह प्रदान किया। मैं अपने गुरूजन बृन्द प्रो० जे०के० जैन, डॉ० प्रदीप जैन तथा डॉ० जे०एन० मिश्र का भी आभारी हूँ जिन्होने मेरे शोध कार्य के प्रत्येक स्तर पर मुझे बहुमूल्य सुझाव प्रदान की।

मैं श्री राजमणि पाण्डेय (शाखा प्रबन्धक इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक) का विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिनसे "क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक" से सम्बधित इस विषय पर शोध करने की प्रेरणा प्राप्त हुई तथा जिन्होने कार्य-भार से अति व्यस्त होते हुए भी समय-समय पर अनेक प्रकार से सहायता प्रदान की। वाणिज्य विभाग के मेरे सहपाठी शोध छात्रगण जिन्मे श्री घनश्याम उपाध्याय, राजबिहारी लाल श्रीवास्तव, जीतेन्द्र नाथ द्विवेदी, आनन्द सिह, सोमदेव मिश्र, अजय शर्मा, डॉ० कौशलेन्द्र सिह एद मार्गदर्शक गुरूभाई डॉ० मो० सलमान असारी (वरिष्ठ प्रवक्ता, शिवली नेशनल कालेज आजमगढ) का भी मैं अभारी हूँ जिनके अनन्य सहयोग से शोध कार्य द्रुति गति से पूर्ण हो सका।

अपने मित्रगण डॉ० अजय शुक्ला (प्रवक्ता जय नारायण डिग्री कालेज), श्री विजय कुमार शुक्ला (सहायक विकास अधिकारी), राजेश कुमार पाण्डेय और रवीन्द्र नाथ

त्रिपाठी (प्रवक्ता) के प्रति भी आभार ज्ञापित करता हूँ जिन्होनें शोध कार्य के सन्दर्भ मे मेरी हर तरह से सहायता की। विषय सामग्री को अधिक अद्यतन और बोधगम्य बनाने के लिए जिन विभिन्न प्रतिवेदनो, पत्रिकाओं और सन्दर्भ ग्रन्थों का प्रयोग किया गया है, उनके प्रणेताओ और प्रकाशको के प्रति मैं आभार ज्ञापित करता हूँ। मैं अपनी पूजनीया माता स्व० श्रीमती गुलाब पत्ती देवी के श्री चरणो में अपना कोटिश प्रणाम आर्पित करता हूँ जिनकी शुभाशसा या आशीर्वचन से ही मैं यह कार्य पूर्ण कर सका। उन्हीं पुण्यात्मा की स्मृति मे यह शोधप्रबन्ध समर्पित करते हुए मैं स्वय को धन्य समझ रहा हूँ। मेरे शोध कार्य में सहयोग के लिए मै अपने आदरणीय पिता श्री कमला प्रसाद पाण्डेय के प्रति भी विशेष रूप से आभारी हूँ।

अन्त मैं अपने इस शोध प्रबन्ध को इतने सुन्दर ढग से व समय पर मुद्रित करने के लिए ***'जय दुर्गा मा कम्प्यूटर प्वाइन्ट"*** मनमोहन पार्क, कटरा, इलाहाबाद के रतन खरे, मोहम्मद इस्तियाक तथा कु० प्रीती यादव को विशेष धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके सहयोग से ही मै इसे समय पर प्रस्तुत कर सका।

वाणिज्य एवं व्यवसाय पशासन विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

दिनाक 17/9/98

श्याम कृष्ण पाण्डेय
(श्याम कृष्ण पाण्डेय)

अनुक्रमणिका

अध्याय : 1

परिचय

भारत मे स्वतत्रता के बाद से बैकिग के विकास का इतिहास पाश्चात्य ढग से प्रारभ हुआ। वाणिज्य बैको को बढती आवश्यकताओ और विकास की जटिलताओ के अनुरूप सफलतापूर्वक ढाले जाने का उल्लेखनीय उदाहरण है। स्वतत्रता के बाद के चालीस वर्षो के दौरान आर्थिक विकास मे बैकिग ने जो भूमिका निभायी है, उसे समझने के लिए पृष्ठिभूमि के रूप मे स्वतत्रता से पहले विद्यमान बैंकिग स्थिति का सक्षिप्त वर्णन उचित रहेगा। 1935 मे भारत मे बैंक कार्यालयो की सख्या 946 थी, जिनमे से 160 शाखाए इम्पीरियल बैक की तथा शेष अन्य बैंको की थी। इससे लगभग प्रति तीन लाख की जनसख्या के लिए एक बैंक कार्यालय था। वस्तुत अधिकाश जनसख्या के लिए बैंकिग सुविधाए उपलब्ध नहीं थी। देशी बैकरो और महाजनो को अपने कार्यो के लिए बहुत गुजाइश थी। यह आम विश्वास था कि मुद्रा बाजार का असगठित क्षेत्र, जिसमे देशी बैकरो और महाजनो के नाम से मुख्यत दो स्थूल श्रेणिया थी, उतना ही बडा था, जितना सगठित क्षेत्र/देशी बैकर जमाराशिया प्राप्त करते थे, सयुक्त पूँजी वाले बैको के साथ सामान्यतया हुडियो को भुनाने के रूप मे ऋण व्यवस्था रखते थे और मुख्यत व्यापार और उद्योग के लिए वित्त प्रदान करते थे वे प्रेषणो के क्रय और विक्रय के माध्यम से सामान्य बैंकिग सुविधाए भी प्रदान करते थे। देशी बैकरो के अग्रिम अधिकतर जमानत के आधार पर होते थे, उनकी

ऋण पर दरे (भुनाई दरे) वाणिज्य बैको द्वारा लगायी जानेवाली दरो से उच्चतर होती थी दूसरी ओर महाजन आम तौर पर जमाराशिया प्राप्त नहीं करते थे, सगठित बैकिग क्षेत्र से बहुत कम उधार लेते थे, और मुख्य रूप से अनुत्पादक व्यय के लिए वित्त प्रदान करते थे। सामान्यतया बैकिग सेवाए देश के किसी भी भाग मे पर्याप्त नहीं थीं। स्वतत्रता से पहले और स्वतत्रता के बाद की शुरू की अवधि मे बैक शाखाओ का महानगरो और शहरी केन्द्रो तथा अपेक्षाकृत विकसित क्षेत्रो तक ही सीमित रहने का कारण रूढिवाद और बैकिग की सही सभावनाओ की समझ का अभाव था। भारतीय रिजर्व बैक 1935 मे बना, जो हिल्टन यग आयोग की सिफारिश के बाद इस प्रकार की सस्था की स्थापना के लिए बहुत-से प्रयासो का फल था। हिल्टन यग आयोग ने सिफारिश की थी कि मुद्रा और ऋण के नियत्रण के लिए कार्यों का द्विभागीकरण और उत्तर-दायित्व का विभाजन समाप्त होना चाहिए।[1] रिजर्व बैक ने चौथे दशक के अतिम वर्षों मे जो मुख्य कार्य हाथ मे लिये, उनमे से एक था उत्कृष्ट और पर्याप्त बैकिग एव ऋण विन्यास को आधुनिक ढग से निर्मित करना । इस प्रयोजन से बैंको के पर्यवेक्षण और नियन्त्रण हेतु बैकिग कम्पनीज अधिनियम 1949 (1965 मे जिसका नामान्तरण बैकिग विनियमन अधिनियम के रूप मे हुआ) के अन्तर्गत रिजर्व बैक ऑफ इडिया को व्यापक अधिकार सौंपे गये। इस अधिनियम के महत्वपूर्ण प्रावधान बैंको द्वारा न्यूनतम साविधिक चल निधि और न्यूनतम नकद प्रारक्षित निधि रखने, बैंकिग कपनियो के निरीक्षण और पर्यवेक्षण तथा अतिम लेखा प्रस्तुत करने से सबधित है। इस अधिनियम मे 1949 और 1965 के बीच किये गये मुख्य संशोधन समापन प्रक्रिया

---

1 भारतीय रिजर्ब बैंक बुलेटिन जनवरी 1989 पृष्ठ 18

भारतीय बैको के कार्यालय विदेशो मे खोलने तथा नीति सबधी मामलो के बारे मे बैंको के निर्देश जारी करने का अधिकार रिजर्व बैक को देने से सबधित है। जो गैर अनुसूचित वाणिज्य बैक न्यूनतम् पूॅजी अपेक्षाओ से सबधित मानदडो के अनुरूप खरे नहीं उतरे अथवा जो बैकिग करोबार को गैर बैकिग कारोबार से मिलाने पर निषेध का पालन नहीं कर सके, ऐसे बहुत से बैंको को रिजर्वबैक ने बद करवा दिया। अन्य अनेक बैंक मिला दिये गये। पुनर्गठन और समेकन की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप बैंको की कुल सख्या दिसबर 1947 की 640 से घटकर दिसबर 1957 मे 389 रह गयी।[2]

किसी देश के आर्थिक विकास के लिए पूॅजी की बहुत आवश्यकता होती है। बैंक छोटी-छोटी धनराशि एकत्रित करते है तथा बचत को बढावा देते है। इस एकत्रित धनराशि को उन क्षेत्रो मे विनियोजित करते है जहॉ उनकी आवश्यकता होती है। इस प्रकार बैक दूसरो का धन एकत्रित करके उसे उपभोग, व्यापार, उद्योग तथा सेवा को प्रदान करते है। इस प्रकार बैंक देश मे पूॅजी की आवश्यकताओ की बडी मात्रा मे पूर्ति करके देश के आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है।

कृषि वित्त की समस्या वाणिज्य और उद्योग के लिए वित्त की समस्या से भिन्न है। वाणिज्य और उद्योग अपेक्षाकृत सगठित व्यवसाय है और इनकी वित्त की मांग उत्पादक कार्यों के लिए ही होती है। यही कारण है कि इनकी वित्त की माग को पूरा करने के लिए बहुत पहले ही विभिन्न देशो मे बैंको और औद्योगिक वित्त की विशिष्ट सस्थाओ का विकास हुआ है। कृषि अपेक्षाकृत असंगठित व्यवसाय है। इसकी

---

2 भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन जनवरी 1989, पृष्ठ 18 -19

सफलता या असफलता बहुत कुछ मौसम पर निर्भर होती हैं। इसके अलावा किसानों द्वारा लिये जाने वाले ऋणो मे स्पष्ट रूप से उत्पादक और अनुत्पादक मे भेद कर पाना आसान नहीं होता । इसलिए बैंको ने खेती के लिए या उससे सम्बन्धित दूसरे कार्यों के लिए ऋण देने मे प्राय दिलचस्पी नहीं दिखाई और लम्बे अर्से तक किसान ऋण के लिए मुख्य रूप से साहूकार और महाजनों पर निर्भर रहे हैं।

आजादी के समय भारत की छवि एक ऐसे देश की थी जो धूल भरे, अलसाए, अधनगे, बीमार और बेराजगार लोगों के गावो का देश था। भारत की कल्पना करते समय ऐसे गरीब पिछडे और दबे हुए लोगो की छवि उभरती थी जो शताब्दियों पुरानी परम्पराओ और तरीकों से जीते थे, जिनके मन में अपना जीवन स्तर सुधारने की न उमग थी, न पर्याप्त साधन। उजडे खेत, सूखी नदिया, वर्षा के लिए आकाश की ओर निहारती ऑखे, अधनगे बच्चे और भूखी औरतें ही उस युग के भारतीय गॉवों की पहचान बन गये थे। स्वतत्रता के बाद भारत की मुख्य समस्या अपने करोडो निवासियो की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति और जीवन स्तर को ऊॅचा उठाना था। सन् 1957 में भारत के रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री आयगर ने कहा था कि "पिछले चालीस वर्ष की अवधि के दौरान गरीबी अपने उच्च शिखर पर बनी रही और लोग उन्हीं आदि-कालीन दशाओं में बने रहें जिनमें उनके पूर्वज रहते थे। यही तथ्य भारतीय उपमहाद्वीप के लाखों गावो के बारे में भी सत्य है, हालॉकि इस देश में हाल ही मे विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये है"। इस गरीबी और पिछड़ेपन की स्थिति को दूर करने के लिए योजनाबद्ध विकास के मार्ग को अपनाया गया है ताकि कृषि, उद्योग व यातायात आदि सभी क्षेत्रों में विकास हो सके। एक सुदृढ

बैकिग व्यवस्था ही देश के आर्थिक विकास के लिए उचित वातावरण बनाने मे तथा विकास की गति को तीव्र करने मे सक्रिय योगदान कर सकता है।

भारत के ग्रामों का देश होने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था मे ग्रामीण साख का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। सम्भवत इसी कारण से रिजर्व बैंक ने आरम्भ से ही कृषि साख को सगठित तथा कृषि के लिये ऋण की व्यवस्था करने के हेतु "कृषि-साख विभाग" (Agricultural credit Department) की स्थापना कर दी थी। इस विभाग को निम्न कार्य सौंपे गये थे।

1 कृषि साख की समस्याओं के अध्ययन के लिये विशेषज्ञ कर्मचारियों का दल रखना, जो आवश्यकता के समय केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार या सहकारी सस्थाओ को परामर्श दे सकें।

2 कृषि साख के सम्बन्ध में रिजर्व बैंक, राज्य सहकारी बैंक तथा अन्य बैंको की क्रियाओं मे समन्वय स्थापित करना ।

3 ग्रामीण वित्त, सहकारिता, ग्रामीण ऋण ग्रस्तता आदि से सम्बन्धित कानूनों का अध्ययन करना तथा उन पर अपना मत प्रकाशित करना ।

विधान द्वारा रिजर्व बैंक कृषकों को प्रत्यक्ष रूप से वित्त प्रदान नहीं कर सकता। कृषकों की वित्तीय सहायता सहकारी क्षेत्र के द्वारा प्रदान की जाती है ।

रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने सन् 1951 मे अखिल भारतीय ग्रामीण साख सर्वेक्षण हेतु एक गोरवाला समिति (A D Gorawala Committee) नियुक्त की थी। इस समिति ने अपनी रिपोर्ट सन् 1954 में प्रस्तुत की और सुझाव दिया कि देश में

ग्रामीण साख की उपयुक्त व्यवस्था करने के लिये सरकार के साझे मे स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना होनी चाहिए, जो देश के ग्रामीण क्षेत्रो मे अपनी शाखाओ का जाल बिछाकर देहातो मे बैकिग सुविधाओ का विकास करे और कृषि के लिए आवश्यक मात्रा मे सस्ती साख सुलभ करे ।

भारत सरकार ने गोरवाला समिति की सिफारिश को स्वीकार कर लिया, परन्तु सरकार ने कोई राष्ट्रीय बैंक स्थापित न करके तत्कालीन इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया को ही स्टेट बैंक मे परिणत कर दिया । सन् 1955 मे स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ऐक्ट स्वीकृत किया गया और इस ऐक्ट के अर्न्तगत इम्पीरियल बैंक की भारत स्थित समस्त सम्पत्ति और दायित्व स्टेट बैंक को 1 जुलाई, 1955 को सौंप दिये गये। इस प्रकार स्टेट बैंक 1 जुलाई सन् 1955 से भारतवर्ष मे कार्य कर रहा है।

काफी लम्बे समय तक व्यापारिक बैंको का ग्रामीण साख में हिस्सा बहुत कम था। उदाहरण के लिए, कुल ऋण में व्यापारिक बैंकों का हिस्सा 1950-51 में 0 9 प्रतिशत तथा 1961-62 मे 0 7 प्रतिशत था। इसके कई कारण थे- एक तो यह कि भारत में कृषि मुख्य रूप से जीवन निर्वाह का एक साधन मात्र रही है और दूसरे इसका स्वरूप असगठित व वैयक्तिक है। इसके अलावा, कृषि अधिकतर मानसून पर आधारित है इसलिए इसके उत्पादन मे अनियमितता है और उतार चढाव होते रहते हैं । इसके विपरीत, औद्योगिक क्षेत्र अधिक सगठित होता है और वह प्राकृतिक कारकों पर निर्भर नहीं करता । यही कारण है कि बैंको का ध्यान कृषि की अपेक्षा

उद्योगो पर अधिक केन्द्रित रहा । यहॉ तक कि बैंको ने ग्रामीण क्षेत्र से प्राप्त बचतो का प्रयोग भी औद्योगिक क्षेत्र को ऋण प्रदान करने के लिए किया ।

ग्रामीण साख की बढती हुई आवश्यकताओ और उसमे व्यापारिक बैंको की अत्यन्त सीमित भूमिका के कारण सरकार ने जुलाई 1969 मे 14 प्रमुख बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। 1980 मे छ और बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया। राष्ट्रीयकरण के बाद बैको ने ग्रामीण क्षेत्रो मे बहुत सी शाखाए खोली और ग्रामीण साख में अपने योगदान में काफी वृद्धि की। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीयकरण से ठीक पहले (अर्थात जून 1969 मे) भारत में व्यापारिक बैंको की कुल 8,262 शाखाए थीं जिनमे से केवल 1,832 (अर्थात 22 2 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रो में थीं। जून 1996 में कुल शाखाओं की सख्या 62,881 तक पहॅुच चुकी थी जिसमे से 34,893 शाखाए (अर्थात 55 4 प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रो मे थीं ।

कृषि क्षेत्र को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको से प्राप्त होने वाले ऋण मे भी तेज वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए, बैंकों से कृषि क्षेत्र को बकाया प्रत्यक्ष ऋण की मात्रा जून 1969 मे 40 करोड रूपये थी, जो कुल बैंक ऋण का मात्र 1 3 प्रतिशत था। मार्च 1995 मे यह राशि 20,562 करोड रूपये तक पहॅुच चुकी थी, जो कुल बैंक ऋण का 12 4 प्रतिशत था। प्राथमिकता वाले क्षेत्रो को ऋण देने के लिए बैंको के सामने कुछ लक्ष्य रखे गए हैं। उदाहरण के लिए, यह लक्ष्य रखा गया है कि अपने कुल ऋण का 40 प्रतिशत भाग बैंक घोषित प्राथमिकता वाले क्षेत्रों (यथा कृषि, लघु उद्योग, लघु व्यवसाय इत्यादि) को प्रदान करेगें । यह भी लक्ष्य रखा गया कि कृषि व सबद्ध क्षेत्रों

को कुल बैक ऋण का 17 प्रतिशत तथा कमजोर वर्गों को 10 प्रतिशत दिया जाएगा। मार्च 1995 के अन्त तक बैंको ने 36 8 प्रतिशत ऋण प्राथमिकता वाले क्षेत्रो को प्रदान किए थे।

इस विवेचन से यह बात स्पष्ट होती है कि ग्रामीण ऋण प्रदान करने मे बैंको ने राष्ट्रीयकरण के बाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे किसानों को कृषि आगत खरीदने के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त हुई है, नई कृषि युक्ति को बढते हुए पैमाने पर अपनाने का अवसर मिला है, तथा कृषि निवेश को बढाया जा सका है।

ग्रामीण क्षेत्रो मे व्यापारिक बैंको की बढती हुई भूमिका के बावजूद उनकी निम्नलिखित नीतिओ के आधार पर आलोचना की जाती है -

1 ग्रामीण शाखाओ मे कार्यरत बहुत से कर्मचारी बडी अनिच्छा से काम करते हैं तथा जल्द तबादले की कोशिश मे लगे रहते हैं।

2 बिना व्यावसायिक सम्भानाओं पर ध्यान दिए अधाधुध ग्रामीण शाखाए खोलते जाने से प्रशासनिक खर्च बढे तथा बैंको के लाभ कम हुए हैं।

3 व्यापारिक बैको ने भी अपनी ऋण सेवाओं का विस्तार अधिकतर उन्हीं क्षेत्रों मे किया है जिनमे पहले से ही सहकारी समितिया कार्यरत थीं। इस प्रकार भौगोलिक रिक्तता को पूरा कर सकने में व्यापारिक बैंक असफल रहे हैं।

4 बैंकों द्वारा दिये गए ऋणों का सकेन्द्रण भी कुछ राज्यों में है।

5. कई ग्रामीण शाखाए साख विकास के कार्यक्रमों को बनाने व उन्हें लागू करने में असफल रही हैं ।

6 बैंको के ऋण कार्यक्रमो से लाभ अधिकतर बडे व मध्यम किसानो को ही हुआ है। छोटे और सीमात किसान तथा खेतिहर मजदूर अपनी ऋण आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए आज भी महाजनो पर काफी निर्भर हैं।

7 ऋणो की वसूली की स्थिति अच्छी नहीं है। जहॉ एक ओर कृषि क्षेत्र को बैंकों द्वारा बढते हुए पैमाने पर वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है, वहॉ लगभग आधा धन वापिस नहीं लौटता। यह नि सन्देह एक चिन्ताजनक बात है। इससे कृषि को ऋण देने वाली सस्थाओं का अस्तित्व ही खतरे में आने की आशका है।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
(Regional Rural Bank)

20-सूत्री कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अश धीरे-धीरे ग्राम-ऋणग्रस्तता को समाप्त करना था और ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों एव कारीगरों को सस्थानात्मक उधार उपलब्ध कराना था। 1975-76 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इदिरा गाधी प्रत्येक 17000 की आबादी पर एक बैंकिग शाखा खोलने का निर्णय लिया, जो स्थानीय लोगों को साख एव ऋण सुविधा प्रदान कर सके और इस प्रकार लोगों की आय में वृद्धि हो सके एव आर्थिक स्तर ऊँचा हो सके। इस सन्दर्भ में उन्होनें जापान, फ्रास, तथा श्रीलका आदि देशों की तरह भारत वर्ष में भी सम्पूर्ण जनता को बैंकिग सुविधा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा ।

भारतीय ग्रामीण क्षेत्र का बहुत बडा भाग बैंकिग सस्थाओ से विहीन था। इस सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र मे व्यावसायिक बैंको ने अपनी शाखा खोलने मे असमर्थता प्रदर्शित की, क्योकि उनकी शाखा खोलने की लागत अधिक थी तथा कर्मचारी भी सुदूर क्षेत्रो मे काम करने के अभ्यस्त नहीं थे ।

सन् 1975 मे भारत मे आपात-स्थिति की घोषणा के बाद बीस-सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रमो की एक कडी के रूप मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की स्थापना का विचार सरकार के समक्ष आया और तत्कालीन सरकार ने कम लागत अवधारणा (Low cost structure) के आधार पर बैकिग शाखा खोलने का निर्णय किया, जिसमे यह परिकल्पना की गयी थी कि निश्चित क्षेत्रो मे खुलने वाली शाखाए केवल ऋण वितरण का कार्य करेगी ।

नये आर्थिक कार्यक्रम के इस पहलू को आगे बढाने के लिए ही भारत सरकार ने 26 सितम्बर 1975 को एक अध्यादेश द्वारा देश भर में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित करने की घोषणा की। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से छोटे तथा सीमान्त किसानो, कृषि-मजदूरो, कारीगरों तथा छोटे उद्यमकर्ताओ को उधार तथा अन्य सुविधाए उपलब्ध कराना है ताकि वे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि-व्यापार, वाणिज्य, उद्योग एव अन्य उत्पादक क्रियाओ को विकसित कर सकें ।

आरम्भ मे, 2 अक्टूबर 1975 को पॉच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किए गए। उत्तर प्रदेश मे मुरादाबाद और गोरखपुर, हरियाणा मे भिवानी, राजस्थान में जयपुर और पश्चिम बगाल मे माल्दा के स्थान पर ये बैंक क्रमश सिडीकेट बैंक, स्टेट बैंक

ऑफ इन्डिया, पजाब नेश्नल बैक, यूनाइटेड कामार्शियल बैंक और यूनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा चालू किए गए। प्रत्येक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की अधिकृत पूॅजी 1 करोड रूपए और जारी एव चुकता पूॅजी (I ssued and paid-up capital) 25 लाख रूपए थी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की हिस्सा पूॅजी मे केन्द्रीय सरकार द्वारा 50 प्रतिशत, राज्य सरकार द्वारा 15 प्रतिशत और चलाने वाले वाणिज्य बैंक द्वारा 35 प्रतिशत योगदान दिया जाता है। यद्यपि मूल रूप से क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अनुसूचित वाणिज्य बैक ही है, किन्तु वे कुछ पहलुओ मे इनसे भिन्न है -

(क) क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का कार्यक्षेत्र राज्य के एक या कुछ जिलो के निर्धारित इलाके तक सीमित कर दिया जाता है।

(ख) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक छोटे तथा सीमान्त किसानों (Marginal Farmers), देहाती कारीगरों, कृषि मजदूरो और अन्य थोडे सम्पत्ति वाले व्यक्तियों को उत्पादक उद्देश्यो के लिए ऋण तथा अग्रिम देते हैं।

(ग) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की उधार दरे किसी राज्य में सहकारी समितियों की उधार दरो की तुलनीय है।

मार्च 1996 तक देश मे 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा उनकी कुल 14497 शाखाएँ थी। आच्छादित जिलो की सख्या 427 थी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के ऋणों का 90 प्रतिशत कमजोर वर्गों को उपलब्ध कराया गया। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया इन बैंको को प्रोत्साहन देने के लिए कई प्रकार की सहायता एव रियायते देता है। जुलाई

1982 मे नाबार्ड की स्थापना के पश्चात क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को रिजर्व बैक से प्राप्त होने वाली पुनर्वित्त नाबार्ड से मिलने लगी।

आजादी के 50 वर्षों के पश्चात बैकिग सेवाओ का व्यापक रूप से विस्तार किया गया। वर्तमान मे सार्वजनिक तथा राष्ट्रीयकृत बैंक अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है, लेकिन ग्रामीण परिवेश मे शाखाए स्थापित करने मे ये बैंक आज भी अपनी मानसिकता मे परिवर्तन नहीं कर पाये हैं। फलत यह देखा गया कि ग्रामीण क्षेत्रो मे बैंकिग सुविधाओ के अभाव मे बहुत सी निष्क्रिय पूँजी गॉवों में पडी रहती है, तथा न तो उनका सग्रहण हो पाता है और न हीं अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाने मे समुचित उपयोग।

अत ग्रामीण बैंकों द्वारा निक्षेप एकत्रीकरण (Deposit Mobilıstıon By RRBs) की व्यापक सम्भावना है ।

परिकल्पना
(Hypothesis)

इस अध्ययन मे निम्नलिखित परिकल्पना का निरूपण किया गया है -

1 ग्रामीण बैंक की स्थापना से पूर्व भारत में विद्यमान ग्रामीण वित्त के स्रोत अपर्याप्त थे ।

2 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ऐसे क्षेत्रों मे स्थापित किये गये हैं जहॉ पहले से कोई बैंक नहीं थे। स्थापना के पश्चात शाखाओ, जमा तथा ऋण में ग्रामीण क्षेत्रों मे निरन्तर वृद्धि हुई है।

3 क्षेत्रीय ग्रामीण बैक ग्रामीण क्षेत्र के कृषको, कृषि श्रमिको और अन्य ग्रामीण समुदायो के सहायतार्थ ही स्थापित किये गये थे। वे ग्रामीण बचतो को गतिशील बनाने मे भी सहायक हुए तथा ग्रामीण क्षेत्रो मे सुषुप्तावस्था मे पडी निष्क्रिय पूँजी को एकत्रित करके उसी क्षेत्र के लोगों का विकास करना इन बैंको के माध्यम से सम्भव हुआ है।

4 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको द्वारा साहूकारो, सहकारी बैंको तथा अन्य व्यापारिक बैंको की कमियो को दूर किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र
(Scope of Study)

यद्यपि अध्ययन का क्षेत्र व्यापक है लेकिन सुविधा के दृष्टिकोण से इलाहाबाद जनपद (विभाजन से पूर्व) का चयन किया गया है। इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विभिन्न शाखाओ की जमाओ तथा अग्रिमों का तहसील एव विकास खण्ड स्तर पर अध्ययन किया गया, तथा उनका तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही साथ जनपद में स्थित सहकारी बैंकों तथा व्यवसायिक बैंकों के निक्षेपों तथा अग्रिमो का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इसके अतिरिक्त इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का प्रदेश मे अन्य ग्रामीण बैंक़ो तथा अखिल भारतीय स्तर पर समस्त ग्रामीण बैंको तथा अन्य व्यावसायिक बैंकों के समग्र जमा तथा अग्रिमो का तुलनात्मक विवरण भी प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन की विधि
(Method of Study)

इलाहाबाद जनपद के सामाजिक आर्थिक तथा सास्कृतिक अध्ययन के लिए मुख्यत प्राथमिक तथा द्वितीयक ऑकडे, अवलोकन, साक्षात्कार तथा पुस्तकालय पद्धति का प्रयोग किया गया है।

कार्य क्षेत्र
(Field Work)

शोध सम्बन्धी समको को इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, बैंकर्स ग्रामीण विकास सस्थान लखनऊ, जिला कार्यालय, इलाहाबाद, रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया शाखा कानपुर एव लखनऊ तथा नाबार्ड मे कार्यरत उपयुक्त अधिकारियों से साक्षात्कार करके प्राप्त किया गया है।

द्वितीयक समंको का संग्रहण

अध्ययन मुख्यतया द्वितीयक ऑकडों पर आधरित है। यह ऑकडे विभिन्न सस्थाओ से प्रकाशित बुलेटिनो यथा रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया, नाबार्ड, तथा विभिन्न क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के कार्यालयो से सकलित किया गया है।

सीमाएं
(Limitations)

वर्तमान अध्ययन मुख्यत द्वितीयक समकों पर आधारित है, अतएव गौण समक आधारित शोध की समस्त सीमाए इस शोध प्रबध में भी विद्यमान है। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देना होगा कि शोध का कार्य-काल साधारणतया जून 1997

तक ही सीमित है, जबकि इलाहाबाद से सम्बन्धित ऑकडे केवल मार्च 1997 तक ही के प्राप्त हुए है, जबकि मार्च 1998 मे देश मे नई सरकार के सत्तारूढ होने से अन्य क्षेत्रो की भॉति बैकिग के क्षेत्र मे भी परिवर्तन का आना स्वाभाविक है। वर्तमान अध्ययन बदलती हुयी परिस्थिति से पूर्व का है।

अध्याय : 2

भारत में बैंकिंग : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

"Credit supports the farmer as the Hangman's rope supports the hanged! But; even if credit is sometimes 'fatal', it is often indispensable to the cultivator."

French Proverb

भारत में बैंकिंग प्रणाली
(BANKING SYSTEM IN INDIA)

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात से ही यह अनुभव किया जाने लगा था कि देश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए आर्थिक नियोजन अत्यन्त आवश्यक है। इस बात को ध्यान मे रखकर 1951 मे प्रथम योजना प्रारम्भ की गयी इस समय तक देश मे विभिन्न योजनाएँ सम्पन्न हो चुकी है। किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए धन की आवश्यकता होती है। एक विकासशील राष्ट्र मे प्रति व्यक्ति आय का स्तर निम्न होने के कारण उनकी बचत कम होती है। जो भी बचत होती है उसका उपयोग भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाता। बचत को सही दिशा प्रदान करने के लिए देश की बैकिग प्रणाली की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बैंक छोटी-छोटी बचतो को एकत्रित कर उन क्षेत्रो मे विनियोजित करते है जहॉ उनकी आवश्यकता होती है। भारत के आर्थिक नियोजन मे बैंको के महत्व को ध्यान मे रखते हुए स्वतन्त्रता पाप्ति के पश्चात स बैको की सरचना मे आधारभूत परिवर्तन किये गये है। यद्यपि इस समय भी देश मे मुद्रा बाजार सगठित एव असगठित दोनो रूपो मे विद्यमान है, परन्तु पिछले दिनो मे देश के सगठित मुद्रा बाजार मे महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है।

1949 मे रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया का राष्ट्रीयकरण करके देश के केन्द्रीय बैक को पूर्णरूप से सरकारी बैक कर दिया गया। बैको के सन्तुलित विकास तथा उन पर अधिक प्रभावशाली नियन्त्रण करने के लिए बैंकिग कम्पनीज एक्ट 1949 पारित

किया गया। 1955 मे इम्पीरियल बैक का राष्ट्रीयकरण करके स्टेट बैक आफ इण्डिया की स्थापना की गयी। 1969 मे देश के 14 व्यावसायिक बैको का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। 1980 मे 6 अन्य बैको का राष्ट्रीयकरण किया गया।

औद्योगिक वित्त प्रदान करने के लिए देश मे कई विकास बैको की स्थापना हुई। 1948 मे भारतीय औद्योगिक वित्त निगम की स्थापना की गई। निजी क्षेत्र मे उपक्रमो के निर्माण, विकास एव आधुनिकीकरण के लिए 1955 मे औद्योगिक साख एव विनियोग निगम की स्थापना की गयी। देश के औद्योगीकरण के स्तर को उन्नत बनाने तथा औद्योगिक विकास से सम्बन्धित परियोजनाओ की स्थापना के लिये 1964 मे भारतीय औद्योगिक विकास बेक की स्थापना की गयी। देश मे औद्योगिक वित्त की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैक, राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम, जीवन बीमा निगम, सामान्य बीमा निगम एव भारतीय यूनिट ट्रस्ट की स्थापना हुई।

कृषि एव ग्रामीण ऋण प्रदान करने के लिये 1975 मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की स्थापना हुई। पिछडे क्षेत्रो तथा कमजोर वर्गो के लिये परियोजना निर्माण के लिये 1968 मे कृषि वित्त निगम की स्थापना की गयी। 1963 मे कृषि पुनर्वित्त एव विकास निगम स्थापित किया गया। समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए 1982 मे राष्ट्रीय कृषि एव ग्रामीण विकास बैक की स्थापना की गयी। देश की आयात निर्यात की वित्तीय आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए 1982 मे भारतीय निर्यात एव आयात बैक की स्थापना हुई। देश के नियोजित आर्थिक विकास के लिये वित्तीय ससाधनो की पूर्ति के उद्देश्य से ही स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात देश मे बैकिग

व्यवस्था मे बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये है। देश मे कार्यरत विभिन्न बैको मे कुछ प्रमुख बैक इस प्रकार है -

बैकों का वर्गीकरण :-
CLASSIFICATION OF BANKS

(1) भारतीय रिजर्व बैंक -

(2) व्यावसायिक बैंक -

(i) अनुसूचित व्यावसायिक बैक (ii) गैर-अनुसूचित व्यावसायिक बैंक, (iii) लाइसेन्सधारी व्यावसायिक बैक, (iv) गैर-लाइसेन्सधारी व्यावसायिक बैंक, (v) सार्वजनिक क्षेत्र के बैक, (vi) निजी क्षेत्र के बैक (vii) विदेशी बैक ।

(3) सहकारी बैंक -

राज्य सहकारी बैक, केन्द्रीय सहकारी बैक, प्राथमिक सहकारी बेक ।

(4) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक-

(5) राष्ट्रीय कृषि एव ग्रामीण विकास बैंक -

(6) विकास बैंक -

(i) भारत का औद्योगिक वित्त निगम, (ii) भारतीय औद्यौगिक विकास बैक, (iii) भारतीय औद्योगिक साख एव विनियोग निगम, (iv) भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैक (v) राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम, (vi) राज्यो के वित्तीय निगम, (vii) राज्य औद्योगिक विकास निगम (viii) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक।

(7) गैर-बैंकिग वित्तीय मध्यस्थ -

(i) भारतीय निर्यात-आयात बैक (ii) जीवन बीमा निगम, (iii) सामान्य बीमा निगम, (iv) भारतीय यूनिट ट्रस्ट।

(8) अन्य प्रकार के बैंक -

निक्षेप बैक, व्यापारी बैक, बचत बैक।

भारतीय रिजर्व बैंक :-
(Reserve Bank of India)

भारतीय रिजर्व बैक देश के केन्द्रीय बैक के रूप मे 1935 मे स्थापित किया गया था। 1 जनवरी 1949 मे इसका राष्ट्रीयकरण करके इस पर सरकार का पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर दिया गया था। रिजर्व बैंक देश के केन्द्रीय बैक के रूप मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। एम0 एच0 डी0 कोक ने केन्द्रीय बैक के कार्य बताते हुए स्पष्ट किया है कि एक केन्द्रीय बैक देश मे नोट निर्गमन, सरकार के बैकर, बैको के बैक, अन्तिम ऋण दाता, विदेशी मुद्राओ के नियन्त्रक, समाशोधन गृह तथा साख के नियन्त्रक के रूप मे कार्य करता है। किसी भी देश के केन्द्रीय बैक का प्राथमिक एव महत्वपूर्ण कार्य सरकार की आर्थिक नीति के परिप्रेक्ष्य मे मोद्रिक प्रणाली को इस प्रकार विनियमित करना है जिससे कि देश की अर्थव्यवस्था का चहुँमुखी विकास होकर देश मे आर्थिक स्थायित्व स्थापित हो सके। भारतीय रिजर्व बैंक को नोट निर्गमन का एकाधिकार प्राप्त है। रिजर्व बैक केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकार के बैकर के रूप मे कार्य करता है। केन्द्रीय और राज्य सरकारो को विभिन्न आर्थिक मामलो मे सलाह देता है। रिजर्व बैक देश मे साख को नियन्त्रित करता है। साख नियन्त्रण करने के लिए बैक दर खुले बाजार की क्रियाएँ, न्यूनतम नकद कोष, चयनात्मक साख नियन्त्रण तथा नैतिक दबाव आदि रीतियो का प्रयोग करता है।

2. व्यावसायिक बैंक :-
(Commercial Bank)

सामान्य रूप से जब बैक शब्द का प्रयोग किया जाता है तो उसका अभिप्राय व्यावसायिक बैक से ही होता है। ये बैक मुख्य रूप से व्यापार एव उद्योगो को उनकी अल्पकालीन आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए ऋण प्रदान करते है। ये बैक छोटी-छोटी बचतो को एकत्रित करके आवश्यकता वाले क्षेत्रो मे विनियोजित करते है। व्यावसायिक बैको को अनुसूचित बैक, गैर-अनुसूचित बैक, लाइसेन्सधारी बैक, गैर-लाइसेन्सधारी बैक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैक और निजी क्षेत्र के बैक तथा भारतीय बैक और विदेशी बैको के रूप मे बॉटा जा सकता है-

(1) अनुसूचित व्यावसायिक बैंक :-
(Scheduled Commercial Bank)

अनुसूचित बैक से तात्पर्य उस बैक से है जिसका नाम भारतीय रिजर्व बैक अधिनियम 1934 की द्वितीय अनुसूची मे सम्मिलित कर लिया गया हो। अधिनियम की द्वितीय अनुसूची मे सम्मिलित कर लिये जाने के कारण ही इन्हे अनुसूचित बैक कहा जाता है। अधिनियम की धारा 42 (6) के अनुसार किसी ऐसे बैक का नाम द्वितीय अनुसूची मे सम्मिलित कर लिया जायेगा जो भारत मे बैकिग व्यवसाय करता हो तथा निम्न शर्तो को पूरी करता हो।

(अ) उसकी प्रदत्त पूॅजी तथा रक्षित निधि 5 लाख रूपये से कम मूल्य की न हो।

(ब) रिजर्व बैक इस बात से सतुष्ट हो कि सम्बन्धित बैंक के कार्य-कलाप जमाकर्ताओ के हितो के विपरीत नहीं है।

(स) वह बैक एक राज्य सहकारी बैक अथवा भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 की धारा 3 के अनुसार पारिभाषित एक कम्पनी अथवा केन्द्रीय सरकार द्वारा इस आशय से अधिसूचित एक सस्था अथवा भारत के बाहर प्रचलित किसी सन्नियम के अन्तर्गत समामेलित कोई निगम अथवा कम्पनी हो।

(ii) गैर-अनुसूचित व्यावसायिक बैंक :-
(Non-Scheduled Commercial Banks)

गैर-अनुसूचित बैक वे बैक है जिनका नाम रिजर्व बैक अधिनियम 1934 की द्वितीय अनुसूची मे सम्मिलित नहीं किया जाता। ऐसे बैको के नाम द्वितीय अनुसूची मे इसलिये सम्मिलित नहीं किये जाते क्योकि ये भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम की धारा 42 (6) की अपेक्षाओ को पूरा नहीं करते। यद्यपि इन बैंको को वे समस्त सुविधाएॅ उपलब्ध नहीं होती जो कि अनुसूचित बैको को प्राप्त होती है।

परन्तु बैकिग नियमन अधिनियम 1949 के अनुसार ऐसे बैको को भी नकद कोष रखना आवश्यक है। बैकिग नियमन अधिनियम की धारा 18 के अनुसार प्रत्येक बैंकिग कम्पनी, जो कि एक अनुसूचित बैंक नहीं है, को एक नकद कोष रखना आवश्यक है।

(iii) लाइसेन्सधारी व्यावसायिक बैंक :-
(Licensed Commercial Bank)

वे बैंक जो बैंकिग नियमन अधिनियम की धारा 22 (1) के अनुसार लाइसेन्स प्राप्त करके बैंकिग कार्य करते हैं उन्हे लाइसेन्सधारी व्यावसायिक बैंक कहते हैं। लाइसेन्स स्वीकृत के पहले रिजर्व बैंक को स्वय को निम्नलिखित बातो से सन्तुष्ट करना पडता है-

(अ) कम्पनी अपने वर्तमान तथा भावी जमाकर्ताओ के दावो की माग किये जाने पर पूर्ण भुगतान करने की स्थिति मे होगी।

(ब) कम्पनी के व्यवसाय का सचालन इस प्रकार से नहीं किया जा रहा है अथवा इस प्रकार से किये जाने की सम्भावना नहीं है जो कि कम्पनी के जमाकर्ताओ के हितो के प्रतिकूल हो।

(स) कम्पनी के प्रस्तावित प्रबन्ध तन्त्र का सामान्य स्वरूप ऐसा नहीं होगा जो जनता अथवा जमाकर्ताओ के हितो के प्रतिकूल हो।

(द) कम्पनी की पूँजी सरचना तथा उपार्जन क्षमता पर्याप्त है।

(य) कम्पनी को लाइसेन्स प्रदान करना सामान्य हित मे होगा।

(र) रिजर्व बैक कोई अन्य शर्त लगा सकता है जो वह उचित समझता है।

(iv) गैर-लाइसेन्स धारी व्यावसायिक बैंक :
(Non-Licensed Comercial Banks)

वे बैक जो बैकिग नियमन अधिनियम की धारा 22 के अन्तर्गत लाइसेन्स प्राप्त नहीं करते अथवा जिन बैको को लाइसेन्स के लिए प्रार्थना करने पर रिजर्व बैक लाइसेन्स प्रदान नहीं करता गैर-लाइसेन्सधारी बैक कहलाते है।

(v) सार्वजनिक बैंक :
(Public Sector Bank)

सार्वजनिक बैको का देश की अर्थव्यवस्था मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। सार्वजनिक बैंको को दो भागो मे बॉटा जा सकता है, स्टेट बैंक एव उसके सहयोगी बैंक तथा 20 राष्ट्रीयकृत बैक। (वर्तमान मे राष्ट्रीयकृत बैको की सख्या 19 हैं क्योकि न्यू बैंक आफ इन्डिया का पजाब नेशनल बैक (P N B) मे विलय हो गया है।)

भारतीय स्टेट बैंक :-
(State Bank of India)

1921 मे तीन प्रसीडेन्सी बैको को मिलाकर इम्पीरियल बैक की स्थापना की गयी थी। नोट निर्गमन के कार्य को छोडकर इस बैक को केन्द्रीय बैंक के महत्वपूर्ण कार्य सौपे गये थे। 1955 मे इम्पीरियल बैक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया और उसका स्थान भारतीय स्टेट बैक ने ले लिया जिसने 1 जुलाई 1955 से कार्य प्रारम्भ कर दिया।

1959 मे स्टेट बैक ऑफ इण्डिया (सबसीडियरी बैक्स) एक्ट 1959 पारित करके भूतपूर्व रियासतो से सम्बन्धित बैंको का राष्ट्रीयकरण करके उन्हे भारतीय स्टेट बैंक का सहायक बैक बना दिया गया। ये बैक थे-

(1) स्टेट बैक ऑफ बीकानेर,

(2) स्टेट बैक ऑफ हैदराबाद,

(3) स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर,

(4) स्टेट बैक ऑफ जयपुर,

(5) स्टेट बैक आफ मैसूर,

(6) स्टेट बैक आफ पटियाला,

(7) स्टेट बैक आफ सौ राष्ट्र,

(8) स्टेट बैक ऑफ ट्रावनकोर

बाद मे कुछ परिवर्तन करके स्टेट बैक ऑफ बीकानेर तथा स्टेट बैक ऑफ जयपुर को मिलाकर स्टेट बैक आफ बीकानेर एण्ड ज़यपुर कर दिया गया। इस समय इनके सहायक बैको की सख्या 7 है।

राष्ट्रीयकृत बैंक :-
(Nationalised Bank)

सरकार ने बैक साख को कृषि और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रो की ओर मोडने की दृष्टि से निजी क्षेत्र के वाणिज्यिक बैको पर "सामाजिक नियन्त्रण व्यवस्थाओ" को लागू किया किन्तु सरकार ने यह महसूस किया कि वित्त एव साख को कृषि एव प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रो की ओर मोडना समय की महती आवश्यकता है, और इस परिप्रेक्ष्य मे बैकिग व्यवस्था का राष्ट्रीयकरण करके ही कृषि एव ग्रामीण अचलों को पर्याप्त मात्रा मे ऋण व साख की इच्छित मात्रा मे आपूर्ति सम्भव है, किसी अन्य रीति से नहीं।

छोटे एव कमजोर वर्ग के लोगो तक ऋण एव साख की व्यवस्था को सुलभ, समायानुकूल एव पर्याप्तता की दृष्टि से सरकार ने 19 जुलाई, 1969 को देश के 14 प्रमुख वाणिज्यिक बैंको का राष्ट्रीयकरण कर दिया। देश के सम्पूर्ण बैकिग इतिहास मे राष्ट्रीयकरण एक सर्वाधिक क्रान्तिकारी घटना रही। सरकार ने पुन 15 अप्रैल 1980 को छ. अन्य बडे अनुसूचित बैको का राष्ट्रीयकरण भी कर दिया और इस प्रकार अब २० वाणिज्यिक बैक देश की विकास-प्रक्रिया मे अपना योगदान सरकारी नीतियो के अनुरूप कर रहे है। (वर्तमान मे 19 राष्ट्रीयकृत बैक कार्य कर रहे है)

(vi) निजी क्षेत्र के बैंक :-
(Private Sector Banks)

निजी क्षेत्र के व्यावसायिक बैको मे दो प्रकार के बैक है -

भारत मे समामेलित बैक तथा विदेशी बैक। निजी क्षेत्र के भारतीय बैक दो भागो मे विभाजित किये जा सकते है - अनुसूचित बैक तथा गैर अनुसूचित बैंक, इन बेको को स्वतन्त्र रूप से अपनी पूँजी निर्गमित करने तथ अपना प्रबन्ध करने का अधिकार है। ये अशधारियो के बैंक है। इनका नियन्त्रण बैकिग नियमन अधिनियम की व्यवस्थाओ के अन्तर्गत है।

(vii) विदेशी बैंक .-
(Foreign Banks)

विदेशी बैक ऐसे बैक है जो विदेशो मे समामेलित हुए है तथा जिनका पजीकृत कार्यालय विदेशो मे स्थित है परन्तु भारत मे जिनकी शाखाये कार्यरत है । ये समस्त बैंक अनुसूचित बैक हैं। 1950 तक ये बैक विदेशी विनिमय बैंक कहलाते थे। ये बैंक सामान्य बैकिग सेवाएँ निष्पादित करते है।

3. सहकारी बैंक :-
(Cooperative Banks)

भारत मे सहकारी बैक भी बैकिग के आधारभूत कार्य सम्पन्न करते है, किन्तु वे वाणिज्यिक बैको से भिन्न प्रकार के होते हैं । वाणिज्यिक बैको का गठन संसद द्वारा पारित अधिनियम द्वारा किया गया है जबकि सहकारी बैंकों की स्थापना अलग-अलग राज्यों द्वारा बनाए गए सहकारी समितियो के अधिनियमो द्वारा की गई

है। भारत मे सहकारी बैको का गठन तीन स्तरो वाला (Three Set-up) है राज्य सहकारी बैक सम्बन्धित राज्य मे शीर्ष सस्था होती है। इसके बाद केन्दीय या जिला सहकारी बैक जिला स्तर पर कार्य करते है। तृतीय स्तर प्राथमिक ऋण समितियो का होता है जो कि ग्राम स्तर पर कार्य करती है।

उपर्युक्त त्रिस्तरीय सहकारी बैको के ढॉचे के अतिरिक्त 16 सितम्बर, 1985 से एक बहुराज्यीय सहकारी समिति अधिनियम (1984) के अन्तर्गत कुछ बहुराज्यीय सहकारी समितियो का गठन भी किया गया है, जो एक राज्य तक सीमित नहीं होती तथा एक से अधिक राज्यो मे सदस्यो की आवश्यकताऍ पूरी करती है। इस प्रकार की बहुराज्यीय सहकारी समितियॉ केन्द्र सरकार के क्षेत्राधिकार मे आती है।

4. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक :-
(Regional Rural Banks)

समाज के कमजोर वर्गो विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रो मे किसानो एव कारीगरो को सस्थागत उधार उपलब्ध कराने के लिए देश मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की स्थापना की गई। आरम्भ मे 2 अक्टूबर, 1975 को पॉच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किए गए- उत्तर प्रदेश मे मुरादाबाद और गोरखपुर, हरियाणा मे भिवानी, राजस्थान में जयपुर तथा पश्चिम बगाल मे माल्दा। बाद मे देश के अन्य भागो मे भी इन बैंको का विस्तार किया गया। बैंक की पूॅजी 50 15 35 के अनुपात मे केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार तथा प्रायोजक बैंक मे विभाजित होती है।

5. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक :-
(National Bank for Agriculture and Rural Development "NABARD")

इस देश मे कृषि तथा ग्रामीण विकास हेतु वित्त उपलब्ध कराने वाली शीर्षस्थ सस्था है। इसकी स्थापना 12 जुलाई, 1982 को की गई। नाबार्ड की वर्तमान शेयर पूॅजी 500 करोड रूपये की है जिसे 1996-97 मे 1000 करोड रूपये करने का प्रस्ताव था। नाबार्ड ग्रामीण ऋण ढॉचें मे एक शीर्षस्थ सस्था के रूप मे अनेक वित्तीय सस्थाओ को पुनर्वित्त सुविधाएॅ प्रदान करता है जो ग्रामीण क्षेत्रो मे उत्पादन गतिविधियो के विस्तृत क्षेत्रो को बढावा देने के लिए ऋण देती है। अपनी ऋण सम्बन्धी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए नाबार्ड भारत सरकार, विश्व बैक तथा अन्य एजेन्सियो से धनराशियॉ प्राप्त करता है।

6. विकास बैंक :-
(Development Bank)

विकास बैको की स्थापना देश मे मध्यम और दीर्घकालीन औद्योगिक वित्त की व्यवस्था के लिए की गयी थी। भारत मे विभिन्न विकास बैंक स्थापित किये गये हैं। जिनमे मुख्य निम्नलिखित हैं -

(i) भारत का औद्योगिक वित्त निगम -
(Industrial Finance Corporation of India)

1 जुलाई 1948 को देश मे औद्योगिक वित्त निगम की स्थापना की गई। निगम की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मध्यकालीन एव दीर्घकालीन ऋण प्रदान करना था। निगम केवल ऐसी लिमिटेड कम्पनियो अथवा सहकारी समितियो को ऋण प्रदान करता है जो भारत मे स्थापित हो तथा वस्तुओ का निर्माण अथवा विधियन (Processing), खनन (Mining), विद्युत शक्ति का सृजन अथवा वितरण, जहाजरानी एव जहाज निर्माण, होटल उद्योग एव वस्तुओ के सरक्षण (Preservation of goods) मे सलग्न उद्योगो से सम्बन्धित हो।

(ii) भारतीय औद्योगिक विकास बैंक :-
(Industrial Development Bank of India)

देश मे औद्योगिक विकास की वित्तीय आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए सरकार ने जुलाई, 1964 मे भारतीय औद्योगिक विकास बैक की स्थापना करने का निर्णय लिया। 1976 तक यह बैक रिजर्व बैक का एक अनुषगी बैक (Subsidiary Bank) था। 1976 मे इसे रिजर्व बैक से अलग कर दिया गया ओर इसका स्वामित्व भारत सरकार ने अपने हाथ मे ले लिया। इस बैक का मुख्य कार्य औद्योगिक उद्यमो को वित्तीय सहायता प्रदान करना तथा उद्योगो के विकास मे लगी सस्थाओ को बढावा देना तथा मझोली औद्योगिक इकाइयो को सीधे ही वित्तीय सहायता प्रदान करना है, जबकि छोटी व मझोली इकाइयो को बैको तथा राज्य स्तरीय वित्तीय सस्थाओ के माध्यम से भी वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

(iii) भारतीय औद्योगिक साख एवं विनियोग निगम.-
(Industrial and Investment Corporation of India)

औद्योगिक साख एव विनियोग निगम की स्थापना जनवरी 1955 मे की गयी थी। यह भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत एक लिमिटेड कम्पनी के रूप मे पजीकृत है। इसके मुख्य उद्देश्य निजी क्षेत्र मे उपक्रमो के निर्माण, विकास एव उनके आधुनिकीकरण के कार्य मे सहायता करना, ऐसे उपक्रमो मे पूॅजी विनियोग को प्रोत्साहित करना तथा औद्योगिक विनियोग के निजी स्वामित्व को प्रोत्साहित करना एव विनियोग बाजारो का विकास करना हे। यह दीर्घकालीन एव मध्यकालीन ऋण प्रदान करता है जो पन्द्रह वर्ष तक के हो सकते है।

(iv) भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण निगमः-
(Industrial Reconstruction Corporation of India)

रूग्ण इकाइयो के पुनर्निर्माण मे सहायता करने के लिए 1971 मे भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण निगम (Industrial Reconstruction Corporation of India) की स्थापना की गयी थी। मार्च 1984 मे इस निगम का पूरा उपक्रम भारतीय औद्योगिक पुनर्निर्माण बैक को हस्तान्तरित तथा उसमे निहित कर दिया गया। इस बैक के मुख्य उद्देश्य बन्द पडी अथवा निष्क्रिय अथवा रूग्ण औद्योगिक इकाइयो का पुनर्निर्माण कर उन्हे नवजीवन प्रदान करना है।

(v) राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगमः-
(National Industrial Development Corporation)

राष्ट्रीय ओद्योगिक विकास निगम की स्थापना अक्टूबर 1954 मे कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत एक सरकारी प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप मे की गयी थी।

इसकी स्थापना उद्योगो के सन्तुलित एव सगठित विकास मे सरकार की सहायता करने के लिए की गयी है।

(vi) राज्यों के वित्तीय निगमः-
(Financial Corporation)

राज्य वित्त निगम अधिनियम 1951 मे भारत सरकार द्वारा पारित किया गया। इस अधिनियम द्वारा राज्य सरकारो को अपने राज्यो के लिए पृथक वित्त निगम स्थापित करने का अधिकार प्राप्त हो गया। इस अधिनियम के अन्तर्गत सबसे पहले 1953 मे पजाब मे राज्य वित्त निगम की स्थापना की गयी। उसके बाद विभिन्न राज्यो के राज्य वित्त निगमो की स्थापना की गयी। राज्य वित्त निगमो की स्थापना का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राज्यो की लघु एव मध्यम आकार वाली औद्योगिक सस्थाओ को दीर्घकालीन ऋण प्रदान करना था।

(vii) राज्य औद्योगिक विकास निगम:-
(State Industrial Development Corporation)

राज्यो में सन्तुलित एव समन्वित औद्योगिक विकास के लिए राज्यो के पूर्ण स्वामित्व मे राज्य औद्योगिक विकास निगमो की स्थापना की गयी है। इन निगमो की स्थापना अधिकतर राज्यो मे भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत की गयी है परन्तु कुछ राज्यो मे इनकी स्थापना विशेष अधिनियम के अन्तर्गत भी हुई है। इन निगमो की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य राज्यो मे उद्योगो का प्रवर्तन, प्रवर्तन तथा विकास करना है।

7. गैर बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थ:-
(Non-Banking Financial Intermediatries)

(i) भारतीय निर्यात-आयात बैंक-
(Export-Import Bank of India)

भारतीय निर्यात-आयात बैक की स्थापना 1 जनवरी 1982 को हुई। यह एक वैधानिक निगम है तथा इस पर केन्द्रीय सरकार का पूर्ण नियन्त्रण है। इस बैक को निर्यात आयात के क्षेत्र मे विकास बैक के रूप मे स्थापित किया गया हे। इस बैक का मुख्य उद्देश्य वित्त की व्यवस्था तथा देश के अन्तराष्ट्रीय व्यापार को बढावा देने के लिए माल और सेवाओ के निर्यात एव आयात को सुविधाजनक बनाना है।

(ii) जीवन बीमा निगम-
(Life Insurance Corporation)

1956 मे भारत मे जीवन बीमा व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। जीवन बीमा व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण करके जीवन बीमा व्यवसाय चलाने के लिए सितम्बर 1956 मे जीवन बीमा निगम की स्थापना की गयी। यद्यपि जीवन बीमा निगम का मुख्य कार्य पालिसीधारियों के जीवन पर बीमा करना है परन्तु इस माध्यम से यह छोटी-छोटी बचतो को एकत्रित करती है तथा उनका विनियोग करती है। इस समय जीवन बीमा निगम एक महत्वपूर्ण विनियोक्ता के रूप मे कार्य कर रहा है। इसने देश के पूँजी बाजार को एक बडी सीमा तक प्रभावित किया है।

(iii) सामान्य बीमा निगम -
(General Insurance Corporatıon)

सामान्य बीमा निगम की स्थापना दिसम्बर 1972 मे एक सरकारी कम्पनी के रूप मे की गयी थी। निगम की अधिकृत पूॅजी 75 करोड रूपये है जो सौ-सौ रूपये के 75 लाख समता अशो मे विभक्त है। सामान्य बीमा निगम एक सूत्रधारी कम्पनी हे जिसकी चार सहायक कम्पनियॉ हे। सामान्य बीमे का समस्त कार्य ये चारो कम्पनियॉ करती है।

(iv) भारतीय यूनिट ट्रस्ट -
(Unıt Trust of India)

भारतीय यूनिट ट्रस्ट की स्थापना जुलाई 1964 मे हुई। इसका मुख्य उद्देश्य छोटी-छोटी बचतो को विकास कार्यो के लिए गतिशील बनाना तथा देश म पूॅजी निर्माण को अधिक तेज करना था। यूनिट ट्रस्ट समाज के विभिन्न वर्गों की बचत का विभिन्न प्रकार की प्रतिभूतियो मे विनियोजित करती है। ट्रस्ट का मूलभूत उद्देश्य यह है कि छोटी या बडी बचत लगाने वाले सभी लोग उस विकासशील सम्पन्नता मे हिस्सा बटा सके जो देश की औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ बढती जा रही है।

8. बैंकिंग के कुछ अन्य प्रकार :-
(Some other types of Bankings)

निक्षेप बैंकिग -
(Deposit Banking)

निक्षेप बैकिग, बैकिग की वह प्रणाली है जिसमे जनता से निक्षेप प्राप्त किये जाते है तथा उनका प्रयोग ऋण देने तथा विनियोग करने मे किया जाता है।

व्यापारी बैंकिंग -
(Merchant Banking)

व्यापारी बैकिग मे उद्यमियो को परामर्श प्रदान किया जाता है। ये बेक अपने ग्राहको को नयी औद्योगिक सस्थाओ को स्थापित करने मे सहायता प्रदान करते है। नई कम्पनियो की पूँजी निर्गमित करने, उनकी वित्त याजना बनाने, पूजी के पुनर्गठन मे सहायता प्रदान करने मे लिए गये ऋणो के लिए प्रतिभूत देने आदि का कार्य सम्पन्न करत है।

बचत बैंक -
(Saving Bank)

बचत बैको से तात्पर्य ऐसे बैको से है जो जनता की छोटी-छोटी बचत एकत्रित करते है तथा उसे राष्ट्र के उत्पादक कार्यो म विनियोजित करते ह। भारतवर्ष मे डाकघर बचत बैक (Post Office Saving Banks) इस कार्य का सम्पन्न करत है।

वाणिज्य बैंकों की प्रगति

तालिका 2 1 — अनुसूचित एवं गैर-अनुसूचित व्यावसायिक बैंकों की, बैंक/शाखावार प्रगति का विवरण

(राष्ट्रीयकरण के पूर्व की स्थिति)

वर्ष	अनुसूचित बैंक		गैर-अनुसूचित बैंक	
	बैको की सख्या	शाखाआ की सख्या	बका की सख्या	शाखाओ की सख्या
1949	94	2852	526	1589
1956	89	2953	333	1240
1961	82	4388	209	725
1967	74	6620	24	216
1969	73	8045	16	217

Source AnsariMohd Salman — "*Working of the Regional Rural Banks in Eastern Uttar Pradesh*" *Page - 21*

तालिका 2-1 से यह स्पष्ट है कि आजादी के पश्चात देश मे बेको की सख्या बहुत कम थी तथा 1969 (राष्ट्रीयकरण) से पूर्व इस स्थिति मे कोई विशेष सुधार नही हुआ। वर्ष 1949 मे कुल अनुसूचित बैको की सख्या 94 थी जो 1969 मे 73 हो गयी। बैको मे कमी का अभिप्राय यह रहा कि जो अलाभकारी बैक थे उनको बन्द कर दिया गया या तो दूसरे मे विलय कर दिया गया। वर्ष 1949 मे इन बैको की शाखाओ की सख्या 2852 थी जो कि 1969 मे बढकर 8045 हो गयी। इस प्रकार शाखाओ की सख्या मे 182 08 प्रतिशत की वृद्धि हुई। गैर अनुसूचित बैंकों की सख्या 1949 मे 526 थी जो 1969 मे घटकर 16 हो गयी। इसी प्रकार शाखाओ की सख्या मे कमी आयी है।

तालिका 2 2 — व्यावसायिक बैंकों की जमा-ऋण प्रगति का विवरण (राष्ट्रीयकरण के पूर्व की स्थिति)

(Rs. in Crores)

क्र० सख्या	वर्ष	सकल जमा	सकल ऋण	सकल ऋण-जमा अनुपात(प्रतिशत)
1	1949	844	482	57 12
2	1961	1873	1335	71 28
3	1967	3741	2646	70 73
4	1969	4674	3615	77 34

Souice AnsariMohd Salman — "*working of the Regional Rural Banks in Eastern Uttai Pradesh" Page - 21*

तालिका 2-2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता हे कि आजादी के पश्चात तथा राष्ट्रीयकरण से पूर्व बैको की जमाओ तथा ऋणो मे निरन्तर प्रगति हुई है। वर्ष 1949 मे कुल जमा धनराशि 844 करोड थी जो 1969 मे बढकर 4674 करोड रूपये हो गयी। इस प्रकार जमाओ मे 453 91 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वर्ष 1949 मे सकल ऋण की राशि 482 करोड रू० थी जो 1969 मे 3615 करोड हो गयी। इस प्रकार ऋणो मे 650 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ऋण-जमा अनुपात की स्थिति भी सतोषजनक रही। ऋण-जमा अनुपात 1949 मे 57 12 प्रतिशत था जो बाद के वर्षो मे क्रमश 71 28, 70 73 एव 77 34 प्रतिशत रहा। ऋण-जमा अनुपात से यह पिदित होता है कि बैको मे अर्थव्यवस्था के विकास मे महत्वपूर्ण वित्तीय योगदान प्रदान किया हे।

तालिका 2 3 — वाणिज्य बैंकों की शाखाओं की प्रगति का क्रमवार विवरण

क्र० स०	वर्ष (जून के अन्त में)	भारत (शाखाओ की सख्या)	उत्तर प्रदेश (शाखाओं की सख्या)	भारत प्रति बैंक औसत जनसख्या (हजार में)	उत्तर प्रदेश प्रति बैंक औसत जनसख्या (हजार में)	उत्तर प्रदेश का अखिल भारत से प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1	जून 1969	8262	747	65	119	9 04
2	1989	57698	8066	12	14	13 97
3	1990	59388	8355	12	13	14 06
4	1991	60190	8444	12	13	14 02
5	1992	60649	8512	11	13	14 03
6	1993	61248	8578	11	13	14 01
7	1994	61742	8607	14	16	13 94
8	1995	62346	8646	14	16	13 87
9	1996	63084	8680	15	18	13 76
10	1997	63724	8765	15	18	13 75

स्रोत- 1 भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन 2 रिपोर्ट आन करेन्सी एण्ड फाइनेन्स

नोट- *1969 की औसत जनसख्या 1961 की जनगणना पर आधारित है। 1989 से 1993 तक 1981 की जनगणना के अनुसार तथा इसके पश्चात 1991 की जनसख्या पर आधारित है।*

तालिका 2 3 से परिलक्षित होता है कि वाणिज्य बैको की शाखाओ मे निरन्तर प्रगति हुई है। जून 1969 मे शाखाओ की सख्या 8263 थीं जबकि 20 वर्ष पश्चात 1989 मे 57698 हो गयी, इस प्रकार 598 35 प्रतिशत की अभूतपूर्व वृद्धि हुई । जून 1997 के अन्त मे भारत मे कुल शाखाओ की सख्या 63724 हो गयी। इस प्रकार 1989 की तुलना मे 1997 मे 10 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश मे भी 1989 की अपेक्षा 1997 मे 8 67 प्रतिशत की वृद्धि हुई। अखिल भारतीय स्तर पर प्रति बैक औसत जनसख्या जून 1969 मे 65 हजार थी जबकि बाद के वर्षों मे कम हो गयी और जून 1997 के अन्त मे 15 हजार हो गयी है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश मे भी जून 1969 के अन्त मे प्रति बैक औसत जनसख्या 119 हजार थी तथा बाद के वर्षो मे कम हो गयी है। उत्तर प्रदेश का अखिल भारत से प्रतिशत जून 1969 मे 9 04 था जबकि बाद के वर्षो मे यह 14 प्रतिशत के लगभग रहा।

तालिका-2-4 — भारत में वाणिज्य बैंकों के कार्यालयों का बैंक समूहवार/जनसंख्या समूहवार वितरण

बैंक समूह	निम्नलिखित दिनाक को कार्यालयों की सख्या														
	जुलाई 19, 1969*					मार्च 31, 1995 @					मार्च 31, 1996 @@				
	ग्रामीण	अर्ध-शहरी	शहरी	महा-नगरीय	जोड	ग्रामीण	अर्ध-शहरी	शहरी	महा नगरीय	जोड	ग्रामीण	अर्ध-शहरी	शहरी	महा नगरीय	जोड
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
भारतीय स्टेट बैंक	462 (29 4)	796 (50 7)	163 (10 6)	150 (9 5)	1 571 (100 0)	4 467 (51 1)	2200 (25 1)	1245 (14 2)	836 (9 6)	8748 (100 0)	4136 (46 8)	2394 (27 1)	1362 (15 4)	938 (10 6)	8830 (100 0)
भारतीय स्टेट बैंक के सहयोगी बैंक	358 (40 0)	375 (42 0)	36 (9 6)	75 (8 4)	844 (100 0)	1531 (38 5)	1295 (32 5)	699 (17 5)	457 (11 5)	3982 (100 0)	1375 (33 8)	1411 (34 6)	693 (17 0)	594 (14 6)	4073 (100 0)
राष्ट्रीयकृत बैंक	703 (16 9)	1 465 (35 1)	928 (22 3)	1 072 (25 7)	4 168 (100 0)	14 712 (48 0)	6054 (19 8)	5478 (17 9)	4389 (14 3)	30633 (100 0)	13951 (44 9)	6362 (20 5)	5718 (18 4)	5024 (16 2)	31055 (100 0)
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक					-	13 089 (90 2)	1242 (8 5)	184 (1 3)	4 ( )	14519 (100 0)	12486 (1738)	1738 (12 0)	287 (2 0)	5 (0 0)	14516 (100 0)
अन्य वाणिज्य बैंक	337 (20 0)	708 (41 9)	279 (16 5)	364 (21 6)	1688 (100 0)	1272 (30 2)	1376 (32 6)	851 (20 0)	719 (17 9)	4218 (100)	1144 (26 1)	1494 (34 1)	965 (22 1)	772 (17 6)	4375 (100)
जोड़	**1860 (22.5)**	**3344 (40.2)**	**1456 (17.5)**	**1661 (20 0)**	**8321 (100)**	**35071 (56.5)**	**12167 (19 6)**	**8457 (13 6)**	**6405 (10.3)**	**62100 (100)**	**33092 (57 7)**	**13399 (21.3)**	**9025 (14 4)**	**7333 (11 7)**	**62849 (100)**

* वर्गीकरण 1961 की जनगणना पर आधारित है। @ जनसख्या समूह के अनुसार शाखाओं का वर्गीकरण 1981 की जनगणना पर आधारित है।

@ @ वर्गीकरण 1991 की जनगणना पर आधारित है।

नोट- **कोष्ठकों में दिये गये आकडे प्रत्येक समूह में कुल का प्रतिशत दर्शाते है।**

Source Report on Currency & Finance, 1995 - 96 Volume - II

तालिका 2 4 — से यह स्पष्ट है कि जुलाई 1969 के दौरान वाणिज्य बैको की सर्वाधिक शाखाए अर्धशहरी क्षेत्रो मे विद्यमान थीं जबकि राष्ट्रीयकरण के पश्चात 1995 तथा 1996 के दौरान इनकी सर्वाधिक सख्या ग्रामीण क्षेत्रो मे थीं। जुलाई 1969 मे ग्रामीण क्षेत्रो मे कुल सख्या की मात्र 22 5 प्रतिशत शाखाए थीं जबकि 1995 मे 56 5 प्रतिशत और 1996 मे 57 7 प्रतिशत हो गयी। इससे यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे श`खाओ का तेजी से विस्तार हुआ है और राष्ट्रीयकरण के मुख्य उद्देश्यो की पूर्ति हुई है। जुलाई 1969 मे कुल वाणिज्य बैको के कार्यालयो की सख्या 8321 थी और 1996 मे बढकर यह 62849 हो गयी। इस प्रकार शाखा विस्तार व्यापक स्तर पर हुआ है।

तालिका-2.5— उत्तर प्रदेश मे सभी अनु० वाणिज्यिक बैंकों की जमा-ऋण प्रगति का विवरण

(धनराशि करोड रू० में)

क्रमाक	वर्ष	जमा	ऋण	ऋण-जमा अनुपात (प्रतिशत में)
1	2	3	4	5
1-	जून 1987	11146 69	5028 84	45 12
2	जून 1989	15140 89	6992 29	46 18
3	जून 1990	17919 49	8539 75	47 66
4	मार्च 1991	20395 83	9346 96	45 82
5	मार्च 1992	22539 38	10056 21	44 61
6	मार्च 1993	25431 28	10773 00	42 36
7	मार्च 1994	29619 47	11033 07	37 25
8	मार्च 1995	35217 05	12331 93	35 02
9	मार्च 1996	41450 81	14194 91	34 24
10	जून 1997	49240 43	15114 28	30 69

स्रोत- 1 बैकिग स्टैटिस्टिक्स 2 भारतीय रिर्जव बैक बुलेटिन 3 रिपोर्ट आन करेन्सी एण्ड फाइनेन्स

तालिका 2 5— से स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश मे सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंको की जमा तथा ऋण मे निरन्तर प्रगति हुई है। जून 1987 मे कुल जमाधन राशि 11146 69 करोड रूपये थी जबकि जून 1997 मे यह बढकर 49240 43 करोड रूपये हो गयी। इस प्रकार जून 1987 तथा जून 1997 के समयान्तराल मे 341 74 प्रतिशत की वृद्धि हुई है तथा जून 1987 की तुलना मे जून 1997 मे ऋणो मे 200 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ऋण-जमा अनुपात 50 प्रतिशत से भी कम रहा है इससे यह स्पष्ट होता है कि बैकों द्वारा जमाओ की तुलना मे ऋण कम वितरित किया गया है।

तालिका- 2.6— भारत मे सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंको की जमा-ऋण प्रगति का क्रमवार विवरण (मार्च की अंतिम शुक्रवार की स्थिति के अनुसार)

(धनराशि करोड रू में)

क्रमाक	वर्ष	सकल जमा	सकल ऋण	ऋण-जमा अनुपात (प्रतिशत)
1	2	3	4	5
1	1971	5906	4684	79 3
2	1976	14155	10877	76 8
3	1981	37988	25371	66 8
4	1986	85404	56067	65 7
5	1988	118045	70536	59 8
6	1989	140150	84719	60 5
7	1990	166959	101453	60 8
8	1991	192542	116301	60 4
9	1992	237565	131520	55 4
10	1993	268572	151982	56 6
11	1994	315132	164418	52 2
12	1995	386859	211560	54 7
13	1996	433819	254015	58 6
14	1997	505599	278401	55 1

Source —1 Report on Currency and Finance (1989-90), 1994-95, 1995-96) Volume II

2 Reserve Bank of India Bulletin-Nov 1997

3 Banking Statistics 1994-95

तालिका 2 6— से परिलक्षित होता है कि भारत मे सभी अनुसूचित वाणिज्य बैको की जमाओ तथा ऋणो मे निरन्तर प्रगति हुई है। 1997 मे सकल जमा 505599 करोड रूपये था जो कि 1996 की अपेक्षा 16 55 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। 1997 मे सकल ऋण की राशि 278401 करोड रूपये था और यह 1996 की अपेक्षा 9 60 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। ऋण-जमा अनुपात प्रत्येक वर्ष सन्तोषजनक स्थिति को दर्शाता है जो कि 50 प्रतिशत से सदैव ऊपर रहा है। 1971 मे सर्वाधिक ऋण-जमा अनुपात 79 3 प्रतिशत था जबकि न्यूनतम 1994 मे 52 2 प्रतिशत था।

तालिका- 2 7—— सभी अनुसूचित-वाणिज्यिक बैंकों की क्षेत्र/राज्य वार प्रगति का विवरण

(धनराशि करोड रू० में)

	मार्च 1991 की अन्तिम शुक्रवार की स्थिति				मार्च 1996 की अन्तिम शुक्रवार की स्थिति			
क्षेत्र/राज्य	कार्यालयों की सख्या	जमा धनराशि	ऋण	ऋण- जमा अनुपात तालिका (प्रतिशत)	कार्यालयों की सख्या	जमा धनराशि	ऋण	ऋण-जमा अनुपात (प्रतिशत)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1 उत्तरी क्षेत्र	9161	4279835	2723098	63 6	9738	9442087	5741596	60 8
2 उत्तर -पूर्वी क्षेत्र	1830	340258	155237	45 6	1893	688153	237461	34 5
3 पूर्वी- क्षेत्र	11129	3112147	1612601	51 8	11451	5541362	2643984	41 7
4 मध्य क्षेत्र	12735	2813297	1453988	51 7	13091	5710194	2312919	40 5
(1) उत्तर प्रदेश	8405	2039583	934696	45 8	8670	4145081	1419491	34 2
5 पश्चिमी क्षेत्र	9206	5242402	3741657	71 4	9660	11779354	8180528	69 4
6 दक्षिणी क्षेत्र	16052	4215630	3564436	84 6	17016	9446187	7236834	76 6
7 अखिल भारत	60113	20003569	13251018	66 3	62849	42607337	26353322	61 9

Note- *Data are inclusive of those relating to RRBs*

Source- *Banking Statistics-Quarterly Handants, Reserve Bank of India*

तालिका 2 7 से परिलक्षित होता है कि मार्च 1991 मे बैको की कार्यालयो की सख्या सर्वाधिक 16052 दक्षिणी क्षेत्र मे स्थित थी जबकि न्यूनतम 1830 उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे थी जिसकी सख्या उत्तर प्रदेश से भी कम है। 1996 मे भी सर्वाधिक शाखाएँ दक्षिणी क्षेत्र मे थी। 1991 की तुलना मे 1996 मे शाखाओ की सख्या मे 4 55 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ऋण-जमा अनुपात 1991 मे 84 6 प्रतिशत था तथा 1996 मे घटकर यह 76 6 प्रतिशत हो गया, इसका कारण यह है कि बैको ने विगत वर्ष की अपेक्षा ऋण का कम वितरण किया। तालिका से स्पष्ट है कि जमा, ऋण तथा कार्यालय तीनो मे प्रगति हुई है।

तालिक 2.8— सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की क्षेत्र/राज्यवार प्रति कार्यालय बैंक जमा तथा ऋण का विवरण (मार्च की अन्तिम शुक्रवार की स्थिति के अनुसार)

(राशि करोड रू में)

क्रमाक	क्षेत्र/राज्य	बैंक जमा		बैंक ऋण	
		1991	1996	1991	1996
1	2	3	4	5	6
1	उत्तरी क्षेत्र	4 67	9 69	2 97	5 89
2	उत्तर-पूर्वी क्षेत्र	1 86	3 64	0 85	1.25
3	पूर्वी क्षेत्र	2 79	4 84	1 45	2 31
4	मध्य क्षेत्र	2 21	4 36	1 14	1 77
	(1) उत्तर प्रदेश	2 43	4 78	1 12	1 64
५	पश्चिमी- क्षेत्र	5 69	12 19	4 06	8 47
6	दक्षिणी-क्षेत्र	2 62	5 55	2 22	4 25
7	अखिल भारत	3 33	6 78	2 21	4 20

Sou ce- *Computed from Quarter ely Handouts, Banking Statistics Reserve Bank of India*

तालिका 2 8— से स्पष्ट है कि प्रत्येक क्षेत्र मे प्रति कार्यालय बैक जमा तथा ऋण मे वृद्धि हुई है। वर्ष 1991 मे सर्वाधिक प्रति कार्यालय जमा 5 67 करोड रूपये पश्चिमी क्षेत्र का था इसके पश्चात उत्तरी-क्षेत्र का 4 67 करोड रूपये था। 1991 की तुलना मे 1996 मे प्रतिकार्यालय जमा तथा ऋण मे वृद्धि हुई है। सर्वाधिक जमा तथा ऋण पश्चिमी क्षेत्र का था।

तालिक 2.9— अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ग्रामीण क्षेत्रो में कार्यालयो की सख्या, जमा तथा ऋण का क्रमवार विवरण (मार्च की अन्तिम शुक्रवार की स्थिति के अनुसार)

(प्रतिशत)

क्षेत्र/राज्य	कुल ग्रामीण शाखा		कुल ग्रामीण जमा		कुल ग्रामीण ऋण	
	1991	1996	1991	1996	1991	1996
1	2	3	4	5	6	7
1 उत्तरी क्षेत्र	57 1	51 6	16 1	14 6	11 6	9 5
2 उत्तर-पूर्वी क्षेत्र	73 8	69 7	25 5	26 8	31 6	35 7
3 पूर्वी क्षेत्र	69 1	65 2	18 1	21 0	18 8	17 9
4 मध्य क्षेत्र	69 2	62 9	25 8	25 2	26 0	22 7
(1) उत्तर प्रदेश	68 3	63 1	27 5	27 3	28 3	26 1
5 पश्चिमी- क्षेत्र	47 8	42 4	7 9	7 0	7 0	4 8
6 दक्षिणी-क्षेत्र	47 2	40 9	13 9	11 9	15 0	12 3
7 अखिल भारत	58 3	52 7	15 3	14 4	13 9	11 1

Source · Computed from the data taken from BSR-Quarterly Handouts, Reserve Bank of India

नोट - उत्तर प्रदेश मध्य क्षेत्र मे शामिल है।

तालिका 2 9— से स्पष्ट है कि कुल ग्रामीण शाखा सर्वाधिक 1991 मे 73 8 प्रतिशत तथा 1996 मे 69 7 प्रतिशत उत्तर-पूर्वी क्षेत्र मे था, तथा न्यूनतम 47 2 और 40 9 प्रतिशत दक्षिणी क्षेत्र मे था। अखिल भारतीय स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रो मे 58 3 प्रतिशत शाखाएँ 1991 मे विद्यमान थी जबकि 1996 मे घटकर 52 7 प्रतिशत हो गयी। ग्रामीण जमा तथा ऋण का प्रतिशत भी अत्यन्त निम्न स्तर का रहा।

तुलनात्मक अध्ययन :

तालिक 2 10— इलाहाबाद जनपद मे क्षे० ग्रा० बैंक तथा सभी अनु० वाणिज्यिक बैंकों का तुलनात्मक विवरण

(धनराशि करोड रू० में)

क्र०	विवरण	मार्च 1992	मार्च 1993	मार्च 1994	मार्च 1995	जून 1997
1	2	3	4	5	6	7
1-	जमा धनराशि (अनु० वाणि० बैंक)	1029 90	1147 73 (11 44)	1294 42 (12 78)	1496 95 (15 64)	2040 50 (36 31)
2-	जमा धनराशि (क्षे० ग्रा० बैंक)	46 94	57 03 (21 49)	71 58 (25 51)	89 81 (25 46)	127 17 (41 59)
3-	सकल ऋण (अनु० वाणि० बैंक)	353 41	372 95	406 04	434 89	528 04
4-	सकल ऋण (क्षे० ग्रा० बैंक)	32 43	36 87	42 02	50 62	55 87
5-	ऋण-जमा अनुपात (अनु० वाणि० बैंक) (प्रतिशत)	34 31	32 49	31 37	29 01	25 87
6-	ऋण-जमा अनुपात (क्षे० ग्रा० बैंक) (प्रतिशत)	69 08	64 65	58 70	56 36	43 93

स्रोत - 1 रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया बुलेटिन 2 नाबार्ड

नोट - कोष्ठकों मे दी गई राशि विगत वर्ष की तुलना मे प्रतिशत वृद्धि है।

तालिका 2 10 से परिलक्षित होता है कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैको तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की जमा-धनराशि मे निरन्तर वृद्धि हुई है। दोनो की जमाओ मे प्रतिशत वृद्धि लगातार बढती गयी है। लेकिन क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की जमा-सग्रहण की वृद्धि वाणिज्य बैको की अपेक्षा अधिक है। 1993 मे वाणिज्य बैको की 1992 की तुलना मे प्रतिशत वृद्धि 11 44 है और क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की प्रतिशत वृद्धि 21 49 है। इसी प्रकार जून 1997 मे मार्च 1995 की तुलना मे वृद्धि क्रमश 36 31 तथा 41 59 प्रतिशत है। जून 1997 मे भी क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की प्रतिशत वृद्धि वाणिज्य बैंको की तुलना मे अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इलाहाबाद मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की निक्षेप प्रतिशत वृद्धि वाणिज्य बैको की अपेक्षा अधिक रहा। ऋण-जमा अनुपात भी क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का अधिक इससे यह स्पष्ट होता है कि क्षे0ग्रा0 बैक द्वारा वाणिज्य बैको की अपेक्षा अधिक ऋण वितरित किया गया है।

इलाहाबाद जनपद में क्षेत्रीय ग्रामीण बैक तथा अनुसूचित वाणिज्यिक बैको के निक्षेपों में तुलनात्मक वृद्धि का ग्राफ
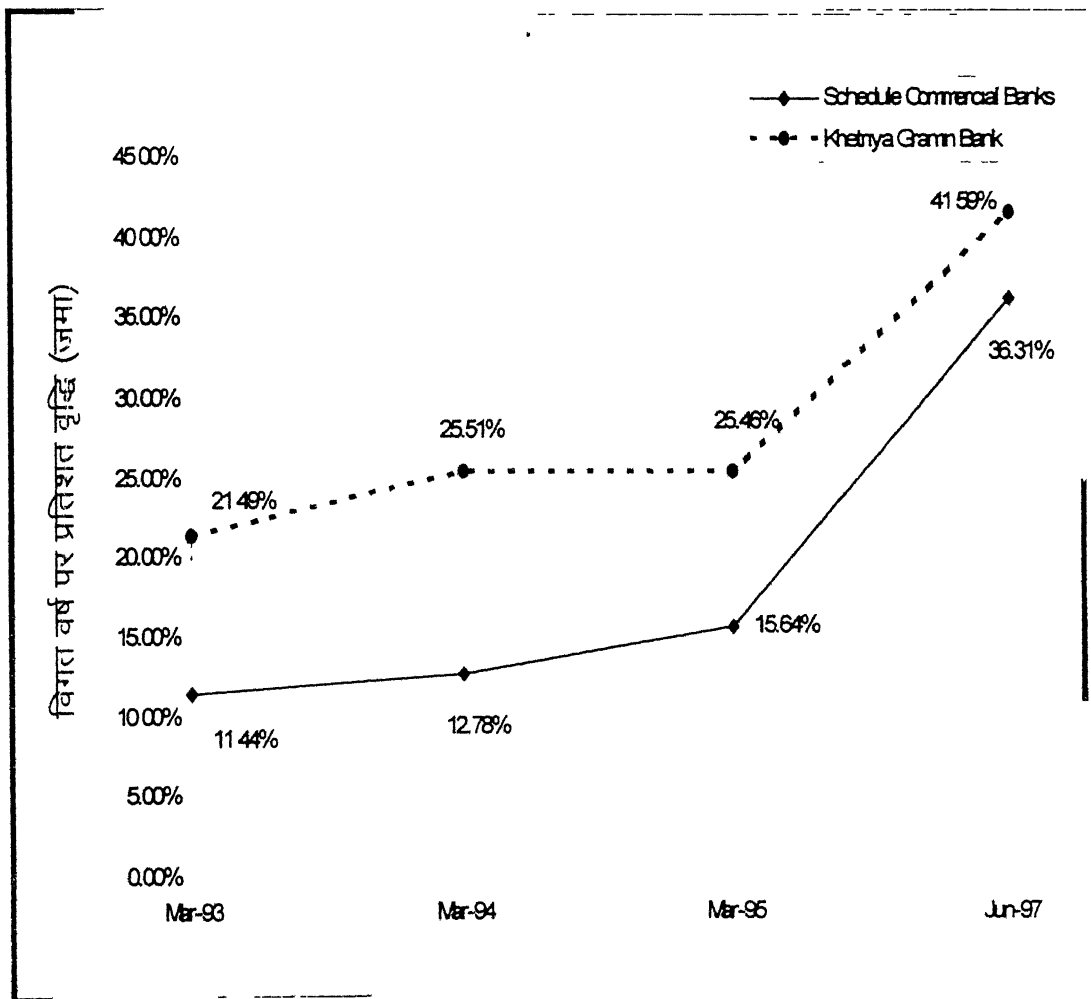
तालिक 2 11— उत्तर प्रदेश में क्षे० ग्रा० बैंको तथा सभी अनु० वाणिज्यिक बैंको का तुलनात्मक विवरण

(धनराशि करोड रू० में)

क्र०	विवरण	मार्च 1991	मार्च 1993	मार्च 1994	मार्च 1995	मार्च 1996	जून 1997
1	2	3	4	5	6	7	8
1-	जमा धनराशि (अनु० वाणि० बैक)	20395 83	25431 28 (24 68)	29619 47 (16 46)	35217 05 (18 89)	41450 81 (17 70)	49240 43 (18 79)
2	जमा धनराशि (क्षे० ग्रा० बैक)	1440 80	1961 47 (36 13)	2473 74 (26 11)	3018 83 (22 03)	3809 63 (26 19)	4588 03 (20 43)
3-	सकल ऋण (अनु० वाणि० बैक)	9346 96	10773 00	11033 07	12331 93	14194 91	15114 28
4	सकल ऋण (क्षे० ग्रा० बैक)	770 05	949 96	1111 48	1338 18	1560 56	1717 06
5	ऋण-जमा अनुपात (अनु० वाणि० बैक) (प्रतिशत)	45 82	42 36	37 25	35 02	34 24	30 69
6	ऋण-जमा अनुपात (क्षे० ग्रा० बैक) (प्रतिशत)	53 44	48 43	44 93	44 32	40 96	37 42

स्रोत - 1 रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया बुलेटिन 2 नाबार्ड

नोट - कोष्ठको मे दी गइ राशि विगत वष की तुलना म प्रतिशत वृद्धि ह।

तालिका 2 11— से स्पष्ट है कि उत्तर-प्रदेश मे जमा सग्रहण प्रतिशत वृद्धि वाणिज्य बैको की अपेक्षा क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे अधिक है। मार्च 1993 मे वाणिज्य बैको की प्रतिशत वृद्धि मार्च 1991 की अपेक्षा 24 68 है जबकि ग्रामीण बैको का 36 13 है। जून 1997 मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की प्रतिशत वृद्धि 20 43 है तथा वाणिज्य बैक की 18 79 है, इससे यह स्पष्ट है कि जमा-सग्रह के मामले मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की स्थिति सन्तोषजनक है। ऋण-जमा अनुपात का प्रतिशत भी क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का अधिक है इससे यह सिद्ध होता है कि ग्रामीण बैंको ने जमा वृद्धि के साथ-साथ ऋण वितरण भी अच्छे ढंग से किया है।

उत्तर प्रदेश में क्षेत्रीय ग्रामीण बैकों तथा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के निक्षेपों मे तुलनात्मक वृद्धि का ग्राफ
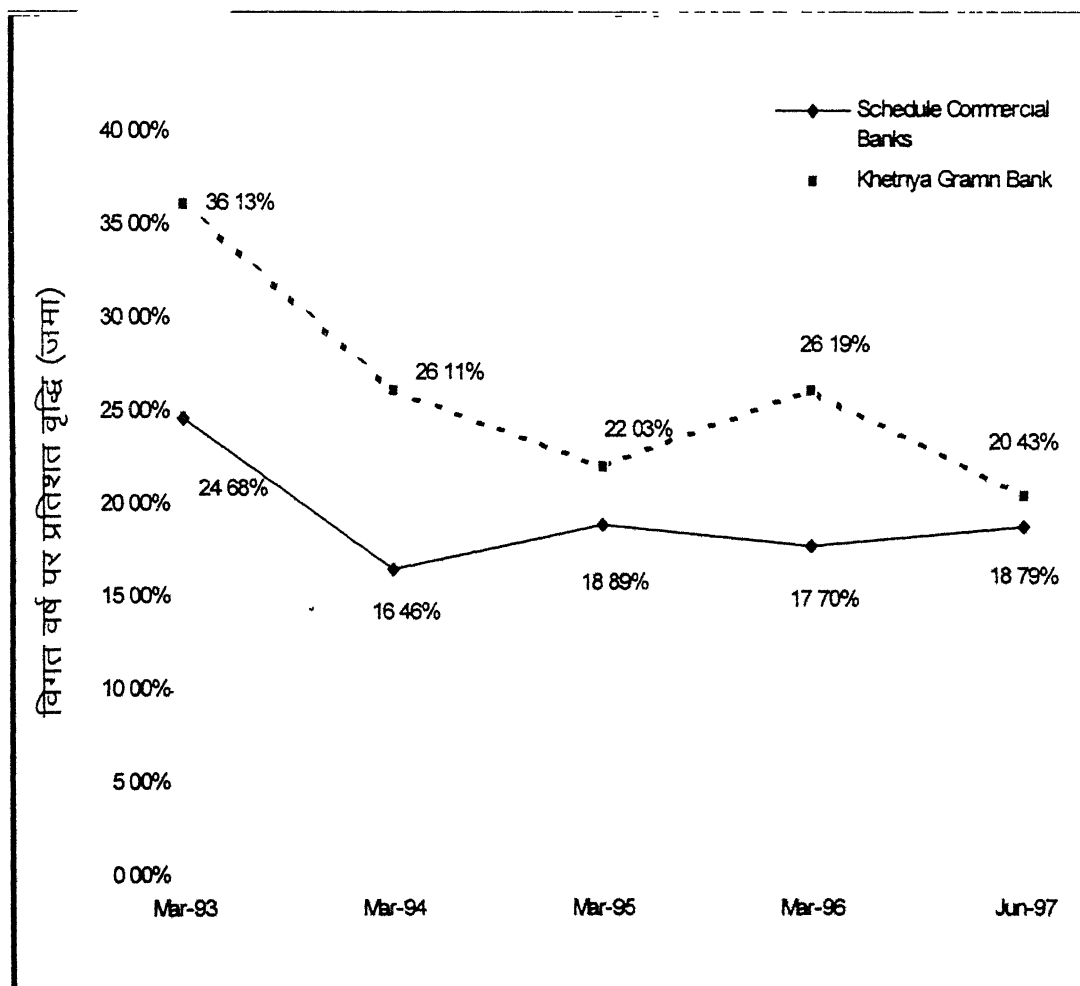
तालिक 2 12— भारत में क्षे० ग्रा० बैंकों तथा सभी अनु० वाणिज्यिक बैंकों का तुलनात्मक विवरण

(धनराशि करोड रू० में)

क्र०	विवरण	मार्च 1990	मार्च 1991	मार्च 1992	मार्च 1993	मार्च 1994	मार्च 1995	मार्च 1996	जून 1997
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1-	जमा धनराशि (अनु० वाणि० बैंक)	166959	192542 (15 32)	237565 (23 38)	268572 (13 05)	315132 (17 33)	386859 (22 76)	433819 (12 13)	507533 (16 99)
2-	जमा धनराशि (क्षे० ग्रा० बैंक)	4150	4989 (20 21)	5867 (17 59)	6938 (18 25)	8826 (27 21)	11150 (26 33)	14187 (27 23)	17327 (22 13)
3-	सकल ऋण (अनु० वाणि० बैंक)	101453	116301	131520	151982	164418	211560	254015	282702
4-	सकल ऋण (क्षे० ग्रा० बैक)	3554	3609	4090	4626	5253	6290	7505	8652
5-	ऋण-जमा अनुपात (अनु० वाणि० बैंक) (प्रतिशत)	60 8	60 4	55 4	56 6	52 2	54 7	58 6	55 7
6-	ऋण-जमा अनुपात (क्षे० ग्रा० बैक) (प्रतिशत)	85 6	72 3	69 7	66 7	59 6	56 4	52 9	49 9

स्रोत - 1 रिजर्व बैक ऑफ इण्डिया बुलेटिन 2 नाबार्ड

नोट - कोष्ठको मे दी गई राशि विगत वर्ष की तुलना मे प्रतिशत वृद्धि है।

तालिका 2 12 से स्पष्ट होता है कि अखिल भारतीय स्तर पर मार्च 1992 को छोडकर सभी वर्षो मे ग्रामीण बैको का अन्य सभी अनु० वाणिज्यिक बैको से जमाओं मे प्रतिशत वृद्धि अधिक है। जून 1997 मे वाणिज्य बैंको की 1996 की तुलना मे प्रतिशत वृद्धि 16 99 है तथा ग्रामीण बैको का 23 13 है। इससे यह परिलक्षित होता है कि जमाओ मे ग्रामीण बैंको ने अप्रत्याशित वृद्धि की है। ऋण-जमा अनुपात भी 1996 तथा 1997 को छोडकर अन्य सभी वर्षों मे ग्रामीण बैको का अधिक है। अत हम यह कह सकते है कि ग्रामीण बैंको ने अपने मूल उद्देश्यो को पूरा करते हुए जमाओ मे वृद्धि की है।

भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों तथा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंको के निक्षेपों में तुलनात्मक वृद्धि का ग्राफ
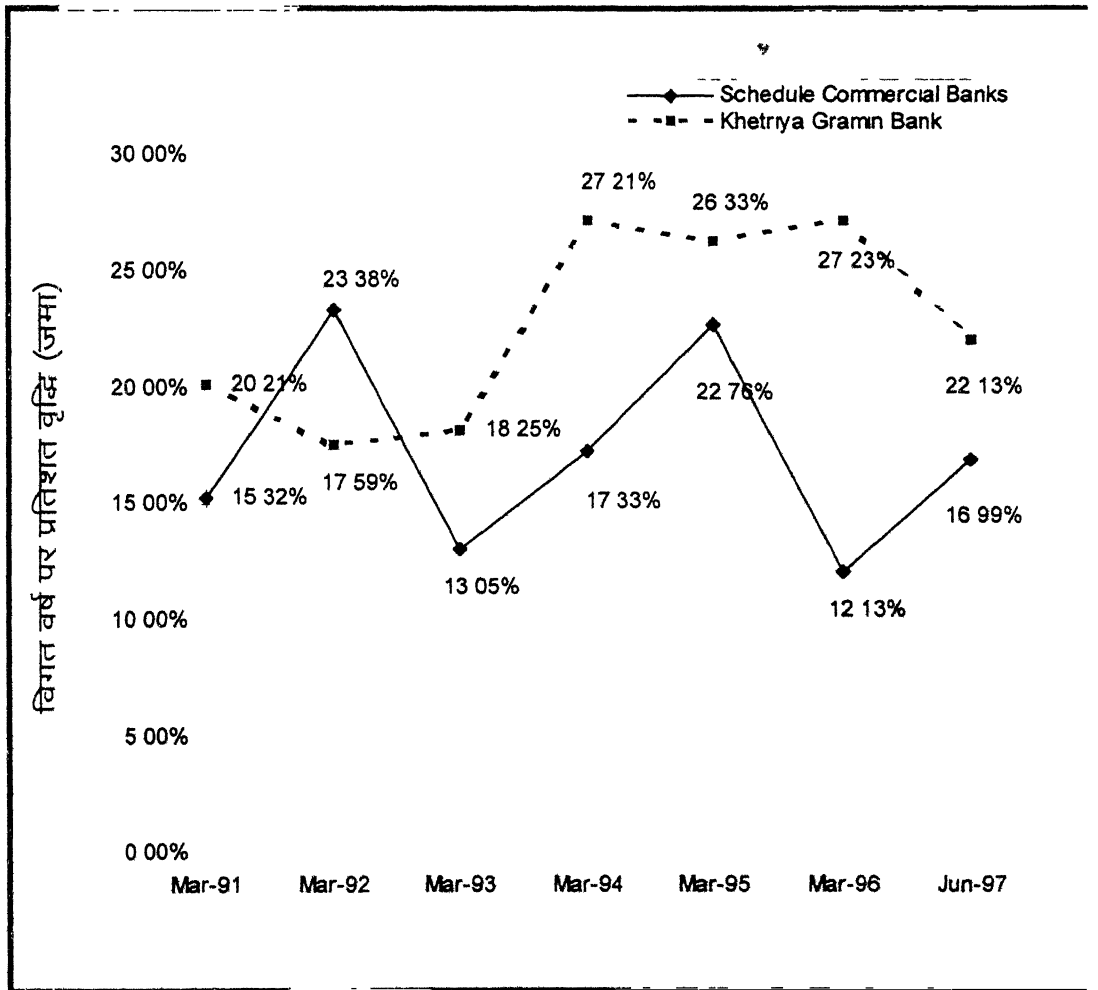
तालिक 2 13— क्षे० ग्रा० बैंकों तथा सभी अनु० वाणिज्यिक बैंकों की कार्यालय, जमा तथा ऋण का क्षेत्र/राज्य/जिलावार विवरण (जून 1997)

(धनराशि लाख रू० में)

	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक			अनु० वाणिज्यिक बैंक		
क्षेत्र/राज्य/जिला	कार्यालय	जमाराशियॉ	ऋण	कार्यालय	जमाराशियॉ	ऋण
1	2	3	4	5	6	7
उत्तरी क्षेत्र	1961 (13 5)	243122 (14 0)	91304	9988 (15 7)	11323285 (22 3)	6111830
उत्तर-पूर्वी क्षेत्र	653 (4 5)	71996 (4 2)	32559	1901 (2 9)	827828 (1 6)	255105
पूर्वी क्षेत्र	3575 (24 7)	409009 (23 6)	169210	11517 (18 1)	6880651 (13 6)	2795972
मध्य क्षेत्र	4625 (31 9)	616025 (35 6)	234615	13204 (20 7)	6786861 (13 4)	2458110
उत्तर प्रदेश	3048 (21 0)	458803 (26 5)	171706	8765 (13 8)	4924043 (9 7)	1511428
इलाहाबाद	92 (0 6)	12717 (0 7)	5587	295 (0 5)	204050 (0 4	52804
पश्चिमी- क्षेत्र	1010 (7 0)	94273 (5 4)	54671	9816 (15 4)	13790666 (27 2)	8413495
दक्षिणी-क्षेत्र	2676 (18 4)	298315 (17 2)	282881	17298 (27 2)	11140039 (21 9)	8235733
अखिल भारत	14500 (100)	1732740 (100)	865241	63724 (100)	50753329 (100)	28270245

स्रोत - *बैकिग साख्यिकी तिमाही पुस्तिका, जून 1997*

नोट - *1 उत्तर प्रदेश तथा इलाहाबाद मध्य क्षेत्र मे शामिल है।*

2 कोष्ठको मे दिये गये ऑकड़े कुल का प्रतिशत है।

तालिका 2 13 से यह परिलक्षित होता है कि, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र तथा मध्य क्षेत्र में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के कार्यालय वाणिज्य बैंको की अपेक्षा अधिक है तथा उत्तरी क्षेत्र, पश्चिमी-क्षेत्र तथा दक्षिणी-क्षेत्र मे वाणिज्य बैंको का अधिक है जबकि शेष मे ग्रामीण बैको का है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण बैंक अपने उद्देश्यो को पूरा करते हुए कार्यालय तथा जमाओ मे निरन्तर वृद्धि कर रहे है।

तालिक 2 14— सभी अनूसूचित वाणिज्यक बैंक तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक कार्यालयों की सख्या का तुलनात्मक विवरण (जून 1997)

विवरण	वाणिज्यिक बैंक कार्यालयो की सख्या	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक कार्यालयो की सख्या
1	2	3
(अ) ग्रामीण (a) Rural	32965 (51 7)	12419 (85 64)
(ब) अर्धशहरी (b) Semi-urban	13697 (21 5)	1773 (12 23)
(स) शहरी (c) Urban	9405 (14 8)	303 (2 09)
(द) महानगरीय (d) Metropolitan	7657 (12 0)	5 (0 04)
योग	63724 (100)	14500 (100)

स्रोत - बैकिग साख्यिकी तिमाही पुस्तिका जून 1997

नोट - कोष्ठको मे दिये गये ऑकडे कुल का प्रतिशत है।

तालिका 2 14 मे जून 1997 की स्थिति के अनुसार क्षेत्रीय ग्रामीण बेक कार्यालया की सख्या 14500 तथा वाणिज्य बैको के कार्यालयो की सख्या 63724 है। दोनो के ग्रामीण क्षेत्रो का प्रतिशत क्रमश 85 64 तथा 51 7 है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थापना के पश्चात ग्रामीण बैको ने अपने शाखाओ की सख्या मे ग्रामीण क्षेत्रो मे वृद्धि की है'

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा वाणिज्यिक बैंक के कार्यालयों का बार चार्ट

जून – 1997
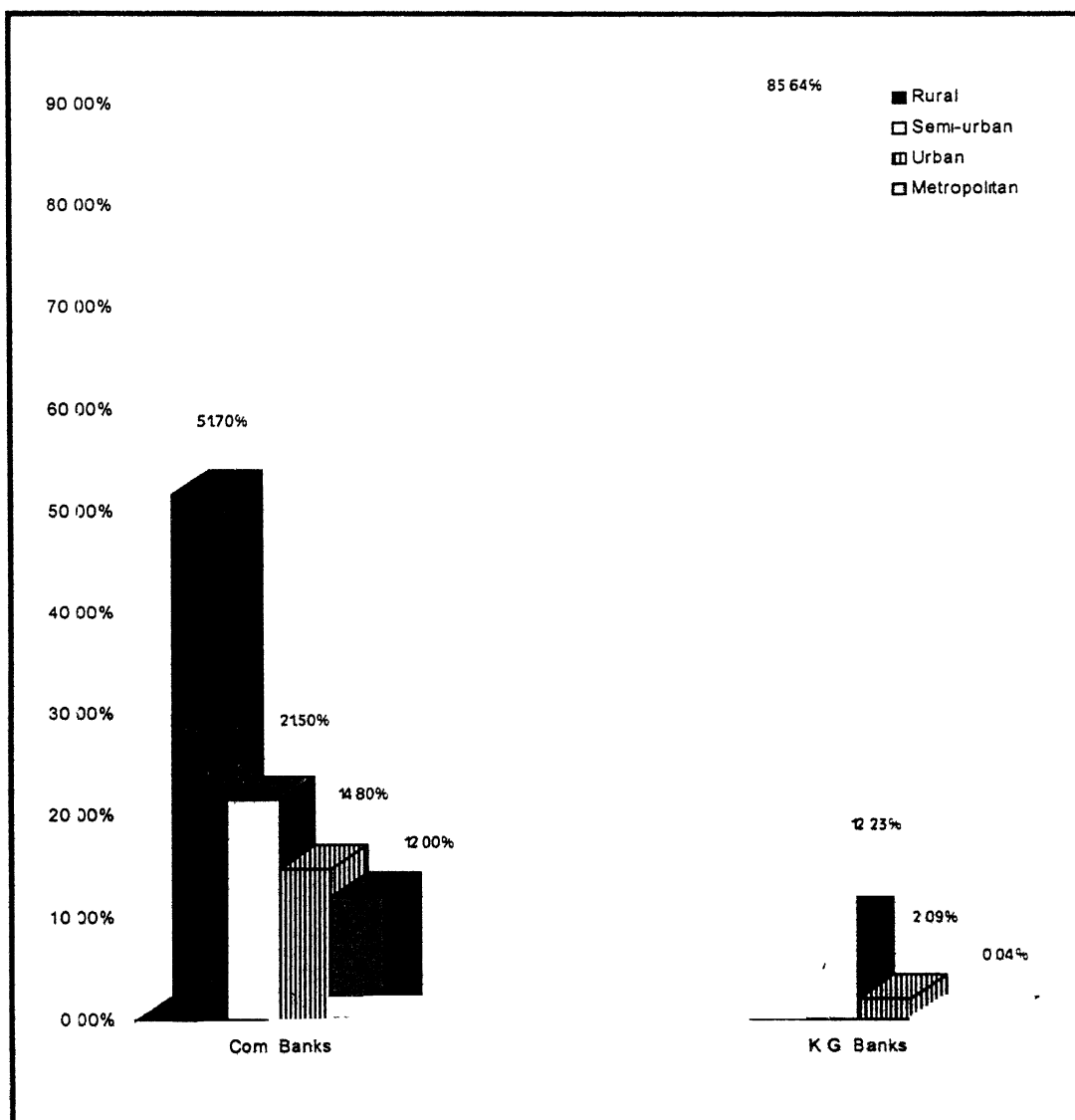
क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक तथा व्यापारिक बैंक में अन्तर :-

क्षेत्रीय ग्रामीण बेक प्राय अनुसूचित बैक ही कहलाते हे फिर भी वर्तमान व्यापारिक बैक तथा इनमे निम्नलिखित अन्तर पाया जाता है

1 क्षेत्रीय ग्रामीण बेक का कार्यक्षेत्र सीमित होता हे। इसके अन्तर्गत प्रदेश के एक अथवा अधिक जिले शामिल किये जाते है जबकि व्यापारिक बैको का कार्यक्षेत्र विस्तृत होता है तथा किसी भी प्रतिबधात्मक शर्त से मुक्त होते हे।

2 ग्रामीण बैक ऋण तथा अग्रिम राशिया केवल सीमान्त कृषको, छोटे व्यापारिया, साहसियो कारीगरो, कृषि श्रमिको एव अन्य उत्पादक व्यवसाय चलाने के लिए देते है जबकि व्यापारिक बैक इसकी अपेक्षा बडे उद्यमियों को ऋण प्रदान करते है।

3 ग्रामीण बैको की व्याज-दरे सहकारी समितियो की ब्याज-दरो से अधिक नही होती, जबकि व्यापारिक बैको मे अपेक्षाकृत अधिक होती हे।

4 ग्रामीण बैको के कर्मचारियो के वेतनमान एव भत्ते केन्द्र सरकार द्वारा निर्धारित किए जाते है परन्तु राज्य सरकार के कर्मचारियो के बराबर ही वेतनमान इनको दिया जाता है, जबकि व्यापारिक बैको के कर्मचारियो को अपेक्षाकृत अधिक वेतनमान प्रदान किया जाता है।

5 क्षेत्रीय ग्रामीण बैक सामाजिक बेकिग के तहत कार्य करते है तथा इनका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उन्नत करना है जबकि व्यापारिक बेक लाभोन्मुख दशाओ मे ही कार्य करते हैं।

6 भारतीय रिजर्व बैक ने समस्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैको को भारतीय रिजर्व बैक अधिनियम 1934 की धारा 42 की उपधारा -1 (क) के उपबधो से छूट प्रदान की है। इसका अर्थ यह है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैको द्वारा रखी जानेवाली आरक्षित नकदी निधि उनके निवल माग और मियादी देयताओ के तीन प्रतिशत ही बनी रहेगी, जबकि व्यापारिक बैको के सन्दर्भ मे निरन्तर परिवर्तन होता रहता है।

बैंकिंग सुधारों पर नरसिंहम समिति की सिफारिशें :-

बैकिग सुधार के लिए गठित दूसरी नरसिहम समिति ने अपनी रिपोर्ट 23 अप्रैल 1998 को केन्द्रीय वित्त मत्री यशवन्त सिन्हा को सौप दी। समिति ने बैकिग क्षेत्र मे दूसरे चरण के सुधार कार्यक्रम के लिए अपनी सिफारिशे इस रिपार्ट मे प्रस्तुत की है। इससे पूर्व अगस्त 1991 मे तत्कालीन वित्त मत्री डॉ० मनमोहन सिह ने वित्तीय क्षेत्र के सभी पहलुओ मे सुधार (Financial Sector Reforms) के लिए एम० नरसिहम (M Narasimham) के अध्यक्षता मे समिति गठित की थी। पुन इन्ही की अध्यक्षता मे बैकिग क्षेत्र सुधार (Banking Sector Reforms) के लिए तत्कालीन वित्त मत्री एम० चिदम्बरम् ने इस समिति का गठन किया था।

अपनी नई रिपोर्ट मे नरसिहम समिति ने पूँजी खाते मे रूपए की पूर्ण परिवर्तनीयता से पूर्व देश मे मजबूत व प्रभावी वित्तीय व्यवस्था विकसित करने, बैको की परिसम्पत्तियो की गुणवत्ता मे सुधार लाने, गैर-निष्पादन परिसम्पत्तियो (NPAS) मे कमी करने, पूँजी पर्याप्तता अनुपात (CAR) मे वृद्धि करने, बैको की खराब परिसम्पत्तियो के अधिग्रहण के लिए एक ऐसेट रिकस्ट्रक्शन फड (ARF) की स्थापना करने, रिजर्व बैक की नियामक व देख रेख सम्बन्धी क्रियाओ को पृथक करने के लिए बोर्ड फॉर फाइनेशियल सुपरविजन (BFS) को स्वायत्तता प्रदान करने, बैको को राजनीति से मुक्त करने, निदेशक

बोर्ड मे पेशेवर व्यक्तियो को शामिल करने तथा बैककर्मियो के विरूद्ध किसी भी कार्यवाही से पूर्व समुचित जॉच-पडताल करने आदि की सस्तुतियॉ की है।

समिति की प्रमुख सिफारिशे बिन्दुवार निम्नलिखित है -

1 देश मे सार्वजनिक क्षेत्र मे बैकिग ढॉचा त्रिस्तरीय हो जिसमे 2-3 बडे बैक ही अन्तर्राष्ट्रीय बैकिग क्रियाए सम्पन्न करे। दूसरे स्तर पर राष्ट्रीय स्तर के 8-10 बैक हो जो निगम क्षेत्र अथवा अन्य बडे उद्यमो की घरेलू साख सम्बन्धी आवश्यकताओ को पूरा करे। स्थानीय आवश्यकताओ एव व्यापार, लघु उद्योग व कृषि क्षेत्र की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए तीसरे स्तर पर स्थानीय बैको का जाल होना चाहिए। इन स्थानीय बैको का जुडाव राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर वाले बैको से हो ।

2 उपर्युक्त व्यवस्था के लिए मजबूत बैको के पारस्परिक विलय की सस्तुति समिति ने की है। समिति का मत है कि इसका उद्योग जगत पर गुणक प्रभाव (Multiplier Effect) होगा, किन्तु इसके साथ ही समिति ने स्पष्ट किया है कि कमजोर बैको का मजबूत बेको मे विलय न किया जाए क्योकि इससे मजबूत बैक की परिसम्पत्ति गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। समिति के अनुसार यदि किसी बैक का सचित घाटा व शुद्ध गैर-निष्पादित परिसम्पत्ति उसकी पूॅजी से अधिक हो जाती है अथवा सार्वजनिक क्षेत्र का कोई बैंक यदि तीन वर्ष तक लगातार घाटे मे रहे तो वह बैक कमजोर बैक की श्रेणी मे माना जाए।

3 छोटे स्थानीय बैक राज्य अथवा जिलो के समूह तक ही सीमित ताकि यह स्थानीय व्यापार, लघु उद्योग व कृषि की आवश्यकताओ को पूरा कर सके।

4 ऋण वसूली पचाट (DRT) के असतोषजनक प्रदर्शन को देखते हुए समिति ने आर० बी० आई० एक्ट, बैकिग रेगुलेशन एक्ट, नेशनलाइजेशन एक्ट व स्टेट बैक आफ इन्डिया एक्ट की त्वरित समीक्षा कर इन्हे बैकिग उद्योग की मौजूदा आवश्यकताओ के अनुरूप बनाने का सुझाव दिया है। इनके साथ-साथ सिक इडस्ट्रियल अडरटेकिग्स (स्पेशल प्रॉविजन) एक्ट व बैकर्स बुक एविडेस एक्ट की भी समीक्षा की जानी चाहिए।

5 गैर-बैकिग वित्तीय कम्पनियो की ऋण उपलब्ध कराने की गतिविधियो को वित्तीय व्यवस्था के साथ विलय पर विचार किया जाए ।

6 सार्वजनिक क्षेत्र के बैको मे तेजी से कम्प्यूटरीकरण की आवश्यकता है।

7 ऋण वितरण के माामले मे सामाजिक प्राथमिकाताओ के औचित्य को स्वीकार करने के बावजूद समिति ने कहा है कि इसका व्यावसायिक हितो के साथ टकराव नहीं हाना चाहिए ।

8 बैको की बढती हुयी गैर-निष्पादित परिसम्पत्तियो को देखते हुए इस समस्या से निपटने के लिए परिसम्पत्ति पुनर्गठन फड (ARF) को पुनर्जीवित करने का समिति ने सुझाव दिया है। इससे पूर्व 1991 मे गठित पहली नरसिहम समिति ने भी यह सुझाव दिया था।

9 समिति का मत है कि बैको के लिए पूर्व मे पूॅजी पर्याप्तता अनुपात (C A R) का निर्धारण बैकिग इटरनेशनल स्टैडर्ड की बासले समिति द्वारा निर्धारित स्तर के आधार पर किया गया था। समिति का कहना है कि उसके बाद से अब तक परिस्थतियो मे काफी परिवर्तन आ चुके है। अत पूॅजी पर्याप्तता की मौजूदा सीमा की समीक्षा की आवश्यकता है। पुनर्समीक्षा के क्रम मे इस सीमा मे बढोत्तरी की सम्भावनाओ का पता लगाया जाना चाहिए।

9 बैको मे भर्ती, प्रशिक्षण व वेतन नीति के भी पुनर्मूल्याकन की सस्तुति करते हुए समिति ने कहा है कि कर्मचारियो की सख्या आवश्यकता से अधिक होने पर स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना लागू की जानी चाहिए ।

10 समिति का मत है कि सुधार कार्यक्रमो का उद्देश्य बैको को परिचालन मे अधिक स्वायत्तता दिए बिना पूरा नहीं हो सकता। इस नाते समिति ने सरकार से कहा है कि स्वामित्व और प्रबन्धन के अन्तर को समझते हुए स्वामित्व को प्रबन्धन का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए, क्योकि स्वामित्व के दबाव मे प्रबन्धन स्वतत्र रूप से काम नहीं कर सकता और इससे व्यावसायिक हित भी प्रभावित हो सकते है।

अध्याय : 3

भारत में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक : स्थापना से जून, 1997 तक

> *"Even as a banker cannot run a bank if he has nothing in his chest, so can a general hat lead a battle if he has no soldiers on whom he can rely implicitly "*
>
> —Mahatma Gandhi

भारत का विकास गॉवो के विकास के बिना सम्भव नहीं है। इस बात की पहचान सबसे पहले महात्मा गॉधी ने की और उन्होने देश के नेताओ तथा तत्कालीन सरकार को सुझाव दिया कि गॉवो का विकास कृषि आधारित कुटीर उद्योगो को बढावा देकर किया जा सकता है। यहॉ की 80 प्रतिशत जनसख्या गॉवो मे निवास करती है।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सदैव एक चिन्तनीय विषय रहा है। पीढी दर पीढी की ऋणग्रस्तता एव पर्याप्त वित्तीय सुविधा न होने के कारण किसान, महाजन या साहूकार के जाल से मुक्त नहीं हो पाता और न ही उपज का उचित मूल्य प्राप्त करने मे सफल हो पाता है। शायद इसी आधार पर शाही कृषि आयोग (1930) ने कहा है कि "भारतीय किसान ऋण मे जन्म लेता है, ऋण मे ही पल पास कर बड़ा होता है और अपने आश्रितो के लिए भी ऋण छोडकर चला जाता है।"

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद यह देखा गया कि सदियो के आर्थिक शोषण ने देश के अधिसख्य नागरिको को विपन्न कर दिया है, अत उनके विकास के लिए वित्त की आवश्यकता को प्रमुखता से महसूस किया गया। पर एक ओर जहॉ शासन को स्वय के स्रोतो से इतनी अधिक मात्रा मे वित्तीय ससाधनो का प्रबध करना सभव नहीं था, वहीं दूसरी ओर विस्तार की दृष्टि से भी इतने बडे देश मे विकास कार्यक्रमो को

दूर-दराज तक पहुचाना कठिन था। इन स्थितियो मे काम करते हुए यह पाया गया कि वित्त की मॉग की पूर्ति बैंको की मदद से काफी हद तक पूरी हो सकती है अत इस दिशा मे शासन ने कदम बढाए और बैको पर सामाजिक नियत्रण व राष्ट्रीयकरण आदि के द्वारा वित्त की पर्याप्त व्यवस्था की गयी लेकिन इतना हो जाने के बावजूद व्यापकता की समस्या अभी गभीर बनी हुई थी। पूर्व स्थापित व्यावसायिक बैको की स्थापना लागत अधिक थी अत देश के दूर-दराज के अचलो मे इनकी शाखाओ का खोला जाना व्यावहारिक नहीं पाया गया और यही कारण था कि गरीब तबके तक अधिकोषीय सुविधा प्रदान करना शासन के लिए दुष्कर हो गया।

स्वतत्रता के बाद भारत मे ग्रामीण क्षेत्रो के विकास की दिशा मे जो कदम उठाये गये है उनमे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की स्थापना काफी महत्वपूर्ण है क्योकि उपनिवेशवादी शासन की बेडिया तोडने के बाद हमारा देश अपने आप को विकास की अपनी आकाक्षाओ को मूर्त रूप देने की स्थिति मे पाया। उस समय इस देश के पास अनुभव के नाम पर आर्थिक पराभव के लम्बे इतिहास के अलावा कुछ नहीं था। उपनिवेशवादी ताकतो ने इस देश का भारी आर्थिक शोषण किया था जिससे आर्थिक ठहराव की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

हमारे देश मे ग्रामीण क्षेत्रो मे मेहनती किसानो, हुनरमद दस्तकारो और व्यापारियो की कोई कमी नहीं है। अगर कोई कमी है तो वह है-आर्थिक तथा अन्य

ससाधनो की, जिसकी वजह से इन लोगो की क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो पाता । अगर ग्रामीण क्षेत्रो को ऋण सुविधाए उपलब्ध करा दी जाए, तो वे न सिर्फ अपनी स्थिति सुधार सकते है बल्कि राष्ट्र को खुशहाल बनाने मे भी अपना योगदान कर सकते है। आजादी के बाद हमारे नीति-निर्माताओ ने इसी बात को ध्यान मे रखते हुए ग्रामीण क्षेत्रो मे ऐसी व्यवस्था कायम करने की जरूरत महसूस की जिनके जरिये जरूरतमद छोटे और सीमात कृषको, खेतिहर मजदूरो, ग्रामीण दस्तकारो तथा छोटे व्यापारियो को आसान शर्तों पर ऋण की सुविधा उपलब्ध करायी जा सके।

ब्रिटिश शासनकाल मे देश मे ऐसी कोई सस्थागत व्यवस्था नहीं थी जिसके माध्यम से छोटे और सीमात किसानो, दस्तकारो आदि को व्यावसायिक कार्यो के लिए ऋण या साख उपलब्ध करायी जाती। जब भी जरूरत पडती, वे सूदखोर, महाजनो और सेठ-साहूकारो की शरण मे जाने को मजबूर थे। ये लोग उनके शोषण मे कोई कसर नहीं छोडते थे। थोडे से पैसो के लिए किसानो की जमीन गिरवी रख ली जाती और कई पीढियो तक सूद चुकाने के बाद भी कर्ज नहीं उतर पाता था। कई बार तो किसानो से अपार धन ही नहीं, उनकी जमीन तक ऋण के बदले छीन ली जाती थी। ग्रामीण जीवन के यथार्थ चित्रण के लिए प्रसिद्ध प्रेमचद की कहानियो मे किसानो की ऋणग्रस्तता और महाजनो के शोषण का जो चित्र खींचा गया है, वह आज भले ही काल्पनिक लगता हो मगर उस समय के ग्रामीण भारत की यही कडवी सच्चाई थी। हमारे नीति-निर्माताओ के प्रयासो से आज स्थिति मे काफी बदलाव आ चुका है।

हालाकि छोटे किसानो, दस्तकारो, व्यापारियो आदि की ऋण सबधी समस्याए, आज भी बरकरार है मगर बीते जमाने जैसा शोषण अब नजर नहीं आता । इसमे हमारी बैकिंग नीतियो, विशेष रूप से क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

1950 मे भारतीय रिजर्व बैक की पहल पर सरकार की ग्रामीण बैंकिग जॉच समिति ने ग्रामीण क्षेत्रो मे ऋण सुविधाओं के विस्तार का सुझाव दिया। सन् 1951-52 मे रिजर्व बैक द्वारा कराये गये अखिल भारतीय सर्वेक्षण से किसानो की ऋण सम्बन्धी आवश्यकताओ के बारे मे महत्वपूर्ण जानकारिया प्राप्त हुई। इससे ग्रामीण क्षेत्रो के लिए विशेष प्रकार की वित्तीय सेवाओं की जरूरत उजागर हुई। इसी बात को ध्यान मे रखकर सहकारी बैंक भी बनाये गये लेकिन ये बैंक छोटे किसानो, दस्तकारो तथा खेतिहर मजदूरो को सतोषजनक सुविधाएँ उपलब्ध कराने में कामयाब नहीं रहे तथा इनका फायदा बडे किसान ही उठा पाये। आकडो को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्राथमिक कृषि सहकारिताओ द्वारा उपलब्ध कराये जाने वाले ऋणो का सिर्फ 35 प्रतिशत दो हेक्टेयर से कम जोत वाले किसानो को मिला । दो हेक्टेयर से अधिक जमीन वाले किसानो को 51 प्रतिशत हिस्सा मिला जबकि खेतिहर मजदूरो, काश्तकारो और बटाईदारों को तो सिर्फ 4 प्रतिशत से सतोष करना पडा।

हालाकि बैंकों का राष्ट्रीयकरण, सामाजिक बैंकिग की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी, मगर राष्ट्रीयकृत बैंको को भी ग्रामीण क्षेत्रो मे ऋण सबधी जरूरतों को पूरा

करने मे कोई खास सफलता नहीं मिली। इसके अनेक कारण थे। भारत मे करीब सात लाख गॉवो मे राष्ट्रीयकृत बैको की सुविधा उपलब्ध कराना कोई आसान कार्य नहीं था। फिर वाणिज्यिक बैको का काम करने का अपना तरीका होता है। वे मुनाफे का ध्यान रखे बिना कार्य नहीं कर सकते। इसके अलावा इन बैको के साथ सबसे बडी दिक्कत यह थी कि आम ग्रामीण इनमे जाने से हिचकते थे। दूसरी ओर ये बैक भी कृषि जैसे मौसमी और अनिश्चित परिणाम वाले कार्यो के लिए किसानो को कर्ज देने मे सकोच करते थे। छोटे किसानो और दस्तकारो को ऋण उपलब्ध कराने में तो वाणिज्यिक बैक काफी पीछे रहे। प्राथमिकता वाले क्षेत्रो के लिए निर्धारित ऋण सुविधाओ का सिर्फ 10 प्रतिशत इन लोगो को मिल पाता है। राष्ट्रीयकरण के बाद ग्रामीण क्षेत्रो मे सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको की शाखाओ का पर्याप्त विस्तार हुआ है मगर ग्रामीण शाखाओ की उत्पादकता का स्तर काफी कम रहा है। इससे इनकी लाभप्रदता कम हुई है।

ग्रामीणों के लिए विशेष बैंक:-

इन बातो को ध्यान मे रखते हुए सरकार ने यह महसूस किया कि ग्रामीण क्षेत्रो के निर्धन वर्गों के लोगो की ऋण सबधी जरूरतो को पूरा करने के लिए विशेष बैंक खोले जाये। 1975 मे सरकार ने श्री एम. नरसिम्हन की अध्यक्षता मे एक कार्यदल गठित किया और विभिन्न वित्तीय सस्थाओ से कमजोर वर्ग के लोगों को प्राप्त होने वाले सस्थागत ऋणो के बारे मे जानकारी हासिल कर अपनी रिपोर्ट देने को कहा।

इस कार्यदल का गठन करके सरकार ने एक तरह से यह बात स्वीकार की कि गावो के छोटे और सीमात किसानो, दस्तकारो और अन्य जरूरतमद लोगो की ऋण सबधी आवश्यकताओ की पूर्ति नहीं हो रही है। यह भी महसूस किया गया कि अगर जरूरतमद लोगो को सस्थागत ऋण सुविधाओ का लाभ पहुँचाना है तो कर्ज देने के नियमो और शर्तो मे बदलाव लाना होगा। वाणिज्यिक बैको के समान तौर-तरीके अपनाकर यह लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। नरसिम्हन कार्यदल ने इन बातो को ध्यान मे रखकर अपनी रिपोर्ट दी। रिपोर्ट मे ग्रामीण क्षेत्रो की विशेष जरूरतो को ध्यान मे रखते हुए राज्यो के नियत्रण वाले 'ग्रामीण विकास बैको' की स्थापना का सुझाव दिया गया। रिपोर्ट मे इस बात पर जोर दिया गया कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैको को सहकारिताओ की तरह स्थानीय ग्रामीण समुदाय की जरूरतो की पूरी जानकारी होनी चाहिए, साथ ही उनमे वाणिज्यिक बैको की तरह आधुनिक दृष्टिकोण, प्रबध-कौशल और धन जमा करने की क्षमता भी होनी चाहिए।

नरसिम्हन समिति की सिफारिशो के अनुसार 26 सितम्बर 1975 को क्षेत्रीय ग्रामीण बैक अध्यादेश लागू किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी की जन्मतिथि के अवसर पर 2 अक्टूबर, 1975 को उत्तर प्रदेश मे मुरादाबाद और गोरखपुर, हरियाणा में भिवानी, राजस्थान मे जयपुर और पश्चिमी बगाल मे माल्दा मे पाच "क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों" का शुभारम्भ किया गया। देश मे ग्रामीण साख के क्षेत्र में यह एक अभिनव परिवर्तन था। । 2 फरवरी 1976 से इस अध्यादेश के स्थान पर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

अधिनियम लागू हुआ। अधिनियम मे ऐसे सभी जिलो मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैक खोलने की बात कही गयी जहा सहकारी बैक व्यवस्था सुदृढ नहीं थी। इसी तरह पिछडे इलाको और बैकिग सुविधाओ की कमी वाले क्षेत्रो मे भी क्षेत्रीय ग्रामीण बैक खोलने का प्रावधान भी अधिनियम मे किया गया। इस प्रकार सहकारी बैको तथा व्यापारिक बैको की ग्रामीण शाखाओ की श्रृखला मे यह एक नई कडी है।

स्थापना का उद्देश्य एंव कार्यः-

इन बैको की स्थापना का उद्देश्य एकमात्र ग्रामीण समाज के कमजोर वर्ग के लिए साख जुटाना है । क्षेत्रीय ग्रामीण बैक अधिनियम 1976 के अनुसार इनकी स्थापना का उद्देश्य है "ग्रामीण क्षेत्र मे कृषि, व्यापार, वाणिज्य, उद्योग तथा अन्य उत्पादक गतिविधियो, विशेष रूप से लघु एव सीमान्त कृषक, खेतिहर मजदूर, दस्तकार एव लघु व्यवसायी तथा इनसे सम्बन्धित अन्य व्यवसायो को साख एव अन्य सुविधाये प्रदान कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करना"। इस अधिनियम मे अन्तर्निहित कार्य एव उद्देश्य इस प्रकार है -

1 ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करना।

2 बैकिग का विकास कर ग्रामवासियो की महाजनो एव सूदखोरो पर निर्भरता कम करना।

3 सस्थागत साख विस्तार द्वारा ग्रामीण साख की खाई को पाटना।

4 ग्रामीण समाज के कमजोर वर्ग के लघु सीमान्त कृषक, भूमिहीन कृषि मजदूरो एव ग्रामीण दस्तकारो जैसे लक्षित समूह की साख की आवश्यकताओ की पूर्ति कर उनकी गरीबी दूर करना।

5 गरीब लोगो को उपभोग ऋण प्रदान करना।

6 कृषि तथा सम्बद्ध उत्पादक गतिविधियो मे विनियोजन बढाना ।

7 ग्रामीण, लघु एव कुटीर उद्योगो का विकास करना।

8 पिछडे, दूरदराज के आदिवासी बाहुल्य वाले इलाको के लोगो की आर्थिक स्थिति सुधार कर उनके जीवन स्तर को उन्नत बनाना।

9 निर्धन ग्रामीणो मे बैकिग की भावना पैदा करना तथा बचत की आदत डालना।

इस प्रकार क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, अपने कमान क्षेत्र से साधन सग्रह कर उसी क्षेत्र मे साधनो का फैलाव मुख्यत उत्पादक उद्देश्यो के लिए करने हेतु स्थापित किए गए है।

प्रत्येक क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का कमान क्षेत्र एक राज्य के एक से पाच जिलो तक सीमित है जिसके बाहर बैक कार्य नहीं कर सकता है। इनकी स्थिति अनुसूचित व्यापारिक बैक जैसी है, जिसका प्रायोजन सहकारी अथवा व्यापारिक बैक द्वारा किया जाता है। बैंक की अधिकृत पूॅजी एक करोड रूपये (वर्तमान मे 5 करोड रू) तय की

गई तथा निर्गमित पूजी 25 लाख रूपये (वर्तमान मे एक करोड रू) जिसको केन्द्र सरकार, राज्य सरकारे तथा प्रायोजक बैक द्वारा 50 15 35 के अनुपात मे जुटाई गई।

प्रारम्भ मे स्थापित पाच क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक निम्नलिखित थे -

क्रम स	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का नाम	स्थान व राज्य का नाम	प्रायोजक बैंक का नाम
1	हरियाण क्षेत्रीय ग्रामीण बैक	भिवानी-हरियाणा	पजाब नेशनल बैक
2	जयपुर-नागौर आचलिक ग्रामीण बक	लावण-राजस्थान	यूनाईटेड कामर्शियल बैक
3	प्रथमा बैक	मुरादाबाद-उत्तर प्रदश	सिन्डीकेट बैक
4	गोरखपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैक	गोरखपुर-उत्तर प्रदेश	भारतीय स्टेट बैक
5	गौड ग्रामीण बैक	माल्दा-प बगाल	यूनाईटेड बै०आफ इडिया

स्रोत- नाबार्ड

बैंक की पूँजी :-

भारत के राष्ट्रपति की ओर से 27 सितम्बर 1975 को एक अध्यादेश जिसका शीर्षक क्षेत्रीय ग्रामीण बेक अध्यादेश 1975 (The Regional Rural Bank Ordinance 1975) था, जारी किया गया। इसके अनुसार प्रत्येक क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की अधिकृत पूँजी (Authorised Capital) 1 करोड रूपये निर्धारित की गई परन्तु प्रदत्त पूँजी (Paid-up Capital) 25 लाख रूपये ही रखी गई जिसमे से 50 प्रतिशत भारत सरकार द्वारा, 15 प्रतिशत सम्बन्धित राज्य सरकार द्वारा तथा शेष 35 प्रतिशत प्रायोजक व्यापारिक बैक द्वारा एकत्रित होनी थी। परन्तु क्षेत्रीय ग्रामीण बैक (सशोधन) बिल 1987 के अनुसार क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की प्राधिकृत पूँजी 1 करोड रूपये से बढाकर 5 करोड रूपये तथा चुकता अश पूँजी 25 लाख रूपये से बढाकर 1 करोड रूपये कर दी गयी हे।

बैंक का प्रबन्धन :-

बैक का प्रबन्धन एक निदेशक मडल (Board of Directors) द्वारा किया जाता हैं जिसके 9 सदस्यीय सचालक होते है जिनमे से 6 केन्द्रीय सरकार 1 राज्य सरकार तथा 2 प्रायोजक बैंक द्वारा नियुक्त किये जाते है। सचालक मण्डल के अध्यक्ष की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा की जाती है। इस सचालक मडल को समय-समय पर निगमित सरकारी आदेशो का पालन करना होता है। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ने

इन बैको को अनुसूचित बैक मानकर अपनी द्वितीय सारणी (Second Schedule) मे अंकित कर लिया है। परन्तु रिजर्व बैक ने समस्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको को भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 की धारा 42 की उपधारा-1 (क) के उपबन्धो से छूट प्रदान की है इसके अनुसार इन बैकों को अपनी कुल जमाओ का 25 प्रतिशत तरल रूप मे रखना पडता है और कुल मॉग एव समय दायित्वों का 3 प्रतिशत ही रखना होना है।

शेयर पूँजी के सम्बन्ध में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से संबंधित कार्यदल की सिफारिशें :-

(1) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको से सबधित कार्यदल की सिफारिश के अनुसार भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 1989-90 के दौरान 48 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की शेयर पूँजी मे 25 लाख रू से 50 लाख रूपये की बढोत्तरी के लिए मजूरी दी। इस मजूरी से 196 क्षे ग्रा बैंकों मे से 194 की चुकता पूँजी बढकर 50 लाख रू हो गयी है।[1]

(2) क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के लिए गठित कार्यदल की सिफारिशो पर भारत सरकार नें 1990-91 के दौरान 80 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की शेयर पूजी को 50 लाख रू से बढाकर 75 लाख रू कर दिया।[2]

---

1. *भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एवं प्रगति संबंधी रिपोर्ट : 1989-90, पृष्ठ 57*
2. *भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन अप्रैल 1992 (परिशिष्ट) पृष्ठ 58*

(3) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको सबधी कार्यकारी दल द्वारा की गयी सिफारिश के अनुसार भारत सरकार ने वर्ष 1991-92 के दौरान 83 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की निर्गमित शेयर पूँजी 50 लाख रू से 75 लाख रूपये कर दी।[3]

(4) क्षेत्रीय ग्रामीण बैको सबधी कार्यकारी दल द्वारा की गयी सिफारिश के अनुसार भारत सरकार ने वर्ष 1992-93 के दौरान 73 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की 50 लाख रू की निर्गमित शेयर पूँजी से 75 लाख रूपये और अन्य 20 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे से प्रत्येक के लिए 75 लाख रूपये से 1 करोड रूपये की वृद्धि को अनुमोदित कर दिया।[4]

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (संशोधन) बिल 1987:-

श्री एस एम केलकर की अध्यक्षता मे गठित कार्यदल की सिफारिशो के आधार पर, क्षेत्रीय ग्रामीण बैक अधिनियम, 1976 का क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (सशोधन) बिल, 1987 द्वारा सशोधन किया गया। यह सशोधन 28 सितम्बर 1988 से लागू हुआ।

उक्त सशोधन मे शामिल कुछ महत्वपूर्ण मदे निम्नलिखित है -

(1) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की प्राधिकृत पूजी एक करोड रूपये से बढाकर पॉच करोड रूपये तथा चुकता अश पूँजी 25 लाख रूपये से 1 करोड रूपये कर दी गयी है।

---

3. *भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन जनवरी 1993 (परिशिष्ट) पृष्ठ 45*
4. *भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन मई 1994 (परिशिष्ट) पृष्ठ 44*

(ii) क्षेत्रीय ग्रामीण बैक के अध्यक्ष की नियुक्ति प्रायोजक बैंक द्वारा राष्ट्रीय बैक से परामर्श करके की जाएगी।

(iii) क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के कार्यो के बारे मे प्रायोजक बैको को और बडे उत्तरदायित्व सौंपे गये है। अश-पूॅजी मे अशदान करने के साथ-साथ, वे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के प्रथम पाच वर्ष के कार्यकाल के दौरान उन्हे प्रबधात्मक तथा वित्तीय सहायता प्रदान करके तथा उनके कर्मचारियो को प्रशिक्षण देकर अपेक्षाकृत बडी मात्रा मे उनकी सहायता करेगे।

(iv) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के समामेलन के सबध मे भी सशोधन अधिनियम मे प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय बैक द्वारा सबधित राज्य सरकार तथा प्रायोजक बैक से विचार-विमर्श करके दो या अधिक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको का समामेलन किया जा सकता है। इस तरह का समामेलन करते समय लोकहित, क्षेत्रीय ग्रामीण बैक द्वारा सेवित क्षेत्र के विकास तथा स्वय ग्रामीण बैंको के हित को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

(v) प्रायोजक बैंको को यह अधिकार दिया गया है कि वे समय-समय पर अपने द्वारा प्रायोजित क्षे ग्रा बैको की प्रगति की निगरानी करें, उनका निरीक्षण तथा उनकी आतरिक लेखा-परीक्षा करे एव उनकी सुरक्षा की जॉच करे तथा जहॉ कहीं आवश्यक हो, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को सुधारात्मक उपाय सुझाये।[5]

---

5 *भारत में बैंकिंग की प्रवृत्ति एव प्रगति रिपोर्ट 1987-88 पृष्ठ 89*

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से संबंधित विभिन्न समितियॉ तथा उनकी सिफारिशें :-

1. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों से सबंधित कार्यकारी दल (नरसिम्हन कमेटी 1975)-

The Working Group on RRBs (Narisimhan Committee- 1975)

इस समिति की तीन महत्वपूर्ण सिफारिशे थी -

(1) प्रायोजक बैक प्रतिनियुक्त स्टाफ का खर्च स्वय वहन करे।

(2) क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के स्टाफ प्रशिक्षण की मुफ्त व्यवस्था करे।

(3) पुनर्वित्त सुविधा सस्ते दर पर उपलब्ध कराये।[6]

2- दॉतवाला समिति (1977) The Dantwala Committee (1977):-

केन्द्र मे राजनीतिक परिवर्तन के बाद प्रथम बार इनकी उपयोगिता की जॉच हेतु दॉतवाला कमेटी गठित की गई। दॉतवाला समिति ने इन बैको के प्रयासो तथा क्षमताओ की प्रशसा की तथा यह विश्वास व्यक्त किया कि व्यवसाय का स्तर बढने के साथ ही इनकी लाभप्रदता का सकट भी समाप्त हो जाएगा। समिति ने यह भी कहा कि बैको का प्रसार विशेष रूप से साखरहित बैक क्षेत्र मे किया जाय तथा 60 प्रतिशत ऋण लघु कृषको, ग्रामीण दस्तकारो और अन्य ग्रामीण निर्धनो मे दिया जाय।[7]

3 केलकर समिति (1986) Kelkar Committee (1986):-

स्थापना के दस वर्ष पूर्ण होने पर सरकार ने केलकर समिति का गठन किया जिसने इन बैंको की कार्य प्रणाली की कडी समीक्षा की तथा इनके प्रबध व व्यवहार्यता

---

6 कुरूक्षेत्र (अग्रेजी सस्करण) जुलाई 1996, पृष्ठ 15

7. कुरूक्षेत्र (अंग्रेजी सस्करण) जुलाई 1996, पृष्ठ 15

सबधी अनेक पहलुओ पर अपने सुझाव दिये। यह रिपोर्ट सरकार को 10 मार्च 1986 को प्राप्त हुई जिसके आधार पर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक (सशोधन) एक्ट 1987 को मन्जूरी दी गई। तब तक 196 ग्रामीण बैंक अस्तित्व मे आ चुके थे। इसके बाद देश मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की श्रृखला को विराम लग गया, जो कि अभी तक बरकरार है। इसके अतिरिक्त प्रायोजक बैको को अपना अशदान बढाने, पुनर्वित्त सहायता निम्नदर पर उपलब्ध कराने का सुझाव दिया। क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के समामेलन के सबध मे यह प्रावधान किया कि नाबार्ड, सबधित राज्य सरकार तथा प्रायोजक बैंक से विचार-विमर्श करके दो या अधिक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको का समामेलन किया जा सकता है। इस तरह समामेलन करते समय लोकहित, क्षेत्रीय ग्रामीण बैक द्वारा सेवित क्षेत्र के विकास तथा स्वय ग्रामीण बैंको के हित को भी ध्यान मे रखा जाना चाहिए।

4. खुशरो समिति (1989) (Khusro Committee):-

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की सगठनात्मक समस्याओ पर विचार करने के लिए 1989 मे डा ए एम खुशरो की अध्यक्षता मे कृषि साख सर्वेक्षण समिति (1989) बनायी गयी। समिति ने विभिन्न पहलुओ, जैसे, खराब वसूली, प्रबधकीय तथा स्टाफ की समस्याएँ, ह्रासित लाभप्रदता आदि का अध्ययन करने के पश्चात इन बैंकों का प्रायोजक बैंको मे बिलय का सुझाव दिया।[8]

---

8 *कुरूक्षेत्र (अग्रेजी संस्करण) जुलाई 1996, पृष्ठ 24*

5 नरसिम्हन समिति (1991):-

नरसिम्हन समिति की सिफारिश थी कि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको की ग्रामीण सह-इकाइयो की स्थापना की जाए जो बैको की ग्रामीण शाखाओं को अपने अधिकार मे ले ले, समिति ने इस बात का विकल्प क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको और उनके प्रायोजक बैंको पर छोड दिया कि क्या क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अपनी पहचान बनाये रखे अथवा वे प्रायोजक बैको की ग्रामीण बैकिग सह-इकाइयो के साथ स्वैच्छिक आधार पर मिल जाए।[9]

6 भण्डारी समिति (1994) - Bhandari Committee- (1994):-

भारत सरकार द्वारा वर्ष 1994 95 के बजट मे की गई इस आशय की घेषणा कि 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे से 50 का पुनरूद्धार और पुनर्गठन किया जाएगा, के अनुसरण मे पुनर्गठन हेतु क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का अभिनिर्धारण करने के लिए डा एम सी भडारी, मुख्य महाप्रबधक, नाबार्ड की अध्यक्षता मे एक समिति नियुक्त की गई। यह देखते हुए कि उक्त समिति ने अपनी अतरिम रिपोर्ट में वित्तीय सुदृढता और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के आधार पर 50 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको का अभिनिर्धारण किया है, भारत सरकार ने 50 मे से 49 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको का पुनर्गठन करने के लिए समिति की सस्तुति को स्वीकार कर लिया है।

---

9 *कुरुक्षेत्र (अंग्रेजी सस्करण) जुलाई 1996, पृष्ठ 25*

7. सहकारी व क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के लिए पूँजी पर्यात्तता की शर्मा समिति की सस्तुति (जनवरी 1998) :-

सहकारी बैको व क्षेत्रीय ग्रामीण बैको (RRBs) के प्रति नाबार्ड (NABARD) की देख-रेख सम्बन्धी भूमिका की समीक्षा के लिए गठित शर्मा समिति ने इन बैको के लिए भी पूँजी पर्याप्तता मानक लागू करने की सस्तुति की है। रिजर्व बैक के भूतपूर्व एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर यू०के० शर्मा की अध्यक्षता मे इस समिति का गठन जनवरी 1998 मे किया गया। 27 अप्रैल 1998 को सौंपे गए अपने प्रतिवेदन मे समिति ने कहा है कि ग्रामीण साख का 60 प्रतिशत से अधिक भाग का वितरण इन्हीं सस्थाओ के द्वारा किया जाता है किन्तु परिसम्पत्तियो के ह्रास के कारण वर्तमान मे अधिकाश सहकारी बैंको के पास एक लाख व क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के पास पॉच लाख रूपये की न्यूनतम पूँजी भी नहीं है। समिति ने केन्द्र सरकार/राज्य सरकार/प्रवर्तक बैंक के माध्यम से इन बैंको के पुन पूँजीकरण की एक योजना भी प्रस्तुत की है। समिति ने सहकारी बैंको के लिए केन्द्र की 6,600 करोड रूपए की प्रस्तावित सहायता के वितरण मे तेजी लाने की सस्तुति की है ताकि मार्च 1999 तक यह बैंक 4 प्रतिशत पूँजी पर्याप्तता के स्तर को प्राप्त कर सके।

इन बैंकों के कार्यकलापों पर निगरानी के लिए शर्मा समिति ने नाबार्ड के अध्यक्ष की अध्यक्षता में एक स्वायत्त बोर्ड ऑफ सुपरविजन गठित करने की सस्तुति की है। सहकारी बैंकों की भूमि, भवनो व अन्य भू-सम्पत्तियों के लेखे-जोखो का

न्यिमित निरीक्षण करने की भी सस्तुति की है तथा यह भी कहा है कि प्राथमिक ऋण समितियों की निगरानी का जिम्मा नाबार्ड पर न छोडा जाए।

बैंक खातों का संचालन :-
[Operation of Bank Accounts]

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक भी अन्य व्यावसायिक बैको की भॉति विभिन्न खाते सचालित करता है। इनमे से मुख्य इस प्रकार है - साविध जमा खाता, बचत खाता, चालू खाता तथा आवर्ती जमा खाता आदि।

1. सावधि जमा खाता :-
[Fixed Deposit Account]

किसी निश्चित अवधि के लिए धन जमा करने के लिए खोले गये खाते को सावधि जमा खाता कहा जाता है। यह खाता प्राय ऐसे व्यक्तियो अथवा सस्थाओ द्वारा खोला जाता है जो अपने धन पर अधिक ब्याज कमाना चाहते है तथा किसी प्रकार की जोखिम भी नहीं लेना चाहते। इन खातो में जमा की अवधि कम से कम 45 दिन की होती है। प्राय इस प्रकार की जामाएँ तीन माह, छ माह, बारह माह, अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष, पॉच वर्ष की अवधि के लिए होती है। इस खाते में निश्चित अवधि से पहले न तो रूपया निकाला जाता है और न हीं जमा किया जा सकता है।

1. सावधि जमा खाते पर ब्याज की दर (Interest rates on Fixed Deposits)

	दिनाक 01.03.98 से प्रभावी	ब्याज की दर प्रतिवर्ष
1	30 दिन से 45 दिन तक	7 प्रतिशत
2	46 दिन से 179 दिन तक	9.5 प्रतिशत
3	180 दिन से 1 वर्ष तक	10 प्रतिशत
4	एक वर्ष से दो वर्ष तक	11 प्रतिशत
5	दो वर्ष से अधिक	12 प्रतिशत

2. बचत बैंक खाता (Savıng Bank Account):-

बचत बैंक खाते ऐसे बचतकर्ताओ के लिए होते है जिनकी बचत कम होती है। थोडी-थोडी बचत करके ऐसे बचतकर्ता अपने खाते मे जमा करते रहते है। इस खाते के माध्यम से अल्प बचत को बढावा दिया जाता है एक बचत बैंक खाता बैंक द्वारा अनुमोदित किसी भी व्यक्ति द्वारा खोला जा सकता है। इस खाते में ब्याज की दर 01 03 98 से 4 5 प्रतिशत है। इस खाते मे निर्धारित राशि से कम जमा होने पर अथवा निर्धारित सस्था से अधिक बार रूपया निकालने पर बैंक ग्राहक पर कुछ प्रभार लगा सकता है।

3. चालू खाता (Current Account):-

चालू खाता माग निक्षेपो के रूप में जाना जाता है। इस खाते मे जब तक ग्राहक का बैंक मे रूपया जमा होता है बैंक चैक द्वारा उसका भुगतान करने के लिए

बाध्य है। इस खाते मे खाताधारी जितनी बार चाहे रूपया जमा कर सकता है तथा निकाल सकता है। चालू खाते सामान्यात्या व्यापारियो, साझेदारी फर्मों औद्योगिक संस्थानो आदि द्वारा खोले जाते है। इस खाते की जमाओ पर किसी प्रकार का ब्याज नहीं दिया जाता। इस खात मे जमाकर्ता को अधिविकर्ष की सुविधा प्रदान की जाती है।

4. आवर्ती जमा खाता [Recurring Diposit Account] :-

आवर्ती जमा खाता बचत खाते तथा सावधि जमा खाते का मिला हुआ रूप है। यह खाता छोटी धनराशि स खाला जा सकता है परन्तु इसम नियमित रूप स मासिक एक निश्चित धनराशि जमा करना आवश्यक होता [illegible] रू() या उसके गुणित मे खोला जा सकता है। जितन रूपये स खाता खाला जात है उतनी ही राशि प्रतिमाह किस्त के रूप मे खाते मे जमा करनी आवश्यक होती है। यदि किस्त को अन्तिम तिथि तक जमा करने मे त्रुटि की जाती है तो अगल मास स अतिरिक्त राशि के प्रभार के साथ उसे जमा किया जा सकता है। आवर्ती खात विभिन्न अवधियो के लिए खोले जा सकते है। सामान्यतया कम से कम छ मास के लिए और अधिक से अधिक 10 वर्ष के लिए ऐसे खाते खोले जा सकते है। इस खाते मे ब्याज की दर बचत खाते मे कुछ ऊँची होती है।

तालिका 3.1— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की प्रगति

क्र० स०	अवधि की समाप्ति पर	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की सख्या	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के अन्तर्गत जिले	शाखाओ की सख्या
1	2	3	4	5
1	दिस० 1975	6	12	17
2	दिस० 1980	85	144	3279
3	दिस० 1985	188	333	12606
4	मार्च 1990	196	372	14443
5	मार्च 1991	196	381	14527
6	मार्च 1992	196	392	14539
7	मार्च 1993	196	398	14543
8	मार्च 1994	196	408	14542
9	मार्च 1995	196	425	14509
10	मार्च 1996	196	427	14497
11	जून 1997	196	435	14500

स्रोत - 1 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको से सबधित साख्यिकी, मार्च, 1996

2 बैंकिग साख्यिकी तिमाही पुस्तिका, जून, 1997

1. बैंकों का प्रसार:-

तालिका 3 1 से परिलक्षित होता है कि दिसम्बर 1975 म जहा केवल 6 ग्रामीण बैक स्थापित थे, 1985 मे यह सख्या बढकर 188 हो गयी। इस प्रकार 1975 स 1985 के बीच बैको की सख्या मे अत्यधिक वृद्धि हुइ आर ग्रामीण बेका के लिए यह एक स्वर्णिम काल था। परन्तु जून 1987 स जून 1997 तक बैका की सख्या 196 पर अपरिवर्तित रही। [10]वर्तमान मे दिल्ली सिक्किम, चडीगढ, अडमान आर निकोबार द्वीप समूह, दादरा और नगर हवेली, दमण और द्वीव, लक्षद्वीप और पाडीचेरी आदि राज्यो तथा केन्द्रशासित प्रदेशो को छोडकर अन्य सभी राज्यो मे बैक स्थापित किये गये है।

2. आच्छादित जिलों की सख्या:-

दिसम्बर 1975 मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के अन्तर्गत केवल 12 जिल थ जबकि मार्च 1996 मे इसकी सख्या बढकर 427 हो गयी। नूतन जिलो क सृजन क फलस्वरूप इनकी सख्या जून 1997 तक 435 हो गयी।

3 शाखा प्रसार :-

तालिका से स्पष्ट है कि दिस 1975 की अपेक्षा दिस 1980 म शाखाओ की सख्या मे भारी वृद्धि हुई । जून 1997 तक देश मे कुल 14500 शाखाए स्थापित हो चुकी है। जून 1997 तक सर्वाधिक शाखाए लगभग 86 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्यमान थी।

---

10. केलकर समिति की सिफारिशों के अनुसार ।

तालिका 3.2— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की जमा / ऋण प्रगति का विवरण

(धनराशि लाख रू० में)

क्र० स०	अवधि की समाप्ति पर	कुल जमा	कुल ऋण	ऋण-जमा अनुपात (प्रतिशत)
1	2	3	4	5
1	दिस० 1975	20	10	50
2	दिस० 1980	19983	24338	122
3	दिस० 1985	128582	140767	109
4	मार्च 1990	415052	355404	86
5	मार्च 1991	498924	360927	72
6	मार्च 1992	586783	409086	70
7	मार्च 1993	693813	462673	67
8	मार्च 1994	882651	525302	60
9	मार्च 1995	1115001	629096	56
10	मार्च 1996	1418790	750502	53
11	जून 1997	1732740	865241	50

स्रोत - 1 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको से सबधित साख्यिकी, मार्च, 1996

2 बैंकिग साख्यिकी तिमाही पुस्तिका, जून, 1997

जमा संग्रहण:-

इन बैको ने ग्रामीण जमा सग्रह मे प्रमुख भूमिका निभाई है। ये बैक अपने कमान क्षेत्र के अन्तर्गत निष्क्रिय पडी पूजी को सग्रह कर ग्रामीण विकास में विनियोजित किया। अनुमानत 75 प्रतिशत जमा इन बैको के अभाव मे किसी भी बैंक को प्राप्त नहीं होती और या तो बेकार पडी रहती है या अनुत्पादक कार्यो मे लगायी जाती है। दिस 1975 मे बैंक की कुल जमा धनराशि 20 लाख रू थी जबकि दिस 1980 में यह बढकर 19983 लाख रूपये हो गयी इस प्रकार पाच वर्षों मे रिकार्ड वृद्धि हुई। जून 1997 तक सकल राशि जमा राशि बढकर 1732740 लाख रूपये हो गयी जो कि 1980 की अपेक्षा 8571 07 प्रतिशत वद्धि दर्शाता है।

ऋण की राशि :-

तालिका 3 2 से स्पष्ट है कि बैंको के द्वारा दिये गये ऋणो मे भारी वृद्धि हुई है। दिसम्बर 1975 मे बैकों ने केवल 10 लाख ऋण वितरित किया, जबकि दिस 1980 मे 24338 लाख रू प्रदान किया जो कि एक रिकार्ड वृद्धि दर्शाता है। जून 1997 तक कुल ऋणों की राशि बढकर 865241 लाख रू हो गयी, इस प्रकार 1980 की अपेक्षा 1997 में ऋणों मे 3455 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

ऋण-जमा अनुपात :-

तालिका 3 2 से परिलक्षित होता है कि दिस 1975 मे ऋण जमा अनुपात 50 प्रतिशत था जो 1980 तथा 1985 में 122 तथा 109 प्रतिशत रहा। इससे स्पष्ट है कि बैंकों ने भारी मात्रा मे ऋण प्रदान किया। इसके पश्चात निरन्तर ऋण-जमा अनुपात मे कमी हुई तथा यह जून 1997 मे 50 प्रतिशत पर स्थिर हुआ।

तालिका 3.3— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की औसत प्रति बैंक/शाखा का जमा/ऋण प्रगति का विवरण

(धनराशि लाख रू० में)

क्रम संख्या	अवधि की समाप्ति पर	औसत प्रति क्षे० ग्रामीण बैंक जमा	औसत प्रति क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ऋण	औसत प्रति शाखा जमा	औसत प्रति शाखा ऋण
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**
1	दिस० 1975	3 33	1 67	1 18	0 59
2	दिस० 1980	235 09	286 33	6 09	7 42
3	दिस० 1985	683 95	748 76	10 20	11 17
4	मार्च 1990	2117 61	1813 29	28 74	24 61
5	मार्च 1991	2545 53	1841 46	34 34	24 85
6	मार्च 1992	2993 79	2087 17	40 36	28 14
7	मार्च 1993	3539 86	2360.58	47 71	31 81
8	मार्च 1994	4503.32	2680 11	60 70	36 12
9	मार्च 1995	5688 78	3209.09	76 85	43 36
10	मार्च 1996	7238 72	3829 09	97 87	51 77
11	जून 1997	8840 51	4414 49	119 49	59 67

स्रोत तालिका 1 और 2 पर आधारित

तालिका 3 3 से स्पष्ट है कि ग्रामीण बैको की औसत प्रति बैक जमा, तथा ऋण, और औसत प्रति शाखा जमा तथा ऋण मे निरन्तर वृद्धि हुई है। दिस 1975 मे प्रति क्षे ग्रामीण बैक जमा 3 33 लाख रू था जबकि जून 1997 मे बढकर यह 8840 51 लाख रू हो गया जो कि एक रिकार्ड वृद्धि 26538 78 प्रतिशत दर्शाता है। इसी प्रकार जून 1997 मे दिस० 1975 की अपेक्षा प्रति बैक ऋण, प्रति शाखा जमा तथा ऋण क्रमश 4414 49 लाख रुपये, 119 49 लाख रूपये तथा 59 67 लाख रूपये हो गया।

तालिका 3.4— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की कार्यालयों की संख्या/कुल जमा तथा ऋण का राज्य/क्षेत्र तथा जनसंख्या समूहवार वितरण जून 1997

(धनराशि लाख रू० में)

		ग्रामीण			अर्धशहरी			शहरी/महानगरीय			जोड		
क्रम संख्या	क्षेत्र / राज्य	कार्यालय	जमा-राशिया	ऋण	कार्यालय	जमा-राशियां	ऋण	कार्यालय	जमा-राशियां	ऋण	कार्यालय	जमा-राशिया	ऋण
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1.	उत्तरी क्षेत्र	1735	188136	74356	188	38816	12196	38	16169	4752	1961	243122	91304
	(I) राजस्थान							(1)	(20)	(122)			
2.	उत्तर पूर्वी क्षेत्र	555	43594	24454	75	19278	5836	23	9124	2269	653	71996	32559
3.	पूर्वी क्षेत्र	3148	312594	140115	377	79470	22753	50	16946	6342	3575	409009	169210
4.	मध्य क्षेत्र	4031	450659	184458	494	120279	35520	100	45087	14636	4625	616025	234614
	(i) उत्तर प्रदेश	2707	352239	138241	273	75610	22409	68 (3)	30953 (1262)	11056 (578)	3048	458803	171706
	(ii) मध्य प्रदेश							(1)	450	(79)			
5.	पश्चिमी क्षेत्र	859	66918	42191	129	17488	9287	22	9867	3194	1010	94273	54672
6.	दक्षिणी क्षेत्र	2091	183126	190460	510	83337	76698	75	31852	15724	2676	298315	282882
	अखिल भारत	**12419**	**1245027**	**656034**	**1773**	**358668**	**162290**	**308** **(5)**	**129045** **(2332)**	**46917** **(779)**	**14500**	**1732740**	**865241**

टिप्पणी कोष्ठको मे दिये गये आकडे महानगरीय केन्द्रो से सबधित है।

स्रोत · बैंकिग साख्यिकी तिमाही पुस्तिका जून 1997

तालिका 3 4 से द्रष्टव्य है कि ग्रामीण बैको की सर्वाधिक शाखाए जून 1997 मे 12419 ग्रामीण क्षेत्रो मे स्थित थी जो कुल का लगभाग 86 प्रतिशत थी। जून 1997 मे देश मे कुल शाखाओ की सख्या 14500 थी। इसी प्रकार कुल जमा का लगभग 72 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रो से सम्बन्धित था। तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक शाखाएं 4031 मध्यक्षेत्र (ग्रामीण क्षेत्र) मे स्थित है और उनमे से 2707 उत्तर प्रदेश में स्थित है। इसी प्रकार सर्वाधिक कम शाखाए 555 उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (ग्रामीण क्षेत्र) मे स्थित है। सर्वाधिक ऋण ग्रामीण क्षेत्रो मे प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की जमा तथा ऋण का बार चार्ट

जून – 1997
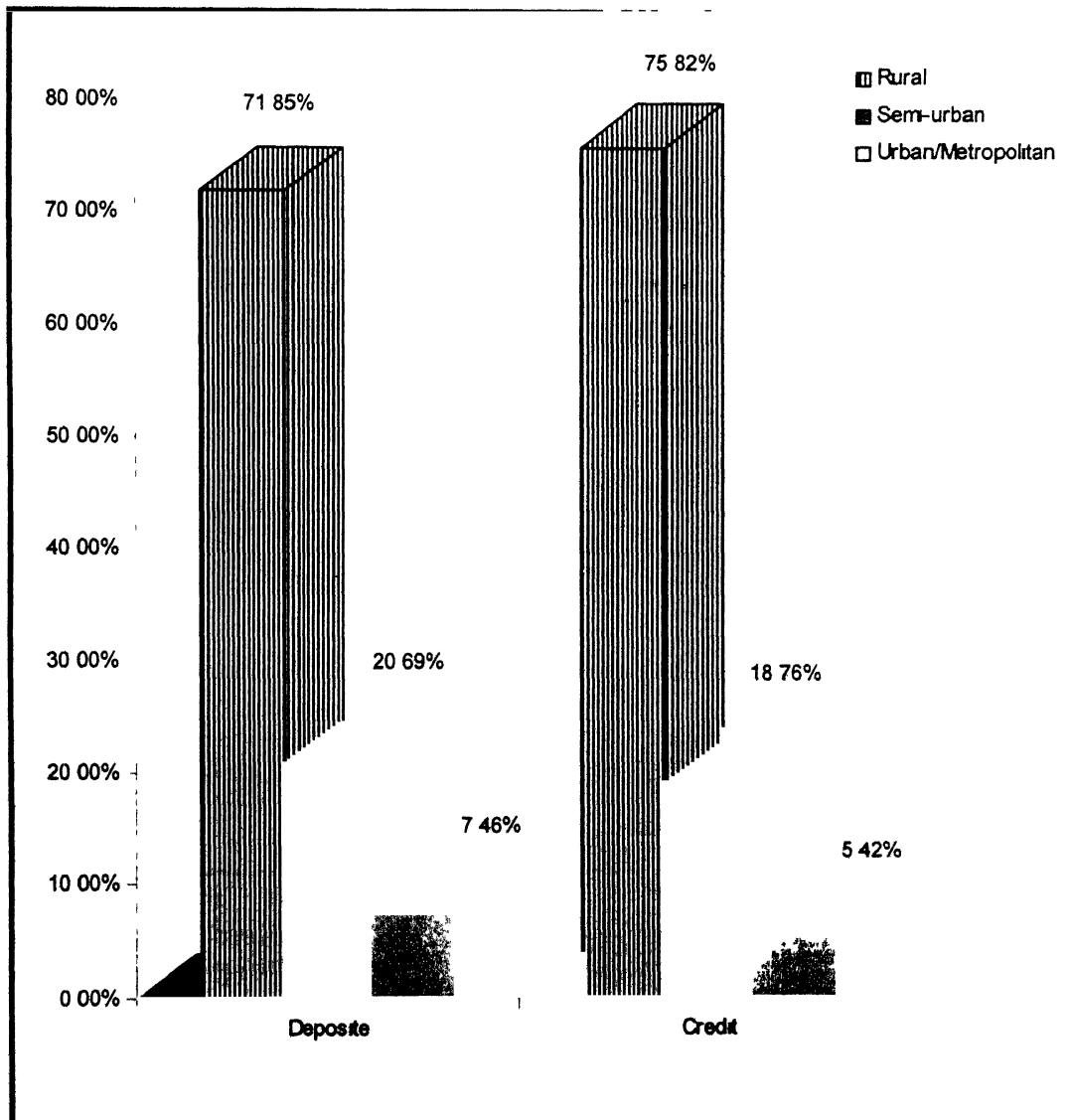
तालिका 3.5— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, उनकी शाखाओं, जमा, ऋण इत्यादि की राज्यवार विवरण मार्च 1996 की समाप्ति पर

(धनराशि लाख रू० में)

राज्य/का नाम	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की संख्या	क्षे०ग्रामीण बैंकों के अतर्गत जिले	शाखाओं की सख्या	कुल जमा	कुल ऋण	ऋण- जमा अनुपात (प्रतिशत)	नाबार्ड पुनर्वित्त
1	2	3	4	5	6	7	8
हरियाणा	4	15	291	48590 14	20974 62	43	5127 00
हिमाचल प्रदेश	2	4	129	17327 50	4748 23	27	1113 56
जम्मू-कश्मीर	3	12	273	20125 18	5139 73	26	663 43
पजाब	5	13	201	22895 32	11750 84	51	3400 32
राजस्थान	14	31	1065	89168 46	36801 97	41	8309 65
अरूणाचल प्रदेश	1	5	19	1223 60	421.30	34	115 45
असम	5	23	404	35995 03	18475 52	51	3518 76
मणिपुर	1	8	29	821 31	455 05	55	181 73
मेघालय	1	4	51	6223 10	1186 88	19	434 56
मिजौरम	1	3	54	2833 12	1009 25	36	306 39
नागालैंड	1	7	8	244 58	84 98	35	1218 00
त्रिपुरा	1	3	90	12203 50	9576 48	78	2094 94

क्रमश

राज्य/का नाम	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की सख्या	क्षे०ग्रामीण बैंकों के अंतर्गत जिले	शाखाओं की संख्या	कुल जमा	कुल ऋण	ऋण- जमा अनुपात (प्रतिशत)	नाबार्ड पुनर्वित्त
1	2	3	4	5	6	7	8
बिहार	22	50	1885	167050 80	66360 13	40	7937 30
उड़ीसा	9	29	819	60488 00	39008 49	64	13730 20
पश्चिम बगाल	9	19	864	96975 82	46138 97	48	9284 56
मध्य प्रदेश	24	44	1593	121813 44	53270 89	44	8876 50
उत्तर प्रदेश	40	66	3035	380963 48	156056.15	41	46019 49
गुजरात	9	17	425	31084 93	17302 09	56	6446 71
महाराष्ट्र	10	17	588	46573 15	26849 90	58	7564 54
आन्ध्र प्रदेश	16	23	1123	116122 26	96312 75	83	29879 65
कर्नाटक	13	20	1074	96742 80	89072 76	92	34252 54
केरल	2	6	269	26750 00	34918 00	131	13743 00
तमिलनाडू	3	8	208	16614 80	14587 56	88	3669 00
कुल योग	**196**	**427**	**14497**	**1418790.32**	**750502.54**	**53**	**206681.49**

स्रोत क्षेत्रीय ग्रामीण बैको से सबधित साख्यिकी मार्च 1996

तालिका 3 5 के अनुसार क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की सर्वाधिक सख्या 40 उत्तर प्रदेश मे स्थित है जो'कि कुल का 20 4 प्रतिशत है। इसके पश्चात क्रमश मध्य प्रदेश मे 24, तथा बिहार मे 22 है। अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैड तथा त्रिपुरा मे न्यूनतम एक-एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित है। सर्वाधिक सेवित जिलो की सख्या उत्तर प्रदेश मे 66 है। कुल जमा तथा ऋण की सर्वाधिक राशि 380963 48 तथा 156056 15 लाख रू० उत्तर प्रदेश मे है। ऋण-जमा अनुपात सर्वाधिक 131 प्रतिशत केरल मे तथा न्यूनतम 19 प्रतिशत मेघालय मे है। नाबार्ड द्वारा मार्च 1996 तक उत्तर प्रदेश को सर्वाधिक 46019 49 लाख रू पुनर्वित्त सहायता प्रदान की गयी।

तालिका 3.6— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की जमा, ऋण, प्रति नियुक्त स्टाफ इत्यादि का प्रायोजक बैंकवार विवरण मार्च 1996 की समाप्ति पर

(धनराशि लाख रू० में)

क्र० सं०	प्रायोजक बैंक का नाम	क्षे० ग्रा० बैंक की संख्या	क्षे० ग्रा० बैंक के अंतर्गत जिले	शाखाओं की सख्या	कुल जमा	बकाया ऋण प्रयोजित क्षे० ग्रा० बैंक	प्रायोजक बैंकों से पुनर्वित्त	प्रयोजित क्षे० ग्रा० बैंक के बकाया ऋण में प्रायोजक बैंकों के वित्तपोषण का प्रतिशत	प्रायोजक बैंकों द्वारा नियुक्त स्टाफ/अधिकारी अन्य		योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1.	इलाहाबाद बैंक	7	10	504	56867 64	21886.15	583 83	2 67	19	—	19
2	आन्ध्र बैंक	3	5	153	12908 09	10195 65	1404 39	13 77	14	—	14
3.	बैंक ऑफ बड़ौदा	19	31	1249	119844 32	58443 72	1423 82	2 44	26	—	26
4	बैंक ऑफ इडिया	16	30	991	94414 67	33434 10	1121 87	3 36	53	—	53
5	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	3	8	312	28306 39	16787 89	1314 81	7 83	6	—	6
6	बैंक ऑफ राजस्थान लि०	1	2	61	4451 00	1519 00	32 00	2 11	3	—	3
7	केनरा बैंक	8	12	693	69310 75	60580 18	6442 70	10 63	20	—	20
8	कॉरपोरेशन बैंक	1	2	44	3527 45	3342 90	609 90	18 24	3	—	3
9	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इडिया	23	43	1791	135744 97	63432 72	869 40	1 37	29	—	29

क्रमश·

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10.	देना बैंक	4	7	253	21805 81	11212 38	321 62	2 87	8	—	8
11	इडियन बैंक	4	5	145	12468 26	11506 13	2338 51	20.32	14	—	14
12	इंडियन ओवरसीज बैंक	3	9	309	24698 72	18728 62	2470 42	13 19	8	—	8
13.	जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक	2	6	188	16567 18	3567 73	88 25	2 47	6	—	6
14.	पजाव नेशनल बैंक	19	45	1273	145019 12	62215 17	1491 22	2 40	47	—	47
15.	पजाव एण्ड सिन्ध बैंक	1	3	22	3127 74	1576 00	50 42	3 20	6	—	6
16.	सिंडिकेट बैंक	10	20	1039	135759 22	119399 75	12033 89	10 08	24	—	24
17	स्टेट बैंक ऑफ वि० ए० जयपुर	3	5	20	19932 73	5341 91	108 89	2 04	12	—	12
18	स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद	4	4	164	16973 27	12846 39	1258 49	9 80	15	—	15
19	भारतीय स्टेट बैंक	30	84	237	210448.34	97027 48	6364 94	6 56	139	—	139
20	स्टेट बैंक ऑफ इंदौर	1	2	23	1804 00	871 18	0 00	0 00	3	—	3
21.	स्टेट बैंक ऑफ मैसूर	2	5	202	15746 38	11765 60	1022 68	8 69	12	—	12
22.	बैंक ऑफ पटियाला	1	3	41	3471 66	2434 78	244 55	10 04	6	—	6
23.	बैंक ऑफ सौराष्ट्र	3	6	136	8436 70	3909 95	513 42	13 13	13	—	13

क्रमश·

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
24.	यूनियन बैंक ऑफ इडिया	4	9	403	69459 84	23109 57	267.00	1 16	15	—	15
25.	यूनाइटेड बैंक ऑफ इडिया	11	43	1019	107500 64	56937 18	939 96	1 65	17	—	17
26.	यूको बैंक	11	25	802	74702 15	35006 89	507 51	1 45	36	—	36
27	यू० पी० स्टेट को० ऑ० बैंक लि०	1	2	69	3997 00	2377 00	50 00	2 10	0	—	0
28.	विजया बैंक	1	1	25	1496 28	1046 52	34 10	3 26	2	—	2
	कुल योग	196	427	14497	1418790 32	750502 54	43908 59	5 85	556	—	556

स्रोत · क्षेत्रीय ग्रामीण बैको से सबधित साख्यिकी मार्च 1996

तालिका 3 6 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 30 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की प्रायोजक बैंक भारतीय स्टेट बैंक है जिसके अन्तर्गत 84 जिले तथा 237 शाखाए आती है। सर्वाधिक शाखाए 1791 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया के अन्तर्गत आती है। सबसे कम 20 शाखा स्टेट बैक ऑफ वि ए जयपुर मे आती है। इसकी एक प्रमुख विशेषता यह है कि एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की प्रायोजक बैंक यू पी स्टेट को आ बैंक लि है जिसके अन्तर्गत 2 जिले तथा 69 शाखाए आती है तथा यू पी.स्टेट को ऑ बैंक लि ने अपना कोई भी स्टाफ क्षे ग्रा बैं मे नियुक्त नहीं किया है। प्रायोजित क्षे ग्रा बैक के बकाया ऋण मे प्रायोजक बैक के वित्त पोषण का सर्वाधिक 20 32 प्रतिशत इडियन बैंक का है।

तालिका 3.7— क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की जमाओं का विभिन्न खातों के अनुसार क्रमवार प्रगति विवरण

(धनराशि लाख रू० में)

क्र० स०	वर्ष	चालू		बचत		सावधि		कुल	
		खातों की स०	धनराशि	खातों की स०	धनराशि	खातों की स०	धनराशि	खातों की स०	धनराशि
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	जून 1987	309908 (1.5)	10851.22 (5 7)	16898269 (81 9)	101870 50 (53 4)	3416078 (16 6)	78214 98 (40 9)	20624255 (100)	190936 70 (100)
2.	मार्च 1990	592445 (2 2)	33493 68 (8 3)	22618724 (81 6)	206647 63 (51 1)	4496672 (16 20	163953 52 (40 6)	27707841 (100)	404094 83 (100)
3	मार्च 1991	730532 (2 3)	33302 55 (6 7)	25734180 (79 9)	261110 62 (52 3)	5713461 (17 8)	204509 85 (41 0)	32178173 (100)	498923 02 (100)
4	मार्च 1993	786075 (2 2)	37239 41 (5 4)	28861571 (79 7)	300821 77 (43.4)	6576598 (18 1)	355752 39 (51 2)	36224244 (100)	693813 57 (100)
5	मार्च 1994	797531 (2 2)	48368 92 (5 5)	29026640 (78 8)	394847.60 (44 7)	7002206 (19 0)	439434 48 (49 8)	36826377 (100)	882651 00 (100)
6	मार्च 1995	841792 (2 2)	59992 93 (5 4)	29712044 (79 4)	518685 65 (46 5)	6884033 (18 4)	536322 25 (48 1)	37437869 (100)	1115000 83 (100)
7	मार्च 1996	971423 (2 5)	73990 91 (5 2)	30234794 (77 8)	617924 81 (43 6)	7651499 (19 7)	726874 60 (51 2)	38857716 (100)	1418790 32 (100)

स्रोत क्षेत्रीय ग्रामीण बैको से सबधित साख्यिकी (1987, 1990, 1991, 1993 1994 1995तथा 1996)

नोट · कोष्ठक मे दिये गये ऑकडे कुल का प्रतिशत है।

तालिका 3 7 से परिलक्षित होता है कि सर्वाधिक खातो की सख्या बचत खातो के अन्तर्गत विद्यमान है इसके पश्चात सावधि खातो की सख्या हैं । सबके कम चालू खातो की सख्या है। 1987, 1990 तथा 1991 मे बचत खाते मे जमा धनराधि सावधि खाते से अधिक है तथा 1993 से 1996 तक सावधि खाते मे जमा धनराधि बचत खाते मे जमा धनराशि की अपेक्षा अधिक है। मार्च 1996 की समाप्ति पर कुल जमा धनराशि 1418790 32 लाख रू० थी। उनमे से सर्वाधिक 51 2 प्रतिशत अर्थात 726874 60 लाख रू सावधि खाते के अन्तर्गत है। तालिका से स्पष्ट है कि जमाओ मे निरन्तर वृद्धि हुई है।

तालिका 3.8— उत्तर प्रदेश में स्थापित क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की जमा प्रगति का क्रमवार विवरण

(धनराशि लाख रू० में)

क्र० सं०	ग्रामीण बैंक	स्थापना दिवस	मार्च 1990	मार्च 1991	मार्च 1993	मार्च 1994	मार्च 1995	मार्च 1996
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	प्रथमा बैक	02-10-75	7486 00	9457 90	13018 64	16578 05	20608 00	25576 00
				(26 3)	(37 6)	(27 3)	(24 3)	(24 1)
2	गोरखपुर क्षे० ग्रा० बैंक	02-10-75	14611 64	17879 71	22575 91	27054 17	30450.00	35317 00
				(22 4)	(26 3)	(19 8)	(12 6)	(16 0)
3	सयुक्त क्षे० ग्रा० बैंक	06-01-76	9801 71	12879 90	17908 38	22480 72	26912 87	33404 00
				(31 4)	(39 0)	(25 5)	(19 7)	(24 1)
4	बाराबकी ग्रा० बैक	27-03-76	3914 29	4955 08	6498 00	8098 00	9959 54	12541 00
				(26 6)	(31 1)	(24 6)	(23 0)	(26 0)
5	रायबरेली क्षे० ग्रा० बैक	29-03-76	3500 85	4065 49	5379 52	6446 87	7404 00	9201 47
				(16 1)	(32 3)	(19 8)	(14 8)	(24 3)
6	फर्रूखाबाद ग्रा० बैक	29-03-76	3495 50	5259 00	6337 00	7913 17	9607 61	12436 00
				(50 5)	(20 5)	(24 9)	(21 4)	(29 4)

क्रमश

1	2	3	4	5	6	7	8	9
7.	भागीरथ ग्रा० बैक	19-09-76	5431 22	7060 00	10132 53	12069 36	14219 01	17563 80
				(30 0)	(43 5)	(19 1)	(17 8)	(23 5)
8	बलिया क्षे० ग्रा० बैक	25-12-76	4304 11	5098 34	6540 23	7869 18	9297 24	11500 22
				(18 5)	(28 3)	(20 3)	(18 1)	(23 7)
9.	सुल्तानपुर क्षे० ग्रा० बैक	08-02-77	5362 30	6219 57	8121 77	10299 24	12051 08	14682 00
				(16 0)	(30 6)	(26 8)	(17 0)	(21 8)
10	अवध ग्रा० बैक	07-06-77	5886 00	8066 00	9869 00	12442 00	14374 07	17531 00
				(37 0)	(22 4)	(26 1)	(15 5)	(22 0)
11.	कानपुर क्षे० ग्रा० बैक	27-02-80	3200 72	4175 92	6273 52	8107 81	9968 00	13122 00
				(30 5)	(50 2)	(29 2)	(23 0)	(31 6)
12	श्रावस्ती ग्रा० बैक	04-03-80	2614 00	3313 25	4859 98	6260 20	7106 99	9457 07
				(26 8)	(46 7)	(28 8)	(13 5)	(33 1)
13	इटावा क्षे० ग्रा० बैक	18-03-80	1664 00	2102 40	2590 07	3247 90	3921 00	4564 00
				(26 3)	(23 2)	(25 4)	(20 7)	(16 4)
14	किसान ग्रा० बैक	19-05-80	929 44	1170 35	1731 62	2109 02	2785 86	3832 97
				(25 9)	(48 0)	(21 8)	(32 1)	(37 6)
15	क्षेत्रीय किसान ग्रा० बैक	20-05-80	1214 09	1618 52	1930 22	2455 09	3192 36	3997 00
				(33 3)	(19 3)	(27 2)	(30 0)	(25 2)

क्रमश

1	2	3	4	5	6	7	8	9
16	काशी ग्रा० बैंक	28-07-80	2616 82	3195 88	5086.66	6615 89	8214 49	11088.35
				(22.1)	(59 2)	(30 1)	(24 2)	(35 0)
17	बस्ती ग्रा० बैंक	01-08-80	3800 00	4575 00	6107 00	7909 00	9563 00	11204 00
				(20.4)	(33 5)	(29 5)	(20 9)	(17 2)
18	इलाहाबाद क्षे० ग्रा० बैंक	23-08-80	3102.00	4173 00	5703 00	7158 00	8981 00	11007 00
				(34 5)	(36 7)	(25 5)	(25 5)	(22 6)
19	प्रतापगढ क्षे० ग्रा० बैंक	25-08-80	2314 28	3009 96	4307 83	5553 60	6720 30	8724 08
				(30 1)	(43 1)	(29 0)	(21 0)	(30 0)
20	फैजाबाद क्षे० ग्रा० बैंक	05-09-80	2074 80	2824 62	4371 10	5532 02	6641 24	8580 10
				(36 1)	(54 8)	(26 6)	(20 1)	(29 2)
21	फतेहपुर क्षे० ग्रा० बैंक	06-09-80	1213 41	1841 42	2290 42	2850 99	3491 99	4598 00
				(51 8)	(24 4)	(24 5)	(22 5)	(31 7)
22	बरेली क्षे० ग्रा० बैंक	27-09-80	1958 00	2639 77	3579 35	4298 65	5414 50	6435 62
				(34 8)	(35 6)	(20 1)	(26 0)	(18 9)
23	देवीपाटन क्षे० ग्रा० बैंक	17-01-81	1978 48	2433 99	3367 17	4014 10	5820 29	8539 00
				(23 0)	(38 3)	(19 2)	(45 0)	(46 7)
24	अलीगढ क्षे० ग्रा० बैंक	22-03-81	2307 98	3035 38	4410 65	5996 72	8469 95	11961 80
				(31 5)	(45 3)	(36 0)	(41 2)	(41 2)

क्रमश .

1	2	3	4	5	6	7	8	9
25.	तुलसी ग्रा० बैक	23-03-81	2122 20	2583.76	3501.16	3964 10	5350 55	7325 55
				(21 7)	(35 5)	(13 2)	(35 0)	(37 0)
26.	एटा ग्रा० बैक	29-03-81	1253 64	1592 99	1993 84	2838 80	3993 88	5608 76
				(27 1)	(25 2)	(42 4)	(40 7)	(40 4)
27.	गोमती ग्रा० बैंक	30-03-81	2960 36	3795 29	5957 47	7649 33	9424 11	12926 74
				(28 2)	(57 0)	(28 4)	(23 2)	(37 2)
28.	छत्रसाल ग्रा० बैक	30-03-82	1610 03	2554 73	3255 14	4397 93	5779 80	6861 31
				(58 7)	(27 4)	(35 1)	(31 4)	(18 7)
29.	रानी लक्ष्मीबाई क्षे० ग्रा० बैक	31-03-82	974 00	1230 00	1648 62	1963 63	2583 00	3212 92
				(26 3)	(34 0)	(19 1)	(31 5)	(24 4)
30	विदोर ग्रा० बैक	18-01-83	874 81	1124 63	1582 36	2400 81	3205 30	3359 44
				(28 6)	(40 7)	(51 7)	(33 5)	(4 8)
31	शाहजहॉपुर क्षे० ग्रा० बैक	24-03-83	692 50	933 26	1215 59	1581 35	2100 23	2821 09
				(34 8)	(30 3)	(30 1)	(32 8)	(34 3)
32	नैनीताल-अल्मोडा क्षे० ग्रा० बैक	26-03-83	789 71	1014 06	1822 88	2327 97	2991 08	4090 75
				(28 4)	(79 8)	(27 7)	(28 5)	(36 8)
33	विंध्यवासिनी ग्रा० बैंक	30-03-83	1467 64	2191 53	2958 39	3795 05	4339 00	5350 00
				(49 3)	(35 0)	(28 3)	(14 3)	(23 3)

क्रमश

1	2	3	4	5	6	7	8	9
34	सरयू ग्रा० बैंक	09-08-83	1289 84	1753 57	2495 84	3712 59	4334 08	4865 36
				(36 0)	(42 3)	(48 8)	(16 7)	(12 3)
35	जमना ग्रा० बैंक	02-12-83	1087 43	1368 60	1430 54	2087 75	2955 00	4733 13
				(25 9)	(4 5)	(45 9)	(41 5)	(60 2)
36	मुजफ्फरनगर क्षे० ग्रा० बैंक	27-07-84	616 55	687 87	1090 26	1464 32	1959 97	2480 14
				(11 6)	(58 5)	(34 3)	(33 8)	(26 5)
37.	पिथौरागढ क्षे० ग्रा० बैक	27-03-85	253 07	425 41	819 14	1276 87	2016 46	3049 54
				(68 1)	(92 6)	(55 9)	(57 9)	(51 2)
38.	गगा-यमुना ग्रा० बैंक	29-03-85	516 06	633 33	1299 45	1778 17	2236 88	2822 00
				(22.7)	(105 2)	(36 8)	(25 8)	(26 2)
39	अलकनदा ग्रा० बैक	31-08-85	370 73	697 84	1243 25	1658 89	2044 44	2821 59
				(88 2)	(78 2)	(33 4)	(23 2)	(38 0)
40.	हिडन ग्रा० बैक	28-03-87	297 09	443 21	843 74	1117 38	1395 73	1771 68
				(49 2)	(90 4)	(32 4)	(24 9)	(26 9)
	उत्तर प्रदेश		111959 30	144080 51	196147 24	247374 69	301883 90	380963 48
				(28 7)	(36 1)	(26.1)	(22 0)	(26 2)

टिप्पणी कोष्ठको मे दी गयी राशि जमाओ का विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।

स्रोत क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको से सम्बन्धित सांख्यिकी (1990 1991 1993, 1994 1995 तथा 1996)

तालिका 3-8 से परिलक्षित होता है कि उत्तर प्रदेश मे स्थित सभी क्षेत्रीय ग्रामीण बेको की जमाओ मे निरन्तर वृद्धि हुई है। प्रदेश की 40 बैंको मे से मार्च 1996 के अन्त मे सर्वाधिक जमा 35317 00 लाख रूपये गोरखपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का रहा और उसी समय प्रथमा बैक का जमा 25576 लाख रूपये रहा है, जबकि इन दोनो बैको का स्थापना वर्ष अक्टूबर 1975 एक ही दिन का है। इसी प्रकार 1976 मे 6 बैक स्थापित किये गय तथा उनमे सर्वाधिक जमा मार्च 1996 के अन्त मे 33404 लाख रूपये सयुक्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का रहा। 1977 मे प्रदेश मे दो बैंक स्थापित किये गये और उनमे से सर्वाधिक जमा 17531 लाख रूपये, मार्च 1996 के अन्त मे अवध ग्रामीण बैक का रहा। 1980 मे प्रदेश मे 12 बैक स्थापित किये गये और मार्च 1996 की समाप्ति पर सर्वाधिक जमा 13122 लाख रूपये कानपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का रहा। 1981 मे 5 ग्रामीण बैक स्थापित किये गये और इनमे मार्च 1996 की समाप्ति पर सर्वाधिक जमा 12926 74 लाख रूपये गोमती ग्रामीण बैंक का रहा। 1982 मे 2 ग्रामीण बैक स्थापित किये गये और मार्च 1996 की समाप्ति पर सर्वाधिक जमा 6861 31 लाख रूपये छत्रशाल ग्रामीण बैंक का रहा। 1983 की अवधि मे प्रदेश मे 6 ग्रामीण बैंक स्थापित किये गये और मार्च 1996 की समाप्ति पर सर्वाधिक जमा 5350 लाख रूपये विन्ध्यवासिनी ग्रामीण बैंक का रहा। 1984 में एक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किया गया और उसका जमा मार्च 1996 की समाप्ति पर 2480 14

लाख रूपये रहा। इसी प्रकार 1985 मे 3 तथा 1987 मे एक ग्रामीण बैक स्थापित किये गये और मार्च 1996 की समाप्ति पर सर्वाधिक जमा क्रमश 3049 54 लाख रूपये पिथौरा गढ क्षेत्रीय ग्रामीण बैक का और 1771 68 लाख रूपये हिन्डन ग्रामीण बैंक का रहा। यदि विगत वर्ष पर जमा का प्रतिशत देखा जाय तो उसमे निरन्तर वृद्धि हुई है।

तालिका 3-9 — क्षेत्रीय ग्रामीण बैकों के विभिन्न श्रेणी के स्टाफ का विवरण

वर्ष	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के स्टाफ						प्रयोजक बैक के स्टाफ		
(मार्च की समाप्ति पर)	अधिकारी Officers	क्लर्क Clerk	अन्य Others	कुल Total	जिनमे से अनुसूचित जाति/जनजाति	कुल प्रशिक्षत स्टाफ	अधिकारी	क्लर्क	कुल
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
1991	29621	25275	12265	67161	11593	50038	698	-	698
1993	29658	25674	14838	70170	13371	52676	673	-	673
1994	29540	25901	15163	70604	13250	53790	545	-	545
1995	29453	25911	15484	70848	13194	51788	500	-	500
1996	29563	25867	15545	70975	13475	53494	556	-	556

स्रोत - क्षेत्रीय ग्रामीण बैको से सबधित साख्यिकी (1991, 1993, 1994, 1995 तथा 1996)

तालिका 3 9 से स्पष्ट है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको के स्टाफ मे निरन्तर वृद्धि हुई है। 1991 मे कुल कर्मचारियो की सख्या 67161 थी जबकि मार्च 1996 की समाप्ति पर बढकर 70975 हो गयी इस प्रकार 1991 की तुलना मे 1996 मे 5 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अनुसूचित जाति/जनजाति की सख्या जहॉ 1991 मे 11593 थी वही 1996 मे बढकर 13475 हो गयी । इसी प्रकार कुल पशिक्षित स्टाफ 1996 मे 53494 तथा प्रायोजक बैक के स्टाफ 556 थे ।

तालिका 3 10 लाभ/हानि की स्थिति

(धनराशि लाख रूपये में)

वर्ष (मार्च की समाप्ति पर)	लाभ अर्जित करने वाले बैकों की सख्या	हानि अर्जित करने वाले बैको की सख्या	धनराशि (लाभ/हानि)
1	2	3	4
1993	24	172	(-) 31401 76
1994	23	173	(-) 36695 52
1995	40	156	(-) 39425 55
1996	44	152	(-) 42558 31

स्रोत-नाबार्ड

तालिका 3 10 से स्पष्ट है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैक निरन्तर घाटे पर चल रहे है। 1993 मे घाटे की सकल राशि 31401 76 लाख रूपये थी जबकि 1996 मे 42558 31 लाख रूपये हो गयी। 1993 की तुलना मे 1996 मे घाटे मे 35 53 प्रनिशत की वृद्धि हुई। 1994 मे सर्वाधिक 173 बैक हानि पर थे जबकि 1995 मे 156, 1996 मे 152 बैक हानि पर थे। हानि पर चलने वाले बैंको की सख्या मे कमी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको मे सुधारात्मक कदमो के कारण सम्भव हुआ है। 1993 मे जहाँ 24 बैंक लाभ अर्जित किये वहीं 1996 में 44 बैंक लाभ अर्जित किए, इस प्रकार लाभ अर्जित करने वाले बैकों की सख्या मे 83.33 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

Table 3-11 Important Banking Indicators - RRBS

	Out standing as on		Variations @	
	March 31, 1995	March 29, 1996	1994-95	1995-96
1	2	3	4	5
No of Reporting Banks -	196	196	-	-
Aggregate Deposits -	10848	13370	2803	2522
			(34 8)	(23 2)
Demand Deposit -	2115	2475	721	360
			(51 7)	(17 0)
Time Deposit -	8733	10895	2082	2162
			(31 3)	(24 8)
Borrowing from R.B.I. -				
Bank Credit -	6201	7289	1177	1088
			(23 4)	(17 5)
Investments -	834	1826	743	992
			(816 5)	(118 9)
Government Securities -	459	842	420	383
			(1076 9)	(83 4)
Other Approved Securities -	375	983	323	608
			(621 2)	(162 1)
Cash in hand -	216	177	130	-39
			(151 2)	(-18 1)
Credit-Deposit ratio (%) -	57 2	54 5	42 0	43 1

@ Data are based on last reporting friday of march

Source Report on currency and finance 1995-96 Value II

तालिका 3 11 से परिलक्षित होता है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैक की सख्या मे 1995 ओर 1996 मे कोई वृद्धि नहीं हुई। सकल जमा मे 1995 मे 1994 की तुलना में 34 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा 1996 मे 1995 की तुलना मे 23 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। तालिका से स्पष्ट है कि मॉग जमा और सावधि जमा मे वृद्धि हुई है। बैंक ऋण 1995 मे 6201 करोड रूपया था जबकि 1996 मे 7289 करोड रूपये हो गया, इस प्रकार 17 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। विनियोगो मे भी 1995 की अपेक्षा 118 9 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा इसकी राशि 1826 करोड रूपये हो गयी।

सरकारी तथा अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियो मे भी वृद्धि हुई है। हस्तगत रोकड मे 1996 मे कमी हुई तथा यह 216 करोड रूपये से 177 करोड रूपये हो गयी।

अध्याय : 4

इलाहाबाद जनपद : आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक समीक्षा

उत्तर प्रदेश:

भौगोलिक स्थिति (उ०प्र०):-

उत्तर प्रदेश भारत का एक सीमान्त प्रदेश है। जो 25° से 31° उत्तरी अक्षाश तथा 77′ से 84° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसके उत्तर मे हिमालय पर्वत श्रेणी से लगी हुई तिब्बत एव नेपाल की सीमाये, दक्षिण मे मध्य प्रदेश, पूर्व मे बिहार तथा पश्चिम मे हरियाणा, दिल्ली एव राजस्थान की सीमाए मिलती है। इस प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 294 हजार वर्ग किमी० है, जो भारत के सम्पूर्ण भौगोलिक क्षेत्रफल का 8 9 प्रतिशत है। क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से मध्यप्रदेश, राजस्थान एव महाराष्ट्र का अनुगामी होते हुए भारत मे इसका चौथा स्थान है।

प्रशासनिक ढॉचा (उ०प्र०):-

कुशल एव सुगम प्रशासनिक दृष्टिकोण से प्रदेश को 19 मण्डल एव 83 जिलों मे विभाजित किया गया है। भौगोलिक स्थलाकृति, जलवायु एव प्राकृतिक संसाधनों की समरूपता के आधार पर सन्तुलित नियोजित विकास हेतु प्रदेश को पॉच आर्थिक क्षेत्रों यथा पर्वतीय, पश्चिमी, केन्द्रीय, पूर्वी तथा बुन्देल खण्ड क्षेत्र में विभाजित किया गया है।

इलाहाबाद जनपद का संक्षिप्त परिचयः-

इलाहाबाद जनपद (विभाजन से पूर्व) जो कि हमारे अध्ययन का क्षेत्र है पूर्वी-क्षेत्र से सम्बन्धित हैं।

1. स्थिति एवं भौतिक विशेषताएः-

इलाहाबाद मण्डल के सुदूरपूर्व स्थित यह जनपद 24 47" से 27 47" उत्तरी अक्षाश एव 81 19" से 82.21" पूर्वी देशान्तर के बीच मे बसा हुआ है। जनपद इलाहाबाद के पूर्व मे वाराणसी, पूर्वोत्तर मे जौनपुर, पश्चिम मे फतेहपुर, दक्षिण मे बॉदा, उत्तर मे प्रतापगढ, दक्षिण-पूर्व मे मिर्जापुर तथा दक्षिण मे मध्य प्रदेश का रीवॉ जनपद स्थित है। यह पूर्व से पश्चिम 117 किमी० तथा उत्तर से दक्षिंण 109 किमी० तक फैला हुआ है। इसका भौगोलिक क्षेत्र 7261 वर्ग किमी० है।

(अ) भौगोलिक संरचनाः-

जनपद प्राकृतिक विषमताओं के अनुसार 3 विभिन्न उपखण्डो में विभाजित है जिन्हे गगा एव यमुना नदिया विभाजित करती हैं। ये उपखण्ड गगापार, द्वाबा एव यमुनापार क्षेत्र के नाम से जाने जाते हैं। जनपद मे कुल 9 तहसीलो एव 28 विकास खण्डो के अन्तर्गत कुल 3945 ग्राम है, जिनमे आबाद ग्रामो की सख्या 3539 है। प्रत्येक उपखण्ड मे तीन तहसीले स्थित है। गगापार एव द्वाबा दोनों समतल भू-भाग है। परन्तु यमुनापार क्षेत्र सबसे ऊँचे धरातल पर बसा हुआ है। गगापार एव द्वाबा का ब्लाक तो प्रायः एक सा ही है, परन्तु यमुनापार की भूमि काफी असमतल है।

(ब) तापमान एवं वर्षा:-

जनपद के सभी सम्भागो गगापार, यमुनापार एव द्वाबा की जलवायु शीतोष्ण है। गर्मी के मौसम मे अधिक गर्मी, सर्दी मे अत्यधिक सर्दी एव बरसात मे सुहावना मौसम होता है। नवम्बर माह के मध्य से सर्दी प्रारम्भ होकर जनवरी माह मे अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है। जनपद मे वर्ष 1994-95 मे उच्चतम तापमान 57 7 डिग्री सेन्टीग्रेट तथा न्यूनतम तापमान 4 5 डिग्री सेन्टीग्रेट रहा है। वायु मे आर्द्रता मानसून की अवधि मे 70 से 80 प्रतिशत रहती है। मानसून के बाद गर्मी 20 प्रतिशत रह जाती है।

जनपद के प्रत्येक उपखण्डो मे औसत मात्रा मे वर्षा होती है। वर्षा दक्षिण पूर्व से उत्तर पश्चिम की ओर घटती जाती है। 85 प्रतिशत वर्षा मानसून मे हो जाती है। वर्ष 1994 मे औसत वास्तविक वर्षा 666 मिमी० हुई जबकि जनपद की सामान्य वर्षा 959 मिमी० है।

(स) भू-गर्भीय पदार्थ:-

जनपद में इमारती पत्थर भी यमुनापार क्षेत्र मे पाया जाता है, इसकी मोटाई 1 50 मीटर से लेकर 2 50 मीटर तक होती है। इसे प्लास्टर करके निकाला जाता है। इसकी खाने मुख्यत शिवराजपुर में है। जनपद के गगापार व द्वाबा उपखण्ड में ककड पाया जाता है। सिलिकासैण्ड जो कि कॉच बनाने के काम आता है, बारा

तहसील के शकरगढ नथा सोराव तहसील के होलागढ स्थान पर मुख्यतया पाया जाता है। इन स्थानो पर बहुत उच्च श्रेणी का सिलिकासैण्ड होता है। उत्तर भारत के अधिकाश कॉच के कारखानो मे कच्चे माल की पूर्ति इन्हीं स्थानो की सिलिकासैण्ड से की जाती है।

प्राकृतिक रूप से गगा एव यमुना नदिया यहाँ पूरे वर्ष भर बहती रहती है। गगा एव यमुना नदियो का यहाँ पर सगम होने के पश्चात गगा पूर्व की तरफ चली जाती है। इसके अतिरिक्त टोन्स, बेलन, ससुरखदेरी, मनसैता, लपरी आदि छोटी-छोटी नदिया भी जनपद मे बहती है। अतिवृष्टि होने पर नदियो के किनारे के ग्राम्मो मे पानी भर जाता है। प्रत्येक वर्ष जनपद मे बाढ का खतरा बना रहता है। मुख्यत जनपद का मुख्यालय इलाहाबाद नगर लगभग तीन ओर से गगा एव यमुना नदियों से घिरा हुआ है जिससे बाढ आने की आशका प्रत्येक वर्ष मे बनी रहती है। इसके अतिरिक्त जनपद के प्रथम उपखण्ड गगापार मे जल निकास की समुचित व्यवस्था न होने के कारण छोटे तथा बडे तालाब की एक श्रृखला है जिसमे योगी तालाब, दानी तालाब, मैलहन एव कनिहाल प्रमुख है। द्वाबा उपखण्ड मे भी कुछ झीले बहती हैं जिसमे भुॅजरी ताल एवं अलवारा उल्लेखनीय है। यमुनापार क्षेत्र में केवल बेलसरा एव कान्ती झील उल्लेखनीय है।

(द) भूमि की किश्म.-

जनपद को तीन उपखण्डो मे विभाजित किया गया है। प्रथम गगापार द्वितीय द्वाबा एव तृतीय यमुनापार। उपखण्ड गगापार के तहसील फूलपुर, सोराव व हण्डिया मे दोमट एव लोम का बाहुल्य है जिनकी लम्बाई मिट्टी बाढ से प्राय अक्रान्त हो जाती है। द्वाबा के तहसील चायल, मझनपुर व सिराथू मे नदियो के किनारे बलुई मिट्टी एव बालू का मिश्रण धीरे-धीरे घटता जाता है जिसके बाद मटियार का फैलाव आ जाता है। इस उपखण्ड मे मुख्यत दोमट एव लोम मिट्टी पाई जाती है। दोमट व लोम जो बास एव मिट्टी के सम्मिश्रण से बनी हुई है, नदी के किनारे पाई जाती है। नदी से ज्यो-ज्यो दूरी बढती जाती है, मटियार एव लोम का प्रादुर्भाव होने लगता है। अन्त मे पथरीली एव पहाडी भूमि का फैलाव दृष्टिगत होने लगता है। सुदूर पश्चिम मे विन्ध्याचल की श्रृखला का दिग्दर्शन होने लगता है।

(य) क्षेत्रफल एवं ·ЬІЫ:निक ढांचाः-

इलाहाबाद जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 7261 वर्ग किलोमीटर है जो कि प्रदेश मे आठवॉ स्थान रखता है। जनपद मे हण्डिया, फूलपुर, सोराव, चायल, मझनपुर, सिराथू, करछना, मेजा व बारा नामक 9 तहसीले हैं। जनपद का प्रशासनिक मुख्यालय इलाहाबाद नगर है। जनपद में कुल 3945 ग्राम है, जिसमे आबाद ग्रामो की संख्या 3539 एव गैर आबाद ग्रामो की सख्या 406 है। जनपद के सभी ग्रामो को 28 विकास खण्डों मे विभाजित किया गया है। बारा नामक तहसील एवं कौंधियारा नामक

विकास खण्ड नवसृजित है। हण्डिया तहसील मे 4 विकास खण्ड, धनूपुर, हण्डिया, प्रतापपुर एव सैदाबाद है। फूलपुर मे 3 विकास खण्ड, बहादुरपुर, बहरिया तथा फूलपुर है। सोराव मे 4 विकास खण्ड होलागढ, कौडिहार, मऊआइमा एव सोराव है। चायल मे 3 विकास खण्ड चायल, नेवादा तथा मूरतगज है। मझनपुर मे 3 विकास खण्ड, कौशाम्बी, मझनपुर तथा सरसवा है। बारा मे 2 विकास खण्ड, जसरा एव शकरगढ है। मेजा मे 4 विकास खण्ड, कोराव, माण्डा, मेजा व उरूवा है। सिराथू मे 2 विकास खण्ड, सिराथू तथा कडा एव करछना तहसील मे 3 विकास खण्ड, चाका, करछना तथा कौधियारा स्थित है।

वर्तमान जनपद मे एक नगर महापालिका एक छावनी क्षेत्र एव 16 नगर क्षेत्र समिति टाउन एरिया है। वर्ष 1994-95 में 2375 ग्राम-सभायें, 304 न्याय-पचायते एव 430 पचायत घर जनपद मे स्थित हैं।

प्रदेश मे नयी सरकार पदारूढ होते ही अप्रैल 1997 मे इलाहाबाद जनपद को विघटित कर कौशाम्बी नामक नूतन जिला घोषित कर दिया। इसके पश्चात इलाहाबाद जिले मे कोराव को नयी तहसील बनाने से वर्तमान जिले मे 7 तहसीले हो गयी हैं। लेकिन अध्ययन का क्षेत्र प्राचीन इलाहाबाद जनपद होने के कारण विभाजन से पूर्व की स्थिति को ही आधार माना गया है।

2. जनांकिकी :

(अ) जनसंख्या:-

जनगणना 1981 के अनुसार जनपद मे कुल 3797033 व्यक्ति थे जिसमे पुरूषो की जनसख्या 2008771 एव स्त्रियो की जनसख्या 1788262 थी। जनगणना 1991 के अनुसार अब जनपद की कुल जनसख्या बढकर 4921313 व्यक्ति हो गई है जिसमे पुरूषो की जनसख्या 2624829 एव स्त्रियो की जनसख्या 2296484 है। जनगणना 1981 की तुलना मे जनगणना 1991 के अनुसार जनपद की जनसख्या मे 29 6 प्रतिशत की बढोत्तरी हो गई है।

(ब) घनत्व:-

जनपद का जनसख्या घनत्व 1981 की जनगणना के अनुसार 653 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० था जो कि जनगणना 1991 के अनुसार बढकर 678 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गया है, जबकि उत्तर प्रदेश का जनसख्या घनत्व आसाम एव जम्मू कश्मीर को छोडकर 274 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। राज्य की घनी आबादी वाले जनपदो मे इस जनपद का स्थान आता है। जनगणना 1991 के अनुसार जनपद मे सबसे अधिक जनसंख्या का घनत्व 1041 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० करछना के विकास खण्ड चाका का है एव सबसे कम जनसख्या का घनत्व 239 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी० करछना के विकास खण्ड शकरगढ का है। जनगणना 1991 के अनुसार जनपद की

ग्रामीण जनसख्या 3898948 एव नगरीय जनसख्या 1022365 है। जनगणना 1981 के अुनसार 79 64 प्रतिशत जनसख्या ग्रामो मे निवास करती थी। नगरीय जनसख्या 20 36 प्रतिशत थी जिसमे अधिकाश जनसख्या जनपद के मुख्य नगर इलाहाबाद मे निवास करती थी। जनगणना 1991 के अनुसार जनपद मे 79 23 प्रतिशत जनसख्या ग्रामीण क्षेत्रो मे एव 20 77 प्रतिशत जनसख्या नगरीय क्षेत्रो मे निवास करती है।

(स) लिंग अनुपातः-

जनगणना 1981 के अनुसार प्रति एक हजार पुरूषो पर जनपद मे स्त्रियो की सख्या 890 थी। यह अनुपात प्रति एक हजार पुरूषो पर गगापार मे स्त्रियो की सख्या 923, द्वाबा मे स्त्रियो की सख्या 902 एव यमुनापार में स्त्रियों की सख्या 894 थी। ग्रामीण जनसख्या मे प्रति एक हजार पुरूष पर स्त्रियों की सख्या 908 तथा नगरीय क्षेत्र मे प्रति एक हजार पुरूषो पर स्त्रियो की सख्या 822 थी। वर्ष 1991 के जनगणना के अनुसार जनपद मे प्रति एक हजार पुरूषों पर स्त्रियों की सख्या 875 है।

(द) अनुसूचित जातियां एवं जनजातियांः-

जनगणना वर्ष 1981 के अनुसार जनपद मे अनुसूचित जातियो एव जनजातियो की जनसख्या कुल जनसख्या की 24 5 प्रतिशत थी, जबकि राज्य में अनुसूचित जातियो एव जनजातियों की सख्या 21 4 प्रतिशत थी। वर्ष 1991 के

जनगणना के अनुसार जनपद मे अनुसूचित-जाति की जनसख्या कुल 1202847 एव अनुसूचित-जनजाति की जनसख्या 2204 है, जबकि वर्ष 1981 के जनगणना के अनुसार जनपद मे कुल अनुसूचित-जाति एव जनजाति की सख्या 931331 है।

(य) कर्मकरों की संख्याः-

जनगणना 1981 के अनुसार जनपद मे कुल कर्मकरो की सख्या 1124461 थी जो कि कुल जनसख्या का 29 6 प्रतिशत था। इसमे कृषको की जनसख्या 520358, कृषक व मजदूरो की सख्या 256860, खाने खोदने वाले 2187, पशुपालन व्यवसाय आदि मे 4311, पारिवारिक 62047, गैर-पारिवारिक 64774, निर्माण कार्य मे 8425, व्यापार एव वाणिज्य मे 53674, यातायात व सग्रहण एव सचार मे 29730 एव अन्य व्यवसाय मे 285196 कर्मकर थे। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जनपद मे कर्मकरो की कुल जनसख्या 1552562 है जिनमे कृषक 671700, कृषक मजदूर 402745, खान खोदने वाले 4847, पशुपालन व्यवसाय आदि मे 8171, उद्योग पारिवारिक व गैर-पारिवारिक मे क्रमश 54658 व 71459, निर्माण कार्य मे 15377, व्यापार व वाणिज्य मे 103565, यातायात व सग्रहण एव सचार मे 34705 एव अन्य व्यवसाय में 185335 कर्मकर हैं। जनपद में सीमान्त कर्मकरों की सख्या 110408 है।

3. साक्षरता :

जनपद मे वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार 28 0 प्रतिशत जनसख्या साक्षर थी। ग्रामीण क्षेत्र मे साक्षरता 21 8 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र मे साक्षरता 55 0 प्रतिशत थी। जनपद मे पुरूषो की साक्षरता 41 5 प्रतिशत एव स्त्रियो की साक्षरता 15 8 प्रतिशत थी। जनगणना 1991 के अनुसार जनपद की साक्षरता 42 7 प्रतिशत है जबकि ग्रामीण एव नगरीय साक्षरता 35 0 प्रतिशत एव 69 8 है। जनपद मे पुरूषो की साक्षरता 59 1 प्रतिशत स्त्रियो की साक्षरता 23 5 प्रतिशत है।

4. वनः

इस जनपद मे वन विभाग के अन्तर्गत 20142 हेक्टेयर क्षेत्र उपलब्ध है जो कि जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का मात्र 2 76 प्रतिशत है। वन का क्षेत्र अधिकतर यमुनापार इलाके मे है। तहसील मेजा मे 73 6 प्रतिशत, बारा मे 23 9 प्रतिशत एव अन्य तहसीलो मे 2 5 प्रतिशत क्षेत्र जनपद मे स्थित कुल वन क्षेत्र का है।

5. कृषि (भूमि उपयोगिता) :

वर्ष 1993-94 में जनपद में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 727463 हेक्टेयर रहा है इसमें 20141 हेक्टेयर वन क्षेत्र, 22235 हेक्टेयर कृषि योग्य बजर भूमि, 2101 हेक्टेयर चारागाह, 82441 हेक्टेयर कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग में लाई गयी

भूमि, 83844 हेक्टेयर क्षेत्र परती, 29387 हेक्टेयर क्षेत्र ऊसर और कृषि के अयोग्य भूमि एव 13655 हेक्टयर उद्यानो/वृक्षो के अन्तर्गत है। कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल मे से 473621 हेक्टेयर बोया गया क्षेत्रफल है। जनपद मे वर्ष 1992-93 मे फसल सघनता 141 1 प्रतिशत रहा है।

6. सिंचाई :

सघन कृषि कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने हेतु सिचाई के साधनो का होना नितान्त आवश्यक है, क्योकि उनकी सिचन क्षमता की उपलब्धि निश्चित है। वर्ष 1992-93 मे जनपद मे नहरो की कुल लम्बाई 2294 किमी०, 3202 पक्के कुए, 2846 रहट, 3477 पम्पिग सेट, 11804 निजी नलकूप थे। वर्ष 1992-93 मे राजकीय नलकूपो की सख्या 1271 थी। जनपद मे वर्ष 1991-92 मे नहर द्वारा 130025 हेक्टेयर, नलकूपो द्वारा 142368 हेक्टेयर, कुआ द्वारा 6076 हेक्टेयर, तालाब झील एव पोखरो द्वारा 3486 हेक्टेयर एव अन्य स्रोतो द्वारा 2085 हेक्टेयर भूमि की सिचाई की गई है। वर्ष 1990-91 मे कुल सिचित क्षेत्रफल 273317 हेक्टेयर तथा वर्ष 1989-90 मे कुल सिचित क्षेत्र 260058 हेक्टेयर था।

बृहद एवं मध्यम सिंचाई कार्यक्रमः-

जनपद में नहरों की लम्बाई सातवीं योजना के अन्त मे 2294 किमी० थी इसमे पम्प नहर जिसकी लम्बाई 74 किमी० सम्मिलित थी। इलाहाबाद जनपद की

कमला नेहरू पम्प नहर टोन्स नहर, बेलननहर, बाघला नहर तथा किशुनपुर नहर पम्प योजना लगभग पूर्ण हो गयी है।

7. पशुपालन एवं दुग्ध आपूर्ति :

वर्ष 1988 के पशुगणना के अनुसार कुल पशुओ की सख्या 2075208 थी जिसमे ग्रामीण क्षेत्र मे 1993789 पशु एव नगरीय क्षेत्र मे 81499 पशु थे। वर्ष 1982 की पशुगणना के अनुसार पशुओ की सख्या 2873071 थी। वर्ष 1988 मे कुक्कुट की सख्या 280317 थी।

वर्ष 1988 की पशुगणना के अनुसार दुग्ध देने वाली गायो की सख्या 202591 तथा भैसो की सख्या 220503 थी।

8. विद्युतीकरण :

ग्रामों का विद्युतीकरण:-

जनपद मे 31 03 95 तक 3094 ग्रामो का विद्युतीकरण किया जा चुका है जो कुल आबाद ग्रामो का 86 92 प्रतिशत है। जनपद के समस्त 16 टाउन एरिया का विद्युतीकरण हो चुका है। जनपद मे 31 03 95 तक 2072 हरिजन बस्तियो का विद्युतीकरण किया गया।

नलकूप/पम्पसेटो का विद्युतीकरण:-

31 03 94 तक 18151 नलकूपो/पम्पसेटो का विद्युतीकरण किया जा चुका है।

विद्युत उपभोग :-

वर्ष 1993-94 मे घरेलू प्रकाश व विद्युत शक्ति पर 241561 हजार किलोवाट, वाणिज्यिक प्रकाश एव लघु विद्युतीकरण शक्ति पर 63713 हजार किलोवाट, औद्योगिक विद्युत शक्ति पर 143237 हजार किलोवाट, प्रकाश व्यवस्था पर 12899 हजार किलोवाट, कृषि विद्युत शक्ति पर 343186 हजार किलोवाट तथा सार्वजनिक जलकर एव सफाई पर 50395 हजार किलोवाट विद्युत का वास्तविक उपभोग हुआ।

इलाहाबाद विद्युत उपक्रम की वर्तमान क्षमता 8 मेगावाट है। विद्युत प्रसारण के लिए 132 के०वी०ए० के 5 तथा 33 के०वी०ए० के 14 उपकेन्द्र कार्यरत हैं।

9. उद्योग :

जनपद मे गतवर्ष मे औद्योगिक विकास कार्य तेजी से हुआ है लेकिन वह केवल नैनी एवं फूलपुर के नगरीय क्षेत्रो में ही केन्द्रित होकर रह गया। जनपद के ग्रामीण उद्योग परियोजना के कार्यान्वयन से आधुनिक लघु उद्योगों का कुछ विकास अवश्य हुआ परन्तु व्यापक रूप मे औद्योगिक नीति के अनुसार छोटे एव स्थानीय

उद्योगो को अधिक प्रोत्साहन दिया जाता रहा है, ताकि पर्याप्त वृद्धि सम्भव हो सके। इसी राष्ट्रीय नीति के अन्तर्गत जनपद मे भी 1978 से जिला उद्योग केन्द्र की स्थापना की गयी है। इस योजना का उद्देश्य यह है कि एक ही क्षेत्र के अन्तर्गत उद्यमियो को सभी प्रकार की सलाह तथा सहायता उपलब्ध हो सके। औद्योगिक अधिनियम 1948 के अन्तर्गत पजीकृत कारखानो की सख्या वर्ष 1987-88 मे 354 थी, जिसमे कार्यरत औसत कर्मचारियो की सख्या 36345 थी। वर्ष 1992-93 मे लघु औद्योगिक इकाइयो (उद्योग निदेशालय के अन्तर्गत पजीकृत) की सख्या 1844 थी जिसमे कार्यरत व्यक्तियो की सख्या 14816 थी।

10. औद्योगिक आस्थान :

जनपद मे औद्योगिक आस्थानो की सख्या वर्ष 1993-94 मे 7 थी। शेडो की सख्या आवटित 41 तथा कार्यरत 28 थे। प्लाटो की सख्या आवटित 219 कार्यरत 79 थे। रोजगार मे लगे व्यक्तियो की सख्या 235 तथा उत्पादन 3735 हजार रूपये का था। नैनी इण्डस्ट्रियल काम्लेक्स के लिए 2800 एकड़ भूमि अधिग्रहित की गई है। अब तक 2000 एकड भूमि का आवटन हो चुका है। नैनी मे श्रमिक समस्या होने के कारण छोटे-छोटे उद्यमी हतोत्साहित हो रहे हैं। अतएव जनपद मे वृहद उद्योगों को स्थापित करने का प्रस्ताव रखा जा रहा है।

विकास खण्ड मऊआइमा एव मेजा मे सहकारी क्षेत्र मे स्पिनिग मिल्स की स्थापना की जा चुकी है। मेजा मे ऊनी, सूती, कताई मिल 50 तकुओ वाली लगभग 16 00 करोड रूपये लागत की स्थापित करने के कार्य पूर्ण हो चुके है।

मऊआइमा मे हथकरघा उद्योग निगम मे सूत वितरण के लिये एक डिपो की स्थापना की जा चुकी है।

11. सड़कें तथा पुल :

इलाहाबाद जनपद मे सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा सघृत सडको की लम्बाई वर्ष 1991-92 तक 2577 किमी० थी। वर्ष 1991-92 मे सा०नि०वि० के अन्तर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग 185 किमी०, प्रादेशिक राजमार्ग 216 किमी०, जिला मुख्य सडके 1201 किमी० एव अन्य जिला ग्रामीण सडके 975 किलोमीटर थी। स्थानीय निकायो के अन्तर्गत वर्ष 1991-92 मे इलाहाबाद नगर महापालिका/नगर क्षेत्र समिति कैण्ट के अन्तर्गत कुल सडके 904 किमी० थी। इसी प्रकार मार्च 1992 तक 3521 किमी० सडके जनपद मे थी इस जनपद मे व्यावसायिक एव प्रशासनिक केन्द्र निकटतया जिलो मे सुव्यवस्थापित राजपथ एव रेल द्वारा मिले हुए हैं।

जनपद मे कुल रेलवे लाइन की लम्बाई 303 किमी० है। रेलवे लाइन प्रति लाख जनसख्या पर 7 98 किमी० पडती है। कुल सडक की लम्बाई वर्ष 1991-92 तक प्रति

लाख जनसख्या पर 71 5 किमी० एव प्रति हजार वर्ग किमी० पर कुल सडको की लम्बाई 484 9 किमी पडती थी। सा०नि०वि० के द्वारा सघृत सडक की लम्बाई वर्ष 1991-92 तक प्रतिलाख जनसख्या पर 52 4 किमी० एव प्रतिहजार वर्ग किलोमीटर पर 354 9 थी।

12. संचार सेवाएं :

वर्ष 1993-94 के दौरान जनपद मे कुल 548 डाकघर कार्यरत थे। जिनमे से ग्रामीण क्षेत्रो मे 466 डाकघर एव 96 तारघर तथा नगरीय क्षेत्र मे 82 डाक घर व 27 तारघर कार्यरत थे। वर्ष 1993-94 मे जनपद मे लगे टेलीफोन की सख्या 23855 एव पब्लिक काल आफिस की सख्या 280 रही है, जिसमे 1022 टेलीफोन एव 69 पब्लिक काल आफिस ग्रामीण क्षेत्र मे एव 22833 टेलीफोन एव 211 पब्लिक काल आफिस नगरीय क्षेत्र मे थे।

13. टेलीविजन सेवाएं :

ग्रामीण क्षेत्र मेअधिकतर भाग में स्वच्छ एव स्पष्ट प्रसारण हेतु 10 किलोवाट शक्ति वाला ट्रासमीटर इलाहाबाद नगर मे स्थापित किया जा चुका है।

14. सेवायोजन :

बेरोजगार अभ्यर्थियो के उपयुक्त नियोजन एव अवश्यकता के अनुरूप जनशक्ति उपलब्ध कराने हेतु जनपद मे क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय स्थापित है। यहॉ रोजगार के इच्छुक अभ्यर्थी पजीकृत किये जाते है और विभिन्न स्थापनाओ मे रोजगार के अवसर उपलब्ध होने पर योग्यता, वरिष्ठतानुसार चुनाव हेतु भेजे जाते हैं। 31 मार्च 1994 को सेवायोजन कार्यालय मे अभ्यर्थियो की सख्या 150073 रही जिसमे वर्ष 1993-94 के अर्न्तगत पजीकृतो की सख्या 25616 रही। इनमे से वर्ष 1993-94 मे रोजगार पाने मे 192 अभ्यर्थी सफल रहे। विभिन्न भर्ती बोर्डों, सेवा आयोगो एव विज्ञापनो द्वारा सीधी भर्ती किये जाने, छटनी शुदा कर्मचारियो के समायोजन तथा सवेतन रोजगार मे घटते हुए अवसरों के कारण सेवायोजन कार्यालय के माध्यम से रोजगार पाने वालो की सख्या उत्साहवर्धक नहीं है। जनपद मे इस समय 68899 केन्द्र सरकार, 36255 राज्य सरकार, 26903 अर्धसरकारी तथा 14343 व्यक्ति स्थानीय निकायो मे नियोजित है।

अनु० जाति, जनजाति एव पिछडे वर्गों के बोराजगारों की रोजगारिता मे वृद्धि हेतु शिक्षण एव मार्ग दर्शन केन्द्र स्थापित है। जहॉ उन्हे टकण, आशुलिपिक में प्रशिक्षण तथा प्रतियोगी परीक्षाओ हेतु कोचिग प्रदान की जाती है। वर्ष 1993-94 के

अन्तर्गत कुल 59 सफल प्रशिक्षणार्थी रहे तथा 24 को रोजगार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त व्यवसाय मार्गदर्शन इकाई द्वारा अभ्यर्थियो को शिक्षण-प्रशिक्षण, सेवायोजन एव स्वत नियोजन हेतु उपयुक्त मार्गदर्शन दिया जाता है। सवेतन रोजगार की सीमित सभावनाओ को देखते हुए स्वत नियोजन पर विशेष बल दिया जा रहा है। वर्ष 1993-94 के अन्तर्गत 191 अभ्यर्थियो को स्वत नियोजित कराया गया। सेवायोजन कार्यालय की समस्त सेवाए नि शुल्क है।

15. सहकारिता :

जनपद की अर्थव्यवस्था मुख्यत कृषि पर निर्भर है। यह आवश्यक है कि प्रारम्भिक कुल ऋण समितियो द्वारा कृषि सम्बन्धी कार्यो के लिये अल्प कालीन एव मध्य कालीन ऋण सहकारिता के माध्यम से दिये जाय। अत सरकारी समितियो के पुर्नगठन तथा उनको स्वावलम्बी बनाना आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए सहकारी ढॉचे को सुदृढ एव पुनर्गठित करने के प्रयास किये जा रहे है। रिजर्व बैंक आफ इण्डिया की सस्तुतियो के अनुसार इस क्षेत्र की प्रारम्भिक कृषि ऋण समितियो को अब तक बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियो मे न्याय पचायत स्तर पर पुनर्गठित किया जा चुका है।

वर्ष 1992-93 में प्राथमिक कृषि ऋण सहकारी समितियों की संख्या 273 थी जिसमें 481782 सहकारी सदस्य थे। समिति में पूँजी के स्रोत क्रमश सदस्यता शुल्क

और अशपूजी, शासकीय अशपूजी जमानती ऋण जिला सहकारी बैंक से अनुदान व दान तथा अन्य निधियो का लाभ हे जिनसे पूॅजी एकत्रित करके समिति अपने सदस्यो को उपलब्ध कराती है। इन समितियो की वर्ष 1994-95 मे अशपूॅजी 65479 हजार रूपये थी। समितियो के अन्तर्गत जनपद के समस्त आबाद ग्राम 3540 रहे। सहकारी बैको द्वारा वर्ष 1994-95 मे अल्पकालीन ऋण 217409 हजार एव मध्यकालीन ऋण 3464 हजार रूपये वितरित किये गये।

16. बैंक :

विकास योजनाओ पर होने वाला व्यय केन्द्र द्वारा प्रदेश के अतिरिक्त बचत के आधार पर स्वीकृत किया जाता है। अत घरेलू बचत को प्रोत्साहन देने के लिए बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ-साथ विकास कार्यक्रमो के सफलता एव सुचारू रूप से कार्यान्वित करने हेतु कृषि क्षेत्रो मे कृषको को ऋण सम्बन्धी सुविधाओ को उपलब्ध कराने की सुविधा प्रदान करते हैं, साथ ही ग्रामीण क्षेत्रो मे लघु उद्योगो एव नगरीय क्षेत्रो में बडे उद्योगो के लिए भी वित्तीय सहायता प्रदान करते है। जनपद मे एकीकृत ग्राम्य-विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्धारित लक्ष्य के उपलब्धि में बैको द्वारा बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। बैको के योगदान के अभाव मे एकीकृत ग्राम्य-विकास कार्यक्रम मे अभूतपूर्व सफलता हेतु निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त न किया जा सकेगा।

जनपद मे वर्ष 1994-95 के दोरान राष्ट्रीयकृत बैको की 191 शाखाये, सहकारी बैको की 44 शाखाये, भूमि विकास की 9 शाखाये, इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रमीण बेक को 92 शाखाये कार्यरत रही। इसके अतिरिक्त 10 अन्य गैर-व्यावसायिक बैक की शाखाए भी जनपद मे कार्यरत है। वर्ष 1989-90 मे प्रति बैक कार्यालय पर जनपद मे जनगणना 1981 के आधार पर जनसख्या 13378 थी। जिला सहकारी बेको द्वारा जनपद मे वर्ष 1994-95 के दौरान 376748 लाख रूपये के ऋण वितरित किये गये जिनमे अल्पकालीन ऋण 328391 लाख रूपये एव मध्यकालीन ऋण 48357 लाख रूपये वितरित हुए। भूमि विकास बेको द्वारा वर्ष द्वारा वर्ष 1994-95 मे 64204 लाख रूपये के ऋण वितरण का कार्य किया गया।

प्राथमिक क्षेत्रो मे जैसे कृषि, लघुउद्योग, मत्स्य उद्योग, स्वत रोजगार, फुटकर व्यापार, शिक्षा ट्रान्सपोर्ट एकीकृत ग्राम्य विकास कार्यक्रम व स्पेशल कम्पोनेन्ट योजना आदि के अन्तर्गत जनपद मे कुल व्यवासायिक बैंको द्वारा वर्ष 1994 मे 4067348 रूपये का ऋण वितरित किया गया जबकि कुल व्यावसायिक बैको मे जमा धनराशि 1310965 रूपये रही, इस प्रकार जमा धनराशि पर ऋण वितरण का प्रतिशत 30 था।

17. शिक्षा:

1991 की जनगणना के अनुसार जनपद मे 42 7 प्रतिशत साक्षर व्यक्ति है। पुरूषो मे साक्षरता का प्रतिशत 59 1 एव स्त्रियो मे साक्षरता का प्रतिशत 23 5 है। 1981 की जगणना के अनुसार जनपद मे 28 0 प्रतिशत साक्षर व्यक्ति थे जिनमे पुरूषो मे 41 5 प्रतिशत एव स्त्रिया मे 12 8 प्रतिशत साक्षरता थी। इस प्रकार जनपद ने साक्षरता प्रतिशत मे गत 10 वर्षो मे वृद्धि हुई है।

वर्ष 1992-93 तक जनपद मे जूनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 1900, सीनियर बेसिक स्कूलो की सख्या 596 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो/इण्टर कालेजो की सख्या 251 डिग्री कालेजो की सख्या 16 एव 1 विश्वविद्यालय था।

वर्ष 1992-93 मे उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे 127280 छात्र एव 35474 छात्राए अध्ययनरत थी। जबकि वर्ष 1991-92 ये इन विद्यालयो मे 103034 छात्र एव 29323 छात्राए अध्ययनरत थी। वर्ष 1992-93 मे जूनियर बेसिक स्कूलो मे 187298 छात्र एव 87152 छात्राए सीनियर बेसिक स्कूलो मे 68769 छात्र एव 20858 छात्राए अध्ययनरत थी। जिनमे बेसिक स्कूलो मे अनुसूचित जाति/जनजाति के 45667 छात्र ओर 21663 छात्राए एव सीनियर बेसिक स्कूलो मे 12739 छात्र ओर छात्राए 3531 भर्ती थी।

वर्ष 1992-93 मे उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे 5502 अध्यापक थे जिनमे 1159 महिला अध्यापिकाये सम्मिलित थीं। विश्वविद्यालय मे कुल 458 अध्यापको की सख्या थी जिनमे 87 महिला अध्यापिकाये थी।

वर्ष 1992-93 मे अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत जनपद मे 2100 केन्द्रो मे शिक्षा दी जा रही थी।

18. चिकित्सा एवं जनस्वास्थ्य:

जनपद के मुख्यालय इलाहाबाद नगर मे एक-एक मेडिकल कालेज एव हास्पिटल, सक्रामक रोगो का अस्पताल एव नेत्र चिकित्सालय है। नैनी मे कुष्ठरोगो का अस्पताल है। इस प्रकार जनपद मे चिकित्सालयो की प्राय समस्त सुविधाए उपलब्ध है।

जनपद मे वर्ष 1994-95 मे एलोपैथिक चिकित्सालय एव औषधालय, राजकीय, सार्वजनिक 144, राजकीय विशेष के 12, स्थानीय निकाय एव नगर महापालिका के 14, सहायता प्राप्त निजी चिकित्सालय 6, एव असहायता प्राप्त निजी चिकित्सालय 3 एव आर्थिक सहायता प्राप्त चिकित्सालय 4 कार्यरत रहे।

जनपद मे एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी एव होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के अन्तर्गत प्रत्येक में एक-एक मेडिकल कालेज चिकित्सा सेवा के शिक्षा देने मे कार्यरत हैं। जन्म आकडे दर 40 5 प्रति हजार तथा मृत्युदर 16.2 प्रति हजार है।

19. परिवार कल्याण:

पेयजल -

वर्ष 1992-93 तक जनपद मे कुल 3539 आबाद ग्रामो मे से उत्तर प्रदेश जल निगम द्वारा 1863 ग्रामो मे नल द्वारा 13 14 लाख जनसख्या को स्वच्छ पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराई गई।

अब तक जनपद के समस्त समस्याग्रस्त ग्रामो मे पेयजल सुविधा पहुँचा दी गई है। जिले के प्रत्येक समस्याग्रस्त ग्राम मे कम से कम दो-दो हैण्डपम्प लगाये गये है। यमुनापार पेयजल सुविधाओ से परिपूर्ण किया जा चुका है। गगापार एव द्वाबा मे भी पूर्ण जल सुविधा की कार्यवाही की जा रही है।

वर्ष 1993-94 मे न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत 110 हैण्डपम्प लगाये गये तथा 763 हैण्डपम्प विभिन्न योजनान्तर्गत लगाये गये है।

पर्यटन·-

यह जनपद एक प्राचीन तीर्थस्थल है जो कि तीर्थराज प्रयाग कहा जाता है। यहाँ गगा, यमुना एव सरस्वती (गुप्तगगा) का सगम है जिसका दर्शन करने देश-विदेश के लाखो व्यक्ति प्रतिवर्ष आते हैं। माघ के महीने मे यहाँ पर प्रत्येक वर्ष एक विशाल मेला लगता है। सगम मे यमुना के किनारे पौराणिक अक्षयवट वृक्ष जो कि पुराणो के अनुसार प्रलयकाल मे पुन हरा हो जाता है। जब समस्त सृष्टि

जलमग्न हो जाती है तो उसी अक्षयवट वृक्ष पर भगवान बाल मुकुन्द विराजमान होते हैं। भारद्वाज का पवित्र आश्रम जहॉ पर 10000 छात्र नि शुल्क शिक्षा पाते थे। इसके अवशेष अब भी विराजमान है। इसके अतिरिक्त सती अनुसुइया का आश्रम, ऋग्वेद, झूँसी, कौशाम्बी, घोसीराज मठ के भग्नावशेष है जहॉ बुद्ध भगवान ने स्वय प्रवचन दिया था। जिला योजनान्तर्गत श्रृगवेरपुर का विकास किया जा रहा है।

मनोरजन :-

जनपद मे मार्च 1993 तक 34 सिनेमागृह थे। मार्च 1993 तक 34 सिनेमागृहो मे कुल सीटो की सख्या 19969 थी। इसके अतिरिक्त नाटक एव सगीत कार्यक्रमो के आयोजन हेतु एक मेहता प्रेक्षागृह भी है। अति प्रसिद्ध आनन्द भवन के अहाते मे ही एक जवाहर प्लेटोरियम भी है, जिसमे प्रत्येक दिन तीन शो हिन्दी मे एक-एक शो अग्रेजी मे आकाशीय सितारो एव ग्रहो के कार्यक्रम का प्रदर्शन किया जाता है।

खेलकूद :-

राजकीय स्पोर्ट्स कालेज एव म्योहाल काम्पलेक्स इलाहाबाद तथा स्पोर्टस स्टेडियम कम्पनी बाग, इलाहाबाद द्वारा खेलकूद का प्रशिक्षण व प्रदर्शन तथा विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है।

20. जनपद के अन्य विकास कार्यक्रम:

एकीकृत ग्राम्य विकास कार्यक्रमः-

समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम 2 अक्टूबर 1980 को पूरे देश मे प्रारम्भ किया गया था। इसे ग्रमीण विकास के क्षेत्र मे एक प्रमुख गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के रूप मे जारी किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पता लगाए गये ग्रामीण गरीब परिवारो को गरीबी की रेखा को पार करने के लिए समर्थ बनाना है। यह कार्यक्रम केन्द्र और राज्यो द्वारा 50 50 के अनुपात मे वित्त-पोषित है। इस योजना के अन्तर्गत केन्द्र द्वारा प्रदान की जाने वाले वित्तीय सहायता सीधे ही जिला ग्रामीण विकास एजेन्सी डी०आर०डी०ए० को उपलब्ध करायी जाती है।

इलाहाबाद जिले मे वर्ष 1995-96 मे 11938 परिवारो को लाभान्वित कराया गया जिसमे 6784 अनु०जा०/जनजाति वर्ग के परिवार सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम मे 596 95 लाख रूपये का अनुदान एव 1432 68 लाख रूपये का ऋण उपलब्ध कराया गया। 3942 महिलाओ को ऋण एव अनुदान की सुविधा उपलब्ध कराई गयी। कुल न्धिारित वार्षिक लक्ष्य 11842 के विपरीत 11938 परिवारो को लाभान्वित कर 100 8 प्रतिशत की पूर्ति की गई। औसत परियोजना लागत 17000 रूपये है।

ट्राइसेम योजना -

ग्रामीण युवको के लिए स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण (ट्राइसेम) समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम का एक सहायक अग हे जिसका सूत्रपात एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना के रूप मे 15 अगस्त 1979 को किया गया था। इसका लक्ष्य उन ग्रामीण युवाओ की तकनीकी तथा उद्यमशीलता को कुशलताए प्रदान करना है जो गरीबी की रेखा से नीचे बसर करने वाले परिवारो के है ताकि वे कमाई वाले काम शुरू कर सके। इलाहाबाद जिले मे वर्ष 1995-96 मे कुल 1880 व्यक्तियो को प्रशिक्षण दिलाने का लक्ष्य निर्धारित था, जिसके सापेक्ष वर्ष 1995-96 मे 1229 व्यक्तियो को प्रशिक्षित किया गया तथा 6501 प्रशिक्षणरत थे। प्रशिक्षित व्यक्तियो मे से 1203 व्यक्तियो ने अपना स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय स्थापित कर लिया है।

अवधि	प्रशिक्षित युवा	
	लक्ष्य	प्राप्ति
1994-95	1900	658
1995-96	1880	1229

डी०डब्लू०सी०आर०ए० :

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला तथा बाल विकास कार्यक्रम (डी०डब्लू०सी०आर०ए०) -

ग्रामीण क्षेत्रो मे महिला तथा बाल विकास कार्यक्रम गरीबी की रेखा से नीचे बसर कर रहे ग्रामीण परिवार की महिलाओ के लिए है। इस योजना का उद्देश्य उन्हे स्वरोजगार के उपयुक्त अवसर प्रदान करना है। यह कार्य समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम की एक उपयोजना के रूप मे सितम्बर 1982 मे शुरू किया गया था। जनपद के 10 विकास खण्डो मे यह योजना वर्ष 1986-87 से लागू है। वर्ष 1995-96 मे 30 महिला समूहो को गठित करके प्रशिक्षित किया गया। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत लाभान्वित होने वाली महिलाओ की कुल सख्या 462 थी जिनमे कुल 3 79 लाख का ऋण तथा 1 81 लाख का अनुदान उपलब्ध कराया गया था। वर्ष 1995-96 मे 30 महिला समूहो को गठित करके प्रशिक्षित किया गया।

जवाहर रोजगार योजना :

सातवीं पचवर्षीय योजना के अन्तिम वर्ष अर्थात अप्रैल 1989 से राष्ट्रीय ग्रामीण विकास कार्यक्रम और ग्रामीण भूमिहीन रोजगार कार्यक्रम (आर०एल०ई०जी०पी०) नामक दोनो रोजगार कार्यक्रमो को मिलाकर एक वृहद ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम शुरू किया गया था। इस योजना के अन्तर्गत गरीबी की

रेखा से नीचे बसर करने वाले दलित समूह है। योजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति, जनजाति तथा मुक्त बधुँआ मजदूरो को प्राथमिकता दी जाती है। रोजगार के 30 प्रतिशत अवसर महिलाओ के लिए आरक्षित है।

इलाहाबाद जिले मे जवाहर रोजगार योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष के अवशेष को सम्मिलित करते हुये वर्ष 1995-96 मे 3104 00 लाख रूपया परिव्यय के विपरीत 3104 65 लाख रूपया व्यय किया गया जो लक्ष्य का 100 प्रतिशत था। मानव दिवस सृजन के 56 43 लाख के लक्ष्य के सापेक्ष 56 50 लाख मानव दिवस का सृजन किया गया जो वार्षिक लक्ष्य का 100 10 प्रतिशत था। कार्यक्रम मे गुणवत्ता सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से अधिकारियो के विभिन्न दलो द्वारा अधिकाश विकास खण्डो मे योजना का भौतिक सत्यापन भी कराया गया जिसमे यह स्पष्ट हुआ है कि अधिकाश ग्राम-सभाओ द्वारा कराये गये कार्य सन्तोष जनक रहे।

लघु सीमान्त कृषक विकास कार्यक्रम :

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 1992-93 मे 4362 वार्षिक लक्ष्य के सापेक्ष 4362 नि शुल्क बोरिंग कराई गई जिनमे 3393 पम्पसेट स्थापित किये गये। गत वित्तीय वर्ष के अवशेष को सम्मिलित करते हुए कुल उपलब्ध 216 887 लाख रू0 मे से 143.09 लाख रू० का व्यय किया जा सका है।

सूखा॰॰ख क्षेत्र वि॰॰॰ कार्यक्रम :

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 1995-96 मे कुल 24 66 लाख रूपये आवटित थे जिसके विपरीत 20 16 लाख रूपये व्यय करके भूमि सरक्षण एव वनीकरण के कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया गया। योजना के अन्तर्गत विकास खण्ड शकरगढ मे वन सरक्षण कार्य और भूमि सुधार के कार्य कराये गये जो अत्यन्त उपयोगी है।

नेहरू रोजगार योजना :

लघु उद्यम योजना:-

इस योजना मे योजना के प्रारम्भ से वित्तीय वर्ष 1995-96 तक 118 62 लाख रूपया प्राप्त हुआ जिसमे 77 76 लाख रूपया नगर माहपालिका का तथा 40 86 लाख रूपया नगर क्षेत्र समिति को अवमुक्त किया गया। इस अवमुक्त धनराशि के विपरीत 31 03 95 तक 68 455 लाख रूपये नगर महापालिका का तथा 27 95 लाख रूपये क्षेत्र समिति का समायोजित कर 2281 लाभार्थी नगर महापालिका तथा 932 लाभार्थी क्षेत्र समिति के लाभार्थियो को लाभान्वित किया गया।

नगरीय मजदूरी योजना:

इस योजना मे योजना के प्रारम्भ से अब तक 108.45 लाख रूपया प्राप्त हुआ जिसके विपरीत मार्च 1995 तक टाउन एरिया द्वारा 100 19 लाख रूपये व्यय

किया गया। इस धनराशि से 182346 मानव दिवस सृजित किये गये। इस कार्यक्रम मे मुख्यतया खडन्जा एव नाली निर्माण का कार्य कराया गया।

अम्बेदकर ग्राम विकास योजना:

इस योजना के अन्तर्गत वर्ष 1995-96 मे 38 ग्राम चयनित किया गया जिसमे निम्न कार्यक्रमो का लक्ष्य प्रगति तथा प्रतिशत दर्शाया गया है।

क्रमाक	कार्यक्रम	इकाई	लक्ष्य	प्रगति	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6
1	नि शुल्क बोरिंग	सख्या	168	161	95 83
2	एकीकृत विकास कार्यक्रमँ	सख्या	982	1013	102 00
3	ट्राइसेम	सख्या	372	401	108 00
4	इन्दिरा आवास	सख्या	863	802	93 00
5	निर्बल वर्ग आवास	सख्या	838	315	72 00
6	हैण्ड पम्प	सख्या	174	159	91 00

एकीकृत ग्राम्य विकास कार्यक्रमः

क्रमाक	विवरण	इकाई	1991-92	92-93	93-94	94-95	95-96
1	गतवर्ष का अवशेष	लाख रू०	59 516	40 034	7 66	20 97	100 00
2	प्राप्त धनराशि	लाख रू०	510 75	441 66	747 08	747 08	686 100
3	कुल उपलब्ध धनराशि	लाख रू०	619 502	481 694	754 74	768 08	786 19
4	कुल व्यय	लाख रू०	579 468	478 422	733 77	668 08	616 25
5	कुल लाभान्वित परिवार सख्या	सख्या	16170	13470	15170	11855	11039

जवाहर रोजगार योजना :

क्रमाक	विवरण	इकाई	1991-92	92-93	93-94	94-95	95-96
1	वार्षिक परिव्यय	लाख रूपये	1636 00	2159 613	2163 53	2102 13	3104 00
2	गतवर्ष का अवशेष	लाख रूपये	513 31	205 497	180 65	144 632	400 582
3	प्राप्त धनराशि	लाख रूपये	1536 00	2159 613	2227 482	1965 092	3297 47
4	कुल उपलब्ध धन	लाख रूपये	2049 31	2159 613	2408 132	2109 724	3695 052
5	कुल व्यय	लाख रूपये	1843 81 3	2211 06	2263 5	1659 142	3104 65
6	मानव दिवस स०	लाख					
	1 लक्ष्य		57 34	57 44	56 94	37 00	56 43
	2 पूर्ति		60 37	62 49	57 03	37 11	56 00

इन्दिरा आवास:

वर्ष 1993-94 मे 2098 आवासों के निर्माण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था जिसमे 1680 आवासों का निर्माण किया गया जो कि लक्ष्य का 100 00 प्रतिशत था।

स्पेशल कम्पोनेन्ट योजना :

इस योजना के अन्तर्गत गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले अनुसूचित जाति के परिवारो को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के उद्देश्य से आर्थिक सहायता के रूप मे विभिन्न आर्थिक योजनाओ के लिए बैको के माध्यम से प्राप्त ऋण की धनराशि पर अधिकतम रूपये तक अनुदान तथा अधिकतम 5000 रूपये तक मार्जिन मनी ऋण 4 प्रतिशत ब्याज दर पर दिया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत केवल अनुसूचित जाति के ही व्यक्तियो को लाभान्वित किया जाता है। इसके कार्यान्वयन का क्षेत्र ग्रामीण तथा शहरी दोनो क्षेत्रो मे ही है। शासन द्वारा सभी विभागो के बजट मे स्पेशल कम्पोनेन्ट योजना के लिए 20-30 प्रतिशत धनराशि का आवटन किया जाता है जिसका व्यय केवल अनुसूचित जाति के आर्थिक विकास कार्यक्रमो पर किया जाता है। अनुसूचित जाति के ऐसे जिनकी वार्षिक आय शहरी क्षेत्र मे 11800 रूपये तथा ग्रामीण क्षेत्र मे 11000 रूपये से अधिक न हो उन्हीं परिवारो को लाभान्वित किया जाता है।

जनपद इलाहाबाद मे यह योजना सामान्य रूप से समस्त 28 विकास खण्डो तथा शहरी क्षेत्र एव टाउन एरिया मे लागू है। जनपद के सभी विकास खण्डो मे इस योजना के अर्न्तगत सघन कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

जनपद इलाहाबाद के ग्रामीण क्षेत्रो मे स्पेशल कम्पोनेन्ट प्लान के अर्न्तगत वर्ष 1980-81 से वर्ष 1987-88 तक कुल 55 दुकाने निर्मित की गईं जिसमे से अधिकाश दुकानो को व्यॅवसाय करने हेतु आवटित किया जा चुका है।

वर्ष 1993-94 मे इस योजना के अर्न्तगत 5785 लोगो को लाभान्वित कराया गया तथा 1638 नि शुल्क बोरिंग कराई गई।

नोट - समस्त आकडे तथा तथ्य सामाजार्थिक समीक्षा, एव साख्यिकीय पत्रिका जनपद-इलाहाबाद से प्राप्त किये गये है।

अध्याय : 5

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा निक्षेप एकत्रीकरण

(इलाहाबाद जनपद के विशेष संदर्भ में)

"राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने कहा था कि सुदृढ सतुलित और दूरगामी विकास करना है तो हमे अपने ग्रामीण अचलो को सशक्त बनाना होगा व ग्रामो की आधारभूत सरचना को मजबूत बनाने वाले ससाधन उपलब्ध कराने होगे। भारतीय कृषि एव भारतीय कृषक पिछले कई दशको से विभिन्न प्रकार की समस्याओ के भवर-जाल मे फसकर रह गये है। उन बहुत सी आर्थिक समस्याओ मे से, जिन्होने हमारे गरीब किसानो को सर्वाधिक प्रताडित किया है, एक प्रमुख समस्या वित्त ससाधनो की अनुपलब्धता की है।"

ग्रामीण विकास भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार स्तम्भ है। नियोजन काल मे इस क्षेत्र के विकास के लिए अनेक योजनाए बनाई गईं, किन्तु बैकिग सहायता के अभाव मे ग्रामीण बेरोजगारी से निबटने तथा कृषि एव कुटीर उद्योगो के विकास मे वित्तीय बाधाए उत्पन्न हो रहीं थी। व्यावसायिक बैंक दूरस्थ ग्रामीण अचलो मे अपने व्यापार का विस्तार नहीं कर पा रहे थे। सामाजिक बैंकिग की अवधारणा (1967-68) तथा वृहद् बैंको का राष्ट्रीयकरण (1969) भी व्यावसायिक बैंको को निर्धन वर्ग के द्वार तक पहुँचाने मे अक्षम रहे। सहकारी बैंक यद्यपि इस क्षेत्र में कारगर सिद्ध हो सकते थे, किन्तु उनकी अपनी असफलताओ और कमियो के रहते ग्रामीण विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता था। ऐसी स्थिति मे ग्रामीण

अर्थव्यवस्था के चहुँमुखी विकास के लिए ग्रामीण बैको की स्थापना की आवश्यकता स्वातन्त्र्योत्तर काल मे निरन्तर अनुभव की जा रही थी।

ग्रामीण बैकिग अनुसधान समिति (1950) की रिपोर्ट के अनुसार भारत मे ग्रामीण बैंको की अवधारणा सर्वप्रथम बगाल नेशलन चैम्बर ऑफ कामर्स द्वारा प्रस्तुत की गयी। आर० जी० सरैया की अध्यक्षता मे गठित बैंकिग कमीशन (1972) ने पुन ग्रामीण बैंको की एक श्रृखला प्रारम्भ किए जाने का विचार प्रस्तुत किया, किन्तु राजीनीतिक पहल के अभाव मे इस क्षेत्र मे कोई प्रगति नहीं हो सकी ।

स्थापना के प्रमुख कारण:

1 इलाहाबाद जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों एव सीमान्त कृषकों की साख सम्बन्धी आवश्यकताओ को पूरा करने मे सहकारी ऋण सस्थाओं एव व्यापारिक बैंको ने पर्याप्त रूचि नहीं दिखाई, वाणिज्यिक बैक शहरोन्मुख दृष्टिकोण रखते थे।

2 ग्रामीण क्षेत्रो मे लघु कृषको, कारीगरो एव भूमिहीन मजदूरो की साख सम्बन्धी आवश्यकताओ को पूरा करने की अपेक्षा व्यापारिक बैंको मे कार्यरत शहरी मनोवृत्ति वाले कर्मचारियों से नहीं की जा सकती थी। अत ग्रामीण साख की आवश्यकताओ के लिए ग्रामीण दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों द्वारा सचालित बैंकों की आवश्यकता महसूस की गई ।

3 वाणिज्यिक बैको का वेतन ढॉचा काफी ऊँचा तथा प्रशासनिक लागत काफी अधिक थी। क्षेत्रीय ग्रमीण बैको की कोष लागत वाणिज्यिक बैको की तुलना मे बेहतर मानी गई।

4 वाणिज्यिक बैको मे कार्यरत स्टाफ मे ग्रामीण क्षेत्र की पृष्ठभूमि एव गहन अध्ययन का अभाव था, जो कि ग्रामीण क्षेत्रो को साख उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक था। इसलिए मात्र ग्रामीण क्षेत्र को वित्तीय सहायता मुहैया करवाने के लिए अलग वित्तीय सस्थान की आवश्यकता महसूस की गयी ।

इलाहाबाद जनप - में अ॰ सूचित व्यावसा[illegible] बैंकों की भूमिका:

सरकार ने बैक साख को कृषि और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रो की ओर मोडने की दृष्टि से निजी क्षेत्र के वाणिज्यिक बैकों पर "सामाजिक नियन्त्रण व्यवस्थाओ" को लागू किया किन्तु सरकार ने यह महसूस किया कि वित्त एव साख को कृषि एव प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रो की ओर मोडना समय की महती आवश्यकता है, और इस परिप्रेक्ष्य मे बैकिग व्यवस्था का राष्ट्रीयकरण करके ही कृषि एव ग्रामीण अचलों को पर्याप्त मात्रा मे ऋण व साख की इच्छित मात्रा मे आपूर्ति सम्भव है, किसी अन्य रीति से नहीं ।

छोटे एव कमजोर वर्ग के लोगो तक ऋण एव साख की व्यवस्था को सुलभ, समयानुकूल एव पर्याप्तता की दृष्टि से सरकार ने 19 जुलाई, 1969 को देश के प्रमुख वाणिज्यिक बैको का राष्ट्रीकरण कर दिया । देश के सम्पूर्ण बैकिग इतिहास मे राष्ट्रीयकरण एक सर्वाधिक क्रान्तिकारी घटना रहीं है।

बदलते वर्तमान आर्थिक परिवेश मे ये बैक सामाजिक बैकिग सिद्धान्त के मार्ग से हट गये तथा लाभ प्रदता को महत्व देने लगे और प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रो की वित्तीय सहायता काल्पनिक सिद्ध हुई।

जनपद मे अनुसूचित व्यावसायिक बैंको की शाखाए तथा जमा-ऋण प्रगति का विवरण तालिका (1) तथा (2) से स्पष्ट है ।

तालिका 5 1— इलाहाबाद जनपद में व्यावसायिक बैंकों का क्रमवार विवरण

क्रमाक	वर्ष	राष्ट्रीयकृत बैंकों की शाखायें	अन्य व्यावसायिक बैंकों की शाखायें
1	**2**	**3**	**4**
1	1979-80	134	15
2	1981-82	138	52
3	1983-84	147	54
4	1985-86	147	54
5	1987-88	147	54
6	1989-90	182	10
7	1990-91	182	10
8	1991-92	182	10
9	1992-93	182	10
10	1993-94	191	10

स्रोत उपरोक्त ऑकडे विभिन्न वर्षों मे लीड बैक अधिकारी द्वारा प्राप्त किये गये हैं।

तालिका 5 1 से राष्ट्रीयकृत बैकों तथा अन्य व्यावसायिक बैंकों की प्रगति स्पष्ट परिलक्षित होती है। 1979-80 के दौरान राष्ट्रीयकृत बैंको की शाखाए 134 थी तथा 1981-82 मे बढकर 138 हो गयीं जो कि मामूली प्रगति दर्शाती हैं । 1983-84 से 1987-88 तक इनकी संख्या 147 पर अपरिवर्तित रहीं इसके पश्चात 1989-90 से 1992-93 तक यह संख्या 182 तक स्थिर रही और 1993-94 में यह 191 तक हो

गयी। अन्य व्यावसायिक बैको की सख्या 1987-88 तक 54 हो गयी तथा इसके पश्चात इनकी कार्यकुशलता क्षीण होने से इन्हे बन्द कर दिया गया या राष्ट्रीय कृत बैको मे विलीन कर दिया गया । व्यावसायिक बैको की अधिकाश शाखाए नगरो या कस्बो तक सीमित रहीं तथा ग्रामीण इलाको से अपनी दूरी बढाती गयी ।

तालिका 5 2— इलाहाबाद जनपद में अनुसूचित व्यावसायिक बैंकों की ऋण, जमा प्रगति का विवरण

(धनराशि करोड में)

क्रमाक	वर्ष	जमा	ऋण	ऋण-जमा अनुपात (प्रतिशत में)
1	जून 1987	481 78	167 71	34 81
2	जून 1989	668 12	227 28	34 02
3	जून 1990	789 15	263 78	33 43
4	मार्च 1992	1029 90	353 41	34 31
5	मार्च 1993	1147 73	372 95	32 49
6	मार्च 1994	1294 42	406 04	31 37
7	मार्च 1995	1496 95	434 89	29 01
8	जून 1997	2040 50	528 04	25 87

स्रोत- बैंकिग स्टैटिस्टिक्स, भारतीय रिजर्व बैंक

तालिका 5 2 व्यावसायिक बैंकों की जमा ऋण की प्रगति क्रमवार दर्शाती है। तालिका से स्पष्ट है कि बैंकों की जमाओं में निरन्तर वृद्धि हुई है तथा इसकी तुलना

मे ऋणो मे वृद्धि नाममात्र है। ऋण-जमा अनुपात से स्पष्ट है कि इसका सर्वाधिक प्रतिशत 34 81 तथा न्यूनतम् 25 87 प्रतिशत है। ऋण-जमा अनुपात के निम्नतम् स्तर पर रहने से यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यावसायिकबैक ग्रामीण- विकास के सकल्प को पूर्ण नहीं कर सके ।

सहकारी बैंक:

भारत मे सहकारी बैक भी बैकिग के आधारभूत कार्य सम्पन्न करते है। किन्तु वे वाणिज्यिक बैको से भिन्न प्रकार के होते है। वाणिज्यिक बैको का गठन ससद द्वारा परित अधिनियम द्वारा किया गया है, जबकि सहकारी बैको की स्थापना अलग-अलग राज्यो द्वारा बनाए गए सहकारी समितियो के अधिनियमो द्वारा की गई है। भारत मे सहकारी बैको का गठन तीन स्तरो वाला है । राज्य सहकारी बैंक सम्बन्धित राज्य मे शीर्ष सस्था होती है। इसके बाद केन्द्रीय या जिला सहकारी बैक जिला स्तर पर कार्य करते है। तृतीय स्तर प्राथमिक ऋण समितियो का होता है। जो कि ग्राम स्तर पर कार्य करती है।

ॱलाहाबाद जिला सहकारी बैंक लि० की भूमिका :

तालिका 5 3— इलाहाबाद जनपद में सहकारी बैंक की शाखावार प्रगति

क्रमाक	वर्ष	शाखाओ की सख्या	वृद्धि/कमी
1	2	3	4
1	1915	1	-
2	1951	2	+1
3	1964	3	+1
4	1969	6	+3
5	1973	27	+21
6	1977	35	+8
7	1981	38	+3
8	1985	43	+5
9	1987	45	+2
10	1996	45	-

स्रोत *वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन 1995-96*

इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट कोआपरटिव बैक लि० इलाहाबाद ।

इलाहाबाद जिला सहकारी बैंक लि० की स्थापना 25 मई 1915 को हुई। तालिका से स्पष्ट है कि 1915 से 1950 तक इसकी एक मात्र प्रधान शाखा थी।

1969 तक शाखाओ मे नाममात्र की वृद्धि 6 तक पहुॅची । 1973 से शाखाओ की वृद्धि मे तीब्रता आयी और 1996 तक 45 की सख्या पर स्थिर हुई। स्थापना की प्राचीनता को देखते हुए यह सख्या बहुत ही अपर्याप्त है। वर्तमान समय मे नगरीय क्षेत्र मे 10, गगापार क्षेत्र मे 13, जमुनापार क्षेत्र मे 11 तथा द्वाबा क्षेत्र मे 11 शाखाए है। जनपद की विशालता को देखते हुए शाखाओ की यह एक असन्तोष-जनक स्थिति है।

तालिका 5 4— इलाहाबाद जिला सहकारी बैंक लि० की विभिन्न वर्षों की जमा-ऋण प्रगति का विवरण

(धनराशि लाख रूपयें में)

क्रमाक	वर्ष	जमा	ऋण	ऋण-जमा अनुपात प्रतिशत में
1	2	3	4	5
1	1985 (30 जून)	1289 10	1743 35	135 2
2	1986 (30 जून)	1587 52	1756 61	110 7
3	1987 (30 जून)	1937 48	1995 80	103 0
4	1988 (30 जून)	2357.20	2304 98	97 8
5	1989 (30 जून)	3248 60	2757 43	84 9
6	1990 (30 जून)	3764 66	3343 01	88 8
7	1991 (30 जून)	4513 56	2532 37	56 1
8	1992 (31मार्च)	4891 72	3632 46	74 3
9	1993 (31मार्च)	5370 84	4387 94	81 7
10	1994 (31मार्च)	5673 37	4637 71	81 7
11	1995 (31मार्च)	6460.23	5206 44	80 6
12	1996 (31मार्च)	7572 88	5833 92	77 0
योग इलाहाबाद जनपद		**48667 16**	**40132 02**	**82.5**

स्रोत · विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

इलाहाबाद जिलासहकारी बैक लि० इलाहाबाद

तालिका 5 4 से परिलक्षित होता है कि बैक की जमाओ मे निरन्तर वृद्धि हुई जो कि 1985 मे 1289 10 लाख रूपये से बढकर 31 मार्च 1996 तक 7572 88 लाख रू० हो गयी। इस प्रकार जमाओ मे 5 गुना से भी अधिक वृद्धि हुई। इसी प्रकार ऋणो मे भी 1985 की तुलना मे 1996 मे 3 गुना से अधिक वृद्धि हुई। ऋण-जमा अनुपात न्यूनतम् 1991 मे 56 1 प्रतिशत तथा अधिकतम 1985 मे 135 2 प्रतिशत रहा। ऋण-जमा अनुपात से स्पष्ट है कि बैक जमा के अनुसार अच्छा ऋण वितरण किया हैं, लेकिन ये ऋण अधिकतर इनके सदस्यो को प्राप्त हुआ तथा इनका कार्य बहुत कुछ साहूकारो की भॉति रहा। इस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समृद्ध करने मे इनका योगदान नकारात्मक सिद्ध हुआ ।

इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की स्थापना :

प्रस्तावना:-

इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 23 08 1980 को क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम 1976 की धारा (3) के अन्तर्गत प्रवर्तक बैंक, बैंक आफ बडौदा, केन्द्र सरकार एव राज्य सरकार के सयुक्त उपक्रम से स्थापित हुआ, पूँजी में अशदान का क्रमश अनुपात 35 50.15 था।

प्रादेशिक ग्रामीण बैंको की स्थापना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रो की अर्थव्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए कृषि, व्यापार उद्योग एव अन्य उत्पादक कार्यों

के विकास मे लगे विशेषतया लघु एव सीमान्त कृषक, खेतिहर मजदूर, शिल्पकार, लघुउद्योग धन्धो आदि को आर्थिक सहायता व अन्य बैकिग सुविधाये प्रदान करना है। इन्हीं उद्देश्यो की पूर्ति के निमित्त इलाहाबाद जनपद मे इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक, इलाहाबाद की स्थापना दिनाक 23 अगस्त, 1980 को हुई ।

कार्यक्षेत्र :-

बैक का कार्यक्षेत्र जनपद इलाहाबाद है, जिसमे 9 तहसीले और 28 विकास खण्ड है। सम्पूर्ण कार्यक्षेत्र को भूमि सरचना, भूमि की किस्म, कृषि एव जलवायु के आधार पर तीन खण्डो मे विभाजित किया गया है, जिनको साधारणतया गगापार, यमुनापार एव द्वाबा के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक खण्ड मे तीन तहसीले है। ग्रामीण क्षेत्रो की लगभग 83 प्रतिशत जनसख्या कृषि पर निर्भर है। जनपद की औसत वर्षा 100 मि० मी० है। जनपद की कुल कृषि योग्य भूमि का लगभग 47 प्रतिशत जोत 2 हेक्टेयर से नीचे हे जिन पर लघु एव सीमान्त कृषको द्वारा खेती की जाती है ओर जिनकी सख्या जनपद की कृषक आबादी का 69 प्रतिशत है।

बैंक ने कृषको मुख्यत लघु एव सीमान्त श्रेणी के लिए कृषि उत्पादन एव रोजगार को बढावा देने के लिए कई कदम उठाए है, यथा उनके नजदीक क्षेत्रो में शाखाए खोलकर कृषि उत्पादन हेतु वित्त पोषण एवं कृषि से सम्बन्धित व्यवसायों द्वारा आय को बढाना है।

निदेशक मण्डल :-

भारत सरकार क्षेत्रीय ग्रामीण बैक अधिनियम 1976 की धारा (9) के अन्तर्गत निदेशक मण्डल के सदस्यो की नियुक्ति करती है। इसके अन्तर्गत अध्यक्ष सहित, केन्द्र सरकार द्वारा नामित सदस्य होते है। वर्तमान मे बैक के अध्यक्ष डा० पी० के० खन्ना है।

अंश पूँजी:-

बैक की अधिकृत पूँजी 1 करोड रू० है तथा प्रदत्त पूँजी मे विभिन्न वर्षों मे परिवर्तन होता रहा है। प्रदत्त समस्त अशपूँजी का अशदान भारत सरकार, बैक आफ बड़ौदा एव उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा क्रमश 50 35 i5 के अनुपात मे किया गया है। निम्न तालिका से अश पूँजी तथा प्रदत्त पूँजी द्रष्टव्य है।

तालिका 5 5— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की अंश पूँजी का विवरण

क्रमाक	वर्ष	अधिकृत पूँजी रूपया	प्रदत्त पूँजी रूपया
1	2	3	4
1	1980-1988-89	10000000 00	2500000 00
2	1989-90 1991-92	10000000 00	5000000 00
3	1992-93	10000000 00	6250000 00
4	1993-94	10000000 00	6625000 00
5	1994-95	10000000 00	7500000 00
6	1995-96	10000000 00	7500000 00
7	1996-97	10000000 00	10000000 00

स्रोत- विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन (क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद)

तालिका 5 5 से स्पष्ट है कि बैंक की अधिकृत पूँजी 1 करोड रू० है। प्रदत्त पूँजी 1980 से 1988-89 तक 25 लाख रू० तथा 1989-90 से 1991-92 तक 50 लाख रू० रही है। इसी प्रकार भावी वित्तीय वर्षों मे भी वृद्धि हुई है। 1995-96 मे प्रदत्त पूँजी बढकर 75 लाख हो गयी तथा दिनाक 31 03 97 को बैंक की प्रदत्त पूँजी बढाकर 1 करोड किया गया क्योकि सभी अश धारकों से उनके अनुपात के अनुसार 25 लाख की अतिरिक्त पूँजी प्राप्त हो गयी। विभिन्न वर्षों मे बैंक के व्ययों कों पूरा करने के लिए प्रदत्त पूँजी में परिवर्धन किया गया है।

तालिका 5.6— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की प्रगति का क्रमवार विवरण

(धनराशि हजार रू० में)

क्र०	विवरण	1980	1982	1984	1986	1988-89	1989-90	1990-91	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1	जमा धनराशि	248	15770	49236	93625	138865	162372	183338	206233	227038	255973	249866	258974	302813
	(क) खाता सख्या	749	15334	49504	107536	215771	310797	417509	469480	579470	730607	898110	1100730	1455568
	(ख) धनराशि													
2	अग्रिम	-	2752	13527	31975	54223	61434	73745	74356	75585	75935	75555	75579	73929
	(क) खाता सख्या	-	7575	29711	79808	151376	204989	279878	324356	354890	396644	475479	562163	579283
	(ख) धनराशि													
3	प्रति खाता जमा धनराशि	3	0 972	1 005	1 148	1 553	1 914	02	02	02	03	03	04	05
4	प्रति खाता अग्रिम धनराशि	-	2 752	2 196	2 495	2 902	3 336	04	04	05	05	06	07	08
5	शाखाओं की सख्या	1	28	53	76	85	92	92	92	92	92	92	92	92
6	प्रतिशाखा अग्रिम धनराशि	749	547 64	934 04	1414 95	2538 48	3378.23	4538	5103	6298	7941	9762	11964	15821
7	प्रति शाखा अग्रिम धनराशि		270 53	560 58	1050 11	1851 48	2228 14	3042	3526	3858	4311	5168	5702	6296
8	अग्रिम जमा अनुपात		49 4 प्रतिशत	60 0 प्रतिशत	74 2 प्रतिशत	72 9 प्रतिशत	65 9 प्रतिशत	67 0 प्रतिशत	69 0 प्रतिशत	61 24 प्रतिशत	54 28 प्रतिशत	52 94 प्रतिशत	51 07 प्रतिशत	39 79 प्रतिशत

स्रोत - *विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन*
इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

जमा संवृद्धि.-

तालिका से स्पष्ट है कि 1980 मे बैक की स्थापना वर्ष होने के कारण सबसे कम 7 49 लाख रू० जमा हुआ। इसके पश्चात के वर्षों मे जमा धनराशि मे निरन्तर सवृद्धि हुई। विगत कुछ वर्षों मे जमा सग्रह मे वृद्धि इस प्रकार है।

(अवशेष ३१ मार्च का)

(रूपये करोड में)

क्रमाक		90 91	91 -92	92 -93	93 94	94 -95	95 -96	96 97
1	जमा राशि	41 75	46 95	57 95	73 06	89 81	110 07	145 56
2	विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि	34 3%	12 5%	23 4%	26 1%	22 9%	22 6%	32 2%

उपरोक्त प्रतिशत वृद्धि से यह स्पष्ट है कि 1990-91 मे सर्वाधिक 34 3 प्रतिशत की वृद्धि तथा न्यूनतम् 12 5 प्रतिशत की वृद्धि 1991-92 मे रही है । इससे निक्षेप मे उतार चढाव परिलक्षित होता है।

जमा खाता संख्या :-

बैक के जमा खातो की सख्या मे स्थापना वर्ष को छोडकर भावी वित्तीय वर्षों मे निरन्तर वृद्धि हुई है विगत कुछ वर्ष का विवरण इस प्रकार है।

क्र०	विवरण	90 91	91 92	92 93	93 -94	94 95	95 96	96 -97
1	खाता सख्या	183338	206233	227038	255973	249866	258974	302813
2	विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि	12 91%	12 48%	10 08%	12 74%	(-) 2 4%	3 64%	16 92%

उपरोक्त से परिलक्षित होता है कि 1994-95 मे वृद्धि ऋणात्मक रही तथा अन्य वर्षों मे विगत वर्ष की तुलना मे वृद्धि हुई है।

अग्रिम :-

तालिका से स्पष्ट है कि बैंक ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुदृढता लाने के लिए लक्ष्य के अनुकूल ऋण प्रदान किया है।

31 03 1997 को बैक अग्रिमो की अदत्त राशि 57 93 करोड थी जबकि लक्ष्य 58 करोड निर्धारित था इस प्रकार लक्ष्य से 7 00 लाख की भिन्नता रहीं। गत 3 वर्षों मे अग्रिम अदत्त राशि की प्रगति निम्नवत् है ।

(रू० करोड मे)

क्र० स०	विवरण	अदत्त राशि		
		31.03.95	**31.03.96**	**31.03.97**
1	खातो की सख्या	75555	75579	73929
2	अदत्त राशि	50 62	56 22	57 93
3	विगत वर्ष दर प्रतिशत	20 50 %	11 06%	3 04 %

साख- जमा अनुपात.-

तालिका से परिलक्षित होता है कि प्रारम्भिक वर्षों मे साख-जमा अनुपात मे निरन्तर वृद्धि हुई है तथा बाद के वर्षों मे ऋणो मे अत्यधिक सतर्कता बरतने से यह अनुपात कम हुआ है।

साख जमा अनुपात की विगत 6 वर्षों की प्रगति निम्नवत है।

1	**वर्ष**	**91-92**	**92-93**	**93-94**	**94-95**	**95-96**	**96-97**
2	साख-जमा अनुपात	69 00 %	61 24 %	54 28 %	52 94 %	51 07	39 79 %

बैंक द्वारा ऋण प्रदान करने मे सतर्कता की प्रवृत्ति के कारण साख जमा अनुपात गिरे है साथ ही अग्रिमो मे वृद्धि, जमा वृद्धि की अपेक्षा कम रही है।

शाखा विस्तारण:-

दिनाक 31.03 1997 को बैंक मे 91 शाखाये एक उपशाखा तथा दो विस्तार प-ल कार्यरत थें। इस वर्ष बैंक ने दो विस्तार पटल विकास भवन इलाहाबाद एव

कोरॉव तहसील मे स्थापित की तथा अपनी पथरा शाखा को कोहडार घाट शाखा की उपशाखा मे परिवर्तित किया ।

बैक अपनी 92 शाखाओ (उपशाखा सहित) एव दो विस्तार पटलो द्वारा इलाहाबाद जिलो के 28 विकास खण्डो एव 1653 ग्रामो म बैककारी सुविधाये उपलब्ध कराने हेतु समर्पित है।

शाखाओं का क्षेत्रवार वर्गीकरण :-

क्रमाक	क्षेत्रवार वर्गीकरण	शाखाओं की सख्या	विस्तार पटल की सख्या
1	शहरी शाखाये	1	1
2	अर्द्धशहरी शाखाये	-	-
3	ग्रामीण शाखाये (उपशाखा सहित)	91	1
	योग	**92**	**2**

बैंक की शाखायें तीनों क्षेत्रों में इस प्रकार हैं ।

क्रमाक	क्षेत्र	शाखा
1	गगापार	40
2	यमुनापार	26
3	द्वाबा	26
	योग	**92**

तालिका से स्पष्ट है कि 1990 से 1997 (31 मार्च) तक बैक की शाखा 92 पर अपरिवर्तित रहीं। नयी अनुज्ञानीति के अन्तर्गत अभी तक बैंक को शाखा विस्तारण के लिए कोई नयी अनुज्ञा नहीं गयी है।[1]

प्रति खाता जमा तथा अग्रिम धनराशि :-

तालिका से स्पष्ट है कि प्रति खाता जमा धनराशि प्रति खाता अग्रिम धनराशि से कम है इसका कारण है कि प्रति खाते पर जमा धनराशि से अधिक ऋण प्रदान करना ।

विगत 5 वर्षों की स्थिति इस प्रकार है।

(धनराशि हजार रूव में)

वर्ष	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996-97
प्रति खाता जमा	02	03	03	04	05
प्रति खाता अग्रिम	05	05	06	07	08

प्रति शाखा जमा तथा अग्रिम धनराशि:-

तालिका से परिलक्षित होता है कि प्रति शाखा जमा राशि प्रति शाखा अग्रिम राशि से अधिक तथा दोनों मे आगामी वर्षों मे निरन्तर वृद्धि हुई है। इस प्रकार एक

1 नरसिम्हन समिति - 1991 बैंकिग प्रणाली की पुनर्संरचना

शाखा पर जमा धनराशि से कम ऋण प्रदान किया गया है जो कि बैकिग व्यवस्था की कुशलता की परिचायक है।

विगत 5 वर्षों की स्थिति इस प्रकार है।

(धनराशि हजार रूव में)

वर्ष	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96	1996 97
प्रति शाखा जमा	6298	7941	9762	11964	15821
प्रति शाखा अग्रिम	3858	4311	5168	5702	6296

गंगापार क्षेत्र :

तालिका 5.7— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्ड-वार जमा-ऋण प्रगति का विवरण (31 मार्च की स्थिति)

(धनराशि हजार रूव में)

क्रमांक	विकास खण्ड	1993-94			1994-95			1995-96			1996-97		
		जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिश में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	हडिया	29699	15100	50 84	37071	13830	37 30	40379	21409	53 02	51063	21978	43 04
2	धनूपुर	25213	13440	53 30	27599	17535	63 53	34587	19971	57 74	41765	20521	49 13
3	प्रताप पुर	41124	13805	33 56	47480	16963	35 72	59572	17838	29 94	69821	18334	26 25
4	सैदाबाद	23701	14735	62 17	27367	18722	68 41	36813	19825	53 85	43458	20812	47 88
5	बहादुर पुर	51014	25111	49 22	60132	24286	40 38	7699	32043	41 61	94405	33111	35 07
6	बहरिया	28055	12592	44 88	34425	16321	47 41	44554	18236	40 93	52274	18506	35 40
7	फूलपुर	12805	4936	38 54	14520	6954	47 89	19411	7202	37 10	21916	6904	31 50
8	कौडिहार	58238	14579	25 03	71601	17932	25 04	92167	20117	21 82	118129	19722	16 69
9	होलागढ	12461	5105	40 96	15008	5571	37 12	21220	5663	26 68	27053	6286	23 23
10	सोराव	20083	8768	43 65	24201	10324	42 65	33395	11106	33 25	40723	10968	26 93
11	मउ आइमा	28563	10721	37 53	34469	12509	36 29	44867	13280	29 59	55635	13832	24 86
12	**योग (गंगापार)**	**330956**	**138892**	**41 96**	**393873**	**160947**	**40 86**	**503960**	**186690**	**37 04**	**616242**	**190974**	**30 99**

स्रोत : विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक इलाहाबाद

तालिका 5 7 गगापार क्षेत्र से सम्बन्धित विकास खण्डो की जमा ऋण प्रगति दर्शाती है। तालिका से स्पष्ट है कि कौडिहार विकास खण्ड की जमा धनराशि सभी विकास खण्डो की जमा राशि सभी विकास खण्डो से अधिक है। तथा होलागढ और फूलपुर विकास खण्डो की जमा राशि अन्य विकास खण्डो से कम है। ऋण जमा अनुपात सबसे कम कौडिहार विकास खण्ड का (25 03 प्रतिशत, 25 04 प्रतिशत, 21 82 प्रतिशत, 16 69 प्रतिशत) रहा है। इसका कारण यह है कि इस विकास खण्ड के अन्तर्गत जमा पर ऋण कम वितरित किया गया है। गगापार क्षेत्र की निक्षेपो मे निरन्तर वृद्धि हुई तथा 1993-94 मे 330956 हजार रूपये से बढकर 1996-97 मे 616242 हजार रूपये हो गया है जो 1993 की तुलना मे 86 2 प्रतिशत वृद्धि दर्शाती है ।

यमुनापार क्षेत्र :

तालिका 5.8— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्ड-वार जमा-ऋण प्रगति का विवरण (31 मार्च की स्थिति)

(धनराशि हजार रूव में)

क्रमांक	विकास खण्ड	1993-94			1994-95			1995-96			1996-97		
		जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिश में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	उरूवा	38917	18991	48-79	48367	21848	45-17	52780	23085	43 73	67936	24731	36 40
2	कोराव	24856	23055	92-75	28861	23722	82-19	36361	32869	90 39	48270	31829	65 93
3	माण्डा	32025	9998	31-21	35980	13516	37-56	41797	14068	33 65	53611	14153	26 39
4	मेजा	6210	3485	56-11	6754	5455	80-76	9555	6644	69 46	11127	7450	66 95
5	शकरगढ	24948	11879	47-61	29890	16439	54-99	40245	20312	50 47	52593	20574	39 11
6	जसरा	18529	14412	77-78	24522	17870	72-87	30984	19141	61 77	37889	19974	52 71
7	चाका	8095	5607	69-26	10513	8114	77-18	14238	9484	66 61	19204	10716	55 80
8	कौधियारा	15673	15826	100-97	20944	20937	99-96	27583	24758	89 75	32774	25259	77 07
9	करछना	23930	40969	171-20	31172	42250	135-53	40624	45028	110 84	51579	50246	97 41
10	**योग यमुनापार**	**193183**	**144222**	**74-65**	**237003**	**170151**	**71-79**	**294167**	**195389**	**66 42**	**378983**	**204932**	**54 65**

स्रोत:- विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

तालिका से स्पष्ट है कि यमुनापार क्षेत्र की उरूवा विकास खण्ड की जमा के सन्दर्भ मे स्थिति अधिक सुदृढ है। चारो वित्तीय वर्षों मे जमा राशि मे निरन्तर वृद्धि हुई है । तथा 1993-94 की तुलना मे 1996-97 मे जमा राशि मे 74 57 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ऋण जमा अनुपात करछना विकास खण्ड का प्रारम्भ के तीन वर्षों मे शत प्रतिशत से अधिक (171 20%, 135 53%, 110 84%) रहा है इसका कारण है जमा से अधिक अग्रिम प्रदान करना। शाखाए जमा से अधिक अग्रिम मुख्य शाखा से उधार लेकर देती है। इसी प्रकार सबसे कम ऋण जमा अनुपात माण्डा विकास खण्ड का (31 21 प्रतिशत, 37 56 प्रतिशत, 33 65 प्रतिशत, 26 39 प्रतिशत) रहा है, इससे प्रतीत होता है कि माण्डा विकास खण्ड मे जमा की अपेक्षा ऋण अन्य विकास खण्डो से कम प्रदान किया गया है। यमुनापार क्षेत्र की जमा धनराशि 1993-94 मे 193183 हजार रूपये थी तथा 1996-97 मे 374983 हजार जो गयी। इस प्रकार 1993-94 की अपेक्षा 1996-97 की जमा राशि मे 94 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

द्वाबा क्षेत्र:

तालिका 5.9— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्ड-वार जमा-ऋण प्रगति का विवरण (31 मार्च की स्थिति)

(धनराशि हजार रूव में)

क्रमांक	विकास खण्ड	1993-94			1994-95			1995-96			1996-97		
		जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिश में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत मे
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**
1	इला० नगर	57880	15054	26 00	73698	28961	39 29	56544	36863	65 19	163279	40013	24 50
2	मूरत गज	13613	8872	65 17	19704	11435	58 05	23193	12821	55 27	27685	12928	46 69
3	चायल	45339	34496	76 11	57781	41475	71 77	70536	52556	74 50	90732	55203	60 84
4	नेवादा	9488	16460	173 48	13908	14115	101 48	21717	25295	116 47	25171	22474	89 28
5	सिराथू	18182	10983	60 40	21626	14202	65 67	30373	16103	53 01	36941	17035	46 11
6	कड़ा	24725	15322	61 96	32923	19227	58 39	38389	19959	51 99	46684	18683	40 02
7	मझन पुर	23791	6381	26 82	29156	8530	29 25	37807	9781	25 87	43449	10330	23 77
8	कौशाम्बी	10906	4653	42 66	14810	4947	33 40	18834	5100	27 07	22947	5237	22 82
9	सरसवा	2564	1309	51 05	3628	1489	41 04	5210	1606	30 82	7455	1474	19 77
10	**योग (द्वाबा)**	**206468**	**113530**	**54 98**	**267234**	**144381**	**54 02**	**302603**	**180084**	**59.51**	**464343**	**183377**	**39 49**

स्रोत - विभिन्न वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक इलाहाबाद

तालिका 5 9 से स्पष्ट है कि इलाहाबाद नगर की जमा राशि मे अन्य विकास खण्डो की अपेक्षा निरन्तर वृद्धि हुई है तथा 1993-94 की तुलना मे 1996-97 मे 182 09 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। 1993-94 मे इलाहाबाद नगर की जमा 57880 हजार रूपये थी जो 1996-97 मे बढकर 163279 हजार हो गयी। 182 09 की वृद्धि विकास भवन मे विस्तार पटल खोलने के कारण हुई है जिसमे बहुत सी सरकारी जमाए आती है । सबसे कम जमा धनराशि सरसवा विकास खण्ड का रहा है। सर्वाधिक ऋण जमा अनुपात नेवादा विकास खण्ड का रहा है। तथा प्रारम्भ मे तीन वर्षों मे शत प्रतिशत से अधिक रहा हैं द्वाबा क्षेत्र की जमाओ मे निरन्तर वृद्धि हुई है तथा 1993-94 की तुलना मे 1996-97 मे 124 89 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

तालिका 5.10— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की तहसील-वार जमा-ऋण प्रगति का विवरण (31 मार्च की स्थिति)

(धनराशि हजार रूव मे)

क्रमांक	विकास खण्ड	1993-94			1994-95			1995-96			1996-97		
		जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिश में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	हडिया	119737	58080	48 50	136517	67050	49 11	171351	79043	46 12	206107	81645	39 61
2	फूलपुर	90874	42639	46 92	110077	50561	45 93	141670	57481	40 57	168595	58521	34 71
3	सोराव	120345	38173	31 71	147279	43336	29 42	190939	50166	26 27	241540	50808	21 03
4	करछना	39603	50795	128 26	57116	63842	111 77	68207	71963	105 50	84353	75505	89 51
5	मेजा	101008	58529	57 94	114962	64541	56 14	140493	74489	53 01	180944	78163	43 19
6	बारा	52572	34898	66 38	64925	41768	64 33	85467	48937	57 25	109686	51264	46 73
7	चायल	125543	80882	64 42	165732	95986	57 91	171990	127535	74 15	306867	130618	42 56
8	सिराथू	42907	20305	47 32	54549	33429	61 28	68762	36062	52 44	83625	35718	42 71
9	मझनपुर	38018	12343	32 46	46953	14966	31 87	61851	16487	26 65	73851	17041	23 07
10	**योग इला० जनपद**	**730607**	**396644**	**54.28**	**898110**	**475479**	**52 94**	**1100730**	**562163**	**51.07**	**1455568**	**579283**	**39 79**

स्रोत - *तालिका 7,8 एव 9*

तालिका 5 10 से स्पष्ट है कि जनपद की चायल तहसील का प्रारम्भ के दो वर्षों मे जमा राशि अन्य तहसीलो से अधिक रहा । 1995-96 मे सोराव का सर्वाधिक रहा तथा 1996-97 मे पुन चायल का हो गया। सर्वाधिक कम जमा राशि चारो वर्षों मे मझनपुर तहसील का रहा है। सर्वाधिक ऋण-जमा अनुपात करछना तहसील का रहा तथा प्रारम्भ के तीन वर्षों मे शत-प्रतिशत से अधिक रहा है। इसका आशय यह हुआ है जमा से अधिक अग्रिम प्रदान किया गया है। ऐसी दशा मे मुख्य शाखा से उधार प्राप्त किया जाता है। 1993-94 मे इलाहाबाद जनपद की कुल जमा राशि 730607 हजार रूपये थी जो 1996-97 मे बढकर 1455568 हजार रूपये हो गयी इस प्रकार 99 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

तालिका 5.11— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की क्षेत्र-वार जमा-ऋण प्रगति का विवरण (31 मार्च की स्थिति)

(धनराशि हजार रूव में)

क्रमांक	विकास खण्ड	1993-94			1994-95			1995-96			1996-97		
		जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिश में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में	जमा	ऋण	ऋण जमा अनुपात प्रतिशत में
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
1	गंगापार	330956 (45.3)	138892 (35.0)	41 96	393873 (43.9)	160947 (33.8)	40.86	503960 (45.8)	186690 (33.3)	37 04	616242 (42 3)	190974	30 99
2	यमुनापार	193183 (26.4)	144222 (36.4)	74.65	237003 (26.4)	170151 (35.8)	71.79	294167 (26.7)	195389 (34.8)	66 42	374983 (25 8)	204932 (35.4)	54.65
3	द्राबा	206468 (28 3)	113530 (28.6)	54.98	267234 (29.7)	144381 (30.4)	54.02	302603 (27.5)	180084 (32.0)	59.51	464343 (31 9)	183377 (31.6)	39 49
4	इलाहाबाद जनपद	730607	396644	54.28	898110	475479	52 94	1100730	562163	51 07	1455568	579283	39 79

स्रोतः- तालिका 7, 8, एवं 9

नोटः- (कोष्ठक में दिये गये आँकड़े कुल का प्रतिशत दर्शाते है।)

तालिका 5-11 से स्पष्ट है कि गगापार क्षेत्र की जमा राशि में संवृद्धि चारों वर्षो में सर्वाधिक रही तथा यमुनापार में सबसे कम रही। जनपद के कुल जमा में गंगापार का भाग सर्वाधिक (45.3%, 43.9%, 45.8% तथा 42.3%) है। ऋणों का सबसे कम प्रतिशत द्राबा का (28.6%, 30 4%, 32 0% तथा 31 6%) है। ऋण-जमा अनुपात तीनों क्षेत्रों में सर्वाधिक यमुनापार क्षेत्र का (74.65%, 71.79%, 66.42% तथा 54 65%) है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यमुनापार क्षेत्र में जमा की अपेक्षा ऋण अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक दिया गया है।

गंगापार क्षेत्र :

तालिका 5.12 — इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्डवार जमा प्रगति का विवरण (प्रतिशत वृद्धि में) 31 मार्च की स्थिति

(धनराशि हजार रूपये में)

क्रम सं०	विकास खण्ड	वर्ष 1993-94	वर्ष 1994-95	वर्ष 1995-96	वर्ष 1996-97
1	2	3	4	5	6
1.	हंडिया	29699	37071 (24.82)	40379 (8.92)	51063 (26.45)
2.	धनूपुर	25213	27599 (9.46)	34587 (25.31)	41765 (20.75)
3.	प्रतापपुर	41124	47480 (15.45)	59572 (25.46)	69821 (17.20)
4.	सैदाबाद	23701	27367 (15.46)	36813 (34.51)	43458 (18.05)
5.	बहादुर पुर	51014	60132 (17.87)	76995 (28.04)	94405 (22.61)
6.	बहरिया	28055	34425 (22.70)	44554 (29.42)	52274 (17.32)
7.	फूलपुर	12805	14520 (13.39)	19411 (33.68)	21916 (12.90)
8.	कौड़िहार	58238	71601 (22.95)	92167 (28.72)	118129 (28.16)
9.	होलागढ़	12461	15008 (20.43)	21220 (41.39)	27053 (27.48)
10.	सोरांव	20083	24201 (20.50)	33395 (37.99)	40723 (21.94)
11.	मउ-आइमा	28563	34469 (20.67)	44867 (30.16)	55635 (23.99)
	(योग गंगापार)	**330956**	**393873 (19.01)**	**503960 (27.94)**	**616242 (22.27)**

स्रोत : इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

नोट : कोष्ठकों में दिये गये आँकड़े विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।

तालिका 5 12 से स्पष्ट है कि विकास खण्ड स्तर पर भी ग्रामीण बैक के निक्षेपो मे विगत वर्ष की अपेक्षा वृद्धि हुई है। वृद्धि की दर कम या अधिक हो सकती है लेकिन किसी भी स्थिति मे ऋणात्मक नहीं है। हडिया विकास-खण्ड मे वर्ष 1995-96 मे विगत वर्ष की तुलना मे निक्षेपो मे सबसे कम वृद्धि 8 92 प्रतिशत की रही जबकि सबसे अधिक 41 39 प्रतिशत की वृद्धि होलागढ विकास खण्ड मे रही है। इसी प्रकार सभी विकास खण्डो` निक्षेपो मे विगत वर्ष की अपेक्षा वृद्धि हुई है। इसके परिणाम स्वरूप गगापार क्षेत्र के निक्षेपो मे विगत वर्ष की अपेक्षा क्रमश 19 01 % , 27 94 % तथा 22 27 % की वृद्धि हुई है।

यमुनापार क्षेत्र:

तालिका 5.13— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्डवार जमा

प्रगति का विवरण (प्रतिशत वृद्धि मे) 31 मार्च की स्थिति

(धनराशि हजार रूपये मे)

क्रम स०	विकास खण्ड	वर्ष 1993-94	वर्ष 1994-95	वर्ष 1995-96	वर्ष 1996-97
1	2	3	4	5	6
1	उरूवा	38917	48367 (24 28)	52780 (9 12)	67936 (28 71)
2	कोराव	24856	28861 (16 11)	36361 (25 98)	48270 (32 75)
3	माण्डा	32025	35980 (12 34)	41797 (16 16)	53611 (28 26)
4	मेजा	6210	6754 (8 76)	9555 (41 47)	11127 (16 45)
5	शकर गढ	24948	29890 (19 80)	40245 (34 64)	52593 (30.68)
6	जसरा	18529	24522 (32 34)	30984 (26 35)	37889 (22 28)
7	चाका	8095	10513 (29 87)	14238 (35 43)	19204 (34 87)
8	कौधियारा	15673	20944 (33 63)	27583 (31 69)	32774 (18 81)
9	करछना	23930	31172 (30 26)	40624 (30 32)	51579 (26 96)
10.	**योग (यमुना पार)**	**193183**	**237003 (22.68)**	**294167 (24.11)**	**374983 (27.47)**

स्रोत इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक इलाहाबाद

नोट (कोष्ठकों मे दिये गये ऑकडे विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।)

गगापार क्षेत्र के विकास खण्डो की भॉति यमुनापार क्षेत्र के विकास खण्डो के निक्षेपो मे सन्तोषजनक वृद्धि हुई है। उरूवा विकास खण्ड मे सबसे कम 9 12 प्रतिशत की वृद्धि रही जबकि अन्य वर्षो मे अच्छी वृद्धि रही है। कोराव तथा माण्डा विकास खण्ड मे निक्षेपो की वृद्धि वर्धमान दन से रही है। सर्वाधिक वृद्धि दर 41 47 प्रतिशत 1995-96 मे मेजा विकास खण्ड का रहा। अन्य विकास खण्डो क्रमश शकरगढ, जसरा, चाका, कौधियारा तथा करछना के निक्षेपो मे वृद्धि उतार चढाव के साथ सन्तोष जनक रही। इसके परिणाम स्वरूप समस्त यमुनापार क्षेत्र के निक्षेपो मे क्रमश 22 68 %, 24 11 % तथा 27 47 प्रतिशत की वृद्धि रही।

द्वाबा क्षेत्र :

तालिका 5.14— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की विकास खण्डवार जमा प्रगति का विवरण (प्रतिशत वृद्धि में) 31 मार्च की स्थिति

(धनराशि हजार रूपये में)

क्रम सं०	विकास खण्ड	वर्ष 1993-94	वर्ष 1994-95	वर्ष 1995-96	वर्ष 1996-97
1	2	3	4	5	6
1	इलाहाबाद नगर	57880	73698 (27 32)	56544 - (23 27)	163279 (188 76)
2	मूरतगज	13613	19704 (44 74)	23193 (17 70)	27865 (19 37)
3	चायल	45319	57781 (27 49)	70536 (22 07)	90732 (28 63)
4	नेवादा	9488	13908 (46 58)	21717 (56 14)	25171 (15 90)
5	सिराथू	18182	21626 (18 94)	30373 (40 44)	36941 (21 62)
6	कडा	24725	32923 (33 15)	38389 (16 60)	46684 (21 60)
7	मझनपुर	23791	29156 (22 55)	37807 (29 67)	43449 (14 91)
8	कौशाम्बी	10906	14810 (35 79)	18834 (27 17)	22947 (21 83)
9	सरसवा	2564	3628 (41 49)	5210 (43 60)	7455 (30 11)
10	**योग (द्वाबा)**		**267234 (29.43)**	**302603 (13.23)**	**464343 (53.44)**

स्रोत इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

नोट (कोष्ठको में दिये गये ऑकडे विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।)

द्वाबा क्षेत्र की तालिका से यह स्पष्ट है कि निक्षेपो मे वृद्धि विगत तालिकाओ की भॉति ही है। इसके अर्न्तगत एक मुख्य विशेषता यह हे कि 1995-96 मे इलाहाबाद नगर के निक्षेपो मे ऋणात्मक कमी आयी तथा इसके पश्चात 1996-97 मे 188 76 प्रतिशत की वृद्धि हुई अन्य विकास खण्डो मे उतार चढाव की दर बनी रही। इस प्रकार समस्त द्वाबा क्षेत्र के निक्षेपो मे क्रमश 29 43%, 13 23 %, तथा 53 44 की प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

तालिका 5.15— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की तहसील वार जमा प्रगति का विवरण (प्रतिशत वृद्धि में) 31 मार्च की स्थिति

(धनराशि हजार रूपये में)

क्रम स०	विकास खण्ड	वर्ष 1993-94	वर्ष 1994-95	वर्ष 1995-96	वर्ष 1996-97
1	2	3	4	5	6
1	इलाहाबाद नगर	119737	136517 (14 01)	171351 (25 51)	206107 (20 28)
2	फूलपुर	90874	110077 (21 13)	401670 (28 70)	168595 (19 00)
3	सोराव	120345	147279 (22 38)	190939 (29 64)	241540 (26 50)
4	मेजा	39603	57116 (44 22)	68207 (19 41)	84353 (23 67)
5	बारा	101008	114962 (13 81)	140493 (22 00)	180944 (28 79)
6	बारा	52575	64925 (23 49)	85467 (31 63)	109686 (28 33)
7	चायल	125543	165732 (32 01)	171990 (3 77)	306867 (78 42)
8	सिराथू	42907	54549 (27 13)	68762 (26 05)	83625 (21 61)
9	मझनपुर	38018	46953 (23 50)	61851 (31 72)	73851 (19.40)
10	**योग (इलाहाबाद जनपद)**	**730607**	**898110 (22.92)**	**1100730 (22.56)**	**73851 (32.23)**

स्रोत · इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

नोट (कोष्ठको में दिये गये ऑकडे विगत वर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।)

तालिका 5 15 से परिलक्षित होता है कि समस्त तहसीलो के निक्षेपो मे सन्तोषजनक वृद्धि रही है। वर्ष 1995 96 मे सबसे कम वृद्धि दर 3 77 प्रतिशत चायल तहसील का तथा सबसे अधिक वृद्धिदर 78 42 प्रतिशत इसी तहसील का रहा है। समस्त तहसीलो के निक्षेपो मे उतार चढाव के साथ विगत वर्ष की अपेक्षा वृद्धि हुई है। इस प्रकार समस्त इलाहाबाद जनपद के निक्षेपो मे क्रमश 22 92%, 22 56%, तथा 32 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

तालिका 5.16— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की क्षेत्रवार जमा प्रगति का विवरण (प्रतिशत वृद्धि में) 31 मार्च की स्थिति

(धनराशि हजार रूपये में)

क्रम स०	क्षेत्र	वर्ष 1993-94	वर्ष 1994-95	वर्ष 1995-96	वर्ष 1996-97
1	2	3	4	5	6
1	गगापार	330956	393873 (19 01)	503960 (27 94)	616242 (22 27)
2	यमुनापार	193183	237003 (22 68)	294167 (24 11)	374983 (27 47)
3	द्वाबा	206468	267234 (29 43)	302603 (13 23)	464343 (53 44)
4	**योग इलाहाबाद जनपद**	**730607**	**. 898110**	**1100730**	**1455568**

स्रोत इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक इलाहाबाद

नोट (कोष्ठको मे दिये गये ऑकडे विगत पर्ष पर प्रतिशत वृद्धि है।)

तालिका सख्या 5 16 से स्पष्ट है कि इलाहाबाद जनपद के तीनो क्षेत्रो गगापार, यमुनापार तथा द्वाबा के निक्षेपो मे वृद्धि हुई है। वर्ष 1994-95 मे विगत वर्ष की तुलना मे सबसे कम वृद्धि दर 19.01% प्रतिशत गगापार क्षेत्र का रहा है तथा सबसे अधिक वृद्धिदर 29 43%, प्रतिशत द्वाबा क्षेत्र का रहा। इसी प्रकार 1995-96 मे सबसे अधिक 27 94 प्रतिशत वृद्धि गगापार क्षेत्र का रहा। वर्ष 1996-97 मे गगापार, यमुनापार तथा द्वाबा क्षेत्र की वृद्धि क्रमश 22.27%, 27.47% तथा 53 44 प्रतिशत रही। इस प्रकार इलाहाबाद जनपद के निक्षेपो में

क्रमश 22 92%, 22 56% तथा 32 23 प्रतिशत की वृद्धि रही। निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि निक्षेपो मे उतार चढाव के साथ वृद्धि सदैव रही है।

तालिका 5 17 — इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की कार्मिक आय-व्यय तथा लाभ-हानि का विवरण

(धनराशि हजार में)

क्र स	विवरण	1990-91	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95	1995-96
1	2	3	4	5	6	7	8
1	कार्मिक						
	(अ) प्रायोजक बैक के कार्मिक	2 421	2 422	2 420	2 418	2 419	2 413
	(ब) अपने बैक के कार्मिक						
2	प्रति कार्मिक जमा	992	1113	1380	1748	2143	2665
3	प्रति कार्मिक अग्रिम	665	769	845	949	1134	1361
4	प्रति कार्मिक कुल व्यवसाय	1657	1882	2225	2697	3277	4026
5	कुल आय	36023	43424	51250	58587	80448	77765
6	कुल व्यय	47537	79294	86955	103019	112197	128975
7.	कुल लाभ/ हानि	(-) 11514	(-) 35870	(-) 35705	(-) 44432	(-) 31749	(-) 51210

स्रोत:- विभिन्न वार्षिक प्रगति

इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक इलाहाबाद

तालिका 5 17 से परिलक्षित होता है कि बैक मे प्रायोजक बैक के कर्मचारी 1990-91 से 1995-96 तक रहे। अपने बैक के कार्मिको की सख्या 1990-91 मे 421 थी जो 1995-96 मे घटकर 413 पर आ गयी। प्रति कार्मिक जमा तथा अग्रिम मे निरन्तर सवृद्धि हुई है। प्रति कार्मिक जमा 1990-91 मे 992 हजार रूपये थी जो 1995-96 मे 168 64 प्रतिशत वृद्धि के साथ 2665 हजार रूपये हो गयी। इसी प्रकार अग्रिम मे भी 1990-91 की तुलना मे 1995-96 मे 104 66 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। प्रति कार्मिक कुल व्यवसाय मे भी वृद्धि हुई है। बैंक को स्थापना के प्रारम्भिक दो वर्षो मे लाभ प्राप्त हुआ इसके पश्चात लागतार बैक हानि पर चल रहा है।

तालिका 5 18— इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक का तुलन पत्र यथा 31 मार्च 1997

(धनराशि हजार रुपये में)

पूँजी एव देयतायें	यथा 31 3 97 चालू वर्ष रूपया	यथा 31 3 97 गतवर्ष रूपया	आस्तियॉ	यथा 31 3 97 चालू वर्ष रूपया	यथा 31 3 96 गतवर्ष रूपया
पूँजी	10000 00	7500	नगद तथा भारतीय रिजर्व बैक के पास अवशेष	64767 00	49476 00
प्रारक्षित निधि एव अधिशेष			बैक मे अवशेष एव माग तथा अल्प सूचना पर प्रतिदय राशियॉ	441604 00	321208 00
जमा राशिया	1455568 00	1100730 00		284208 00	136700 00
उधार	82934 00	101379 00	निवेश ऋण	4987622 00	524625 00
अन्य देयताए एव प्रावधान	130808 00	94973 00	अचल आस्तियॉ	3072 00	2660 00
			अन्य आस्तियॉ	398037 00	269913 00
	1679310 00	**1304582 00**		**1679310 00**	**1304582 00**

स्रोत वार्षिक प्रतिवेदन 1996-97

तालिका 5 18 से स्पष्ट है कि इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की सम्पत्तियों तथा दायित्वों में विगत वर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष मे वृद्धि हुई है। मार्च 1996 मे कुल सम्पत्तिया तथा दायित्व 1304582 00 हजार रुपये थी जबकि मार्च 1997 में बढकर 167931 00 हजार रुपये हो गयी। इस प्रकार सम्पत्तियो तथा दायित्वों में विगत वर्ष की अपेक्षा 28 72 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। नकद तथा भारतीय रिजर्व बैंक के पास अवशेष में विगत वर्ष पर 30.91 प्रतिशत

की वृद्धि हुई। बैक की पूँजी, प्रारक्षित निधि एव अधिशेष, जमा राशियॉ, अन्य देयताएँ एव प्रावधान एव आस्तियों मे विगत वर्ष की तुलना मे वृद्धि हुई है जबकि उधार धनराशि मे कमी आयो है।

नि सन्देह इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक-ने समस्याओ के होते हुए भी ग्रामीण क्षेत्रो का विकास करने मे अभूतपूर्व योगदान देकर अपनी स्थापना मे निहित उद्देश्यो को पूरा करने की भरसक कोशिश की है, कारण यह है कि हमारी सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो मे रहने वाले कमजोर वर्ग के लिए जितनी भी योजनाए बनाई है, इलाहाबाद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक उन्हे पूरा करने मे समर्पण की भावना से लगा हुआ है। फिर भी बैक द्वारा ग्रामीण क्षेत्रो मे कार्यरत कर्मचारियो को अन्य बैंको की तरह समान सुविधाए उपलब्ध कराई जाय और बैक मे कार्यरत कर्मचारी भी बैक क्रियाकलापो के सचालन मे तत्परता और रूचि के साथ सहयोग करे तभी बैंक अपनी स्थापना मे निहित उद्देश्यों को और खूबसूरती के साथ पूरा कर पाएगा ।

अध्याय : 6

निष्कर्ष एवं परामर्श

"बिना अनुशासन के ऋण, दान के अलावा और कुछ नहीं है"

प्रख्यात अर्थशास्त्री प्रो० मोहम्मद युनुस
चटगाँव विश्वविद्यालय
बाँग्लादेश

उपलब्धियाँ:

ग्रामीण बैको के सन्दर्भ मे यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि जिन उद्देश्यो को लेकर इसकी स्थापना की गयी उसके लाभदायक परिणाम प्राप्त हुए। सीमान्त कृषक, लघु कृषक, भूमिहीन एव ग्रामीण दस्तकारो को पूँजीगत सहायता प्रदान की गयी, उनके लिए रोजगार के साधन सुलभ कराकर आचलिक अर्थव्यवस्था को आर्थिक स्वराज और स्वावलम्बन की ओर उन्मुख किया गया। ग्रामीण स्तर पर देशी महाजनो द्वारा ऋणग्रस्तता के दुश्चक्र से लघु किसानो एव दस्तकारो को बचाया जा सका। छोटी-छोटी बचतो को एकत्रित किया गया, तथा ग्रामीण क्षेत्र की अशिक्षित, एव साक्षर जनता को बचत करने के लिए प्रेरणा दी गयी। प्रदत्त ऋण सुविधाओ का समुचित उपयोग करने के लिए लोगो को प्रेरित किया गया। इससे हमारी अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पडा। सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के लोग बैकिग सुविधा तथा सरकार की नवीनतम् नीतियो से परिचित हो सके।

फलत यह देखा गया कि कम लागत अवधारणा सरकार की पूरी नही हुई, अन्तत ग्रामीण बैंकों को भी अपनी कार्यपद्धति व्यावसायिक बैंको के समान अपनाना पडा, और वे काफी हद तक इसमे सफल रहे। निम्नलिखित से स्पष्ट है कि ग्रामीण बैंक निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

(1) जमा संग्रहण:-

इन बैको ने ग्रामीण जमा सग्रह मे प्रमुख भूमिका निभाई है। अनुमानत इनमे से 75 प्रतिशन जमा इन बैको के अभाव मे किसी भी बैक को प्राप्त नहीं होती और या तो बेकार पडी रहती या अनुत्पादक कार्यों मे लगाई जाती है। अपने कमान क्षेत्र की ग्रामीण जमाओ को सग्रह कर इन बैको द्वारा क्षेत्र के विकास मे लगाया जा रहा है। जून 1997 तक 196 ग्रामीण बैको की कुल जमा धनराशि 17327,40 लाख रूपये थी जिनमें से 71 85 प्रतिशत राशि ग्रामीण क्षेत्रो से सम्बन्धित थी । अध्याय 3 और अध्याय 5 से परिलक्षित होता है कि ग्रामीण बैको की जमाओ मे निरन्तर वृद्धि हुई है। इससे यह इगित होता है कि ये बैक छोटे एव गरीब व्यक्तियो के बैक है जो कि ग्रामीण समाज के कमजोर वर्ग की जमा सग्रह करने मे गहन प्रयास करते है।

सेवा क्षेत्र योजना मे ऋणी द्वारा ऋण के लिए शाखा चुनने की स्वतत्रता समाप्त होने से वह एक निश्चित शाखा से ऋण लेने के लिए बाध्य है लेकिन जमाओं के मामले मे वह स्वतन्त्र है, वह किसी भी शाखा मे जमा कर सकता है तथा ऋण दूसरी शाखा से ले सकता है। इस योजना मे इन बैंको को पूर्णत लक्षित निर्बल वर्ग तक सीमित कर दिए जाने के कारण सपन्न ग्रामीणों का सहयोग जमा के रूप मे नहीं मिल पाता है ।

(2) अग्रिम राशिः-

जहाँ व्यापारिक बैक एव सहकारी बैक दूर-दराज के ग्रामीण अचलो मे साख प्रदान करने मे असमर्थ रहे है, वहीं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ग्रामीण समाज के गरीब लोगो के लिए मददगार साबित हुए है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैको द्वारा उचित मात्रा मे कृषि, कृषि आश्रित धधो, दस्तकार, लघु उद्योग और लघु व्यवसाय हेतु ऋण उपलब्ध कराये गये है। जून 1997 तक कुल अग्रिम राशि 865241 लाख रूपये थी जिसमे से 75 82 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रो से सम्बन्धित थी। अध्याय 3 और अध्याय 5 से स्पष्ट है कि ग्रामीण बैंक के ऋणों मे निरन्तर वृद्धि हुई है।

(3) खराब आर्थिक स्थितिः-

इन उपलब्धियो के बावजूद क्षेत्रीय ग्रामीण बैक अपने लक्ष्यो को पूरा करने मे अधिक सफल नहीं हुए हैं। अधिकतर बैको की आर्थिक स्थिति खराब है और वे भारी घाटे मे चल रहे है। ऐसे मे उनसे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने में सफल होगे। 31 मार्च 1995 को क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे 10958 करोड रूपये जमा थे जबकि उनका 6226 करोड रूपया कर्जदारो की तरफ बकाया था। मार्च 1996 तक 196 ग्रामीण बैंको मे से 44 ग्रामीण बैंक लाभ पर थे। कुल घाटे की राशि 42558 31 लाख रूपये थी। घाटे की राशि मे निरन्तर वृद्धि हो रही है, इसका प्रमुख कारण है कि उनके द्वारा जो कर्ज दिये जाते हैं, उनकी वापसी नहीं

होती। इससे क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के पास नये ऋण देने के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध नही रहता। इस तरह ग्रामीण क्षेत्रो के लोगो की आर्थिक स्थिति सुधारने के लक्ष्य से गठित ये बैक खुद सरकार पर एक बडा आर्थिक बोझ बन गये है।

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की अनुसंधान और विकास निधिः

राष्ट्रीय कृषि एव ग्रामीण विकास बैक ने क्षेत्रीय ग्रामीण बैको को तकनीकी निगरानी और मूल्याकन कक्षो की स्थापना करने के लिए अनुसधान और विकास निधि मे अपना योगदान जारी रखा । इन कक्षो का उद्देश्य परियोजना ऋण प्रणाली के अन्तर्गत योजनाए तैयार करना और उनका मूल्याकन करना है। इस सम्बन्ध मे योजना का लाभ 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे से वित्तीय वर्ष 1987-88 मे 53, 1988-89 मे 65, 1989-90 मे 74, 1990-91 मे 87, 1991-92 मे 96 और 1992-93 के दौरान 103 बैको ने इस योजना का लाभ उठाया ।

The underlying assumptions of such a mindset could be summarised as follows

Future goals	Just to carry on
Business	Whatever walks in
Customer	One who is in dire need of the bank's services
Growth	Measured by deposits
Competition	Does not exist
Profit	Not a must for RRBs
Performance Monitoring	To be done by others
Reasons for weaknesses	Due to external factors only
Stakeholders	Employees
Survival	Assured a noble institution Serving the poor can not be closed down

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की समस्याएं:

1 ग्रामीण बैको की शाखाओ मे वृद्धि तो हुई लेकिन जरूरत मन्द ग्रामीणो के लिए ऋण उपलब्धता की स्थिति मे अभी और सुधार होना चाहिए।

2 इन बैको मे प्राय ऐसे कर्मचारियो की नियुक्ति की गयी जो पूरी तरह प्रशिक्षित नही थे तथा उन्हे ग्रामीण समस्याओ का कोई ज्ञान नहीं था ।

3 व्यावसायिक बैको के समान वेतन तथा अन्य सुविधाए क्षेत्रीय ग्रामीण बैक के कर्मचारियो को प्रदान नहीं किया जाता हे।

4. क्षेत्रीय ग्रामीण बैको मे जमा राशि पर दी जाने वाली व्याजदर, व्यावसायिक बैको द्वारा प्रदत्त ऋणो पर लिये जाने वाली ब्याज दर से अधिक है।

5. क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का स्वामित्व केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के हाथो होता है अर्थात वित्तीय स्रोतो के लिए ग्रामीण बैको की सरकार पर निर्भरता होती है।

6 कृषि विस्तार एजेसियो और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको मे तालमेल का अभाव पाया जाता है।

7 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको और उनके प्रायोजक बैको के पास जमा धनराशि 2500 करोड रूपये है। प्रायोजक बैंक अपने ग्रामीण बैको को 10 प्रतिशत की दर से ब्याज देते है जबकि प्रायोजक बैक उसी धनराशि को पूॅजी बाजार मे ऋण देकर 24 प्रतिशत तक का ब्याज अर्जित करते है। इससे ग्रामीण बैको को ब्याज मे प्रतिवर्ष 250 करोड रूपये की हानि हो रही है ।[1]

8 यह कहना सही है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैको ने सफलता प्राप्त की है, परन्तु यह समुचित नहीं है। व्यापक सुविधा देने की दिशा मे जो प्रयास किये गये है वे पर्याप्त नहीं है। ग्रामीण जनता आज भी अपनी बचतो को घरो मे रखती है और उधार के लिए जमीदारो व साहूकारो पर निर्भर है।

9 इन बैको को आज भी अनेक समस्याओ का सामना करना पड रहा है। सबसे बडी समस्या आधार भूत ढॉचे की समस्या है। इन ग्रामीण बैको को ऐसी जगह अपनी शाखाए खोलनी पडती है जहॉ यातायात, डाकतार तथा भवन जेसी सुविधाए नहीं होती । साथ ही वहॉ शिक्षा व चिकित्सा की सुविधा न होने से क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान रखने वाले प्रशिक्षित व कुशल कर्मचारी नहीं मिल पाते, जिसके कारण ग्रामीणो से सम्पर्क बनाये रखना अपेक्षाकृत कठिन होता है। इसके अतिरिक्त शहरों से गये कर्मचारी क्षेत्रीय समस्याओं से पूरी

---

1. कुरूक्षेत्र, जनवरी-फरवरी 1996

तरह परिचित न होने के कारण वास्तव मे जरूरत मन्द ग्रामीणो के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाते। अधिकाश शहरी व्यक्ति गॉवो मे जाना पसद ही नहीं करते ।

10. ऋण वसूली न होना और समय पर ऋणो की अदायगी न हो पाने से बैको को भी आर्थिक कठिनाइयो का सामना करना पडता है। भारतीय किसान गरीब व ऋणग्रस्त होने के कारण समय पर ऋण का भुगतान नहीं कर पाते है।

11 ग्रामीण क्षेत्रो मे बैकिग सुविधाओ के विस्तार कार्यक्रम के अर्न्तगत ग्रामीण इलाको मे अन्य व्यापारिक बैक भी अपनी शाखाये खोल रहे है जिससे इन क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको को प्रतियोगिता करनी पडती हैं। इन क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की परिचालन लागत अधिक होने के कारण इनमे से अधिकाश बैंको को हानि उठानी पड रही है।

12. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक मे नौकरी पाने के बाद व्यक्ति बैंक का रेलवे के प्रतीक्षालय की तरह उपयोग करते है, अर्थात मनपसद नौकरी मिलने तक यहॉ समय काटना उनका मुख्य उद्देश्य रह जाता है।

13. क्षेत्रीय ग्रामीण बैक, केन्द्र सरकार, प्रयोजक बैक एव सम्बन्धित राज्य सरकार के स्वामित्व मे होते है। इनकी अधिकृत पूॅजी एक करोड रूपये होती है, जिसमे से 25 लाख रूपया निर्गमित एव प्रदत्त पूॅजी के रूप मे होता है। इन बैको की पूॅजी मे केन्द्र सरकार, प्रयोजक बैक एव राज्य सरकार का योगदान क्रमश 50 प्रतिशत, 35 प्रतिशत एव 15 प्रतिशत होता है। अर्थात वित्तीय स्रोतो के लिए ग्रामीण बैको की निर्भरता सबसे अधिक (65 प्रतिशत) सरकार पर होती है।

14 ऋण वसूली कार्यक्रम राजनीति से प्रभावित होते है। यही कारण है कि क्षेत्रीय ग्रामीण बैको के अध्यक्ष एव निदेशक मण्डल द्वारा क्षेत्रीय समस्याओ के अनुरूप कोई उपयोगी निर्णय नहीं लिया जा सकता तथा इन्हीं कारणो से बैंकों द्वारा वसूली कैम्प लगाने मे भी कठिनाई आती है।

15 प्राय· जिन उद्देश्यो से ऋण दिये जाते है उनका प्रयोग उसी में न होकर अन्यत्र किया जाता है। यद्यपि प्रत्येक जिला प्रशासन को निर्देश है कि स्वय जिला विकास आयुक्त या उनकी कोई एजेन्सी समय-समय पर इस सदर्भ मे जॉच करें, परन्तु इस दिशा मे कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। प्राय इस तरह के निरीक्षण कागजो तक ही सिमट कर रह जाते हैं।

16 ग्रामीण क्षेत्रो मे ऋण देने योग्य प्रस्तावो के मूल्याकन की समस्या गम्भीर है। ऋण वितरण के सन्दर्भ मे बैको पर यह दबाव होता है कि वो निश्चित समयावधि मे ही निर्धारित लक्ष्यो को पूरा करे। ऐसी स्थिति मे ऋण पाने योग्य लोगो के चुनाव मे जो सतर्कता एव सावधानी बरतनी चाहिये, वह कर पाना सम्भव नहीं होता। ऐसे मे निरीक्षण एव नियन्त्रण मात्र नियमो तक सीमित रह जाते है। राजनीतिक दबावो के कारण ऋण वितरण प्रक्रिया मे स्थापित मानको की भी अवहेलना प्राय की जाती है।

17 समय-समय पर सरकारी प्रचार के साथ वितरित किये जाने वाले ऋण तथा उनमे दी जाने वाली सब्सिडी की अत्यधिक मात्रा के कारण कमजोर तथा जरूरतमन्द लोगो को न्यूनाधिक मात्रा मे ही ऋण मिल पाता है, ऐसे मे अवाछित लोगो को ऋण प्राप्त होते अधिक देखा जाता है ।

18. बैको का कृषि विस्तार एजेसियो के साथ आवश्यक तालमेल का अभाव पाया जाता है। यदि दोनो मे सामजस्य होगा तो ऐसी स्थिति मे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि दिये गये ऋणो का प्रयोग ऐसे कार्यों मे हो जिनसे कर्जदारो की आय बढती हो।

19 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की दयनीय वित्तीय स्थिति के लिये नाबार्ड की पुनर्वित्त सुविधा की नीति भी जिम्मेदार है। सरकार द्वारा घोषित कल्याणकारी कार्यक्रमो तथा उन्हे लागू करने के लिये ऋण वितरण की प्रतिबद्धता के कारण ग्रामीण बैको की ऋण वसूली शून्य होती जा रही है। ऐसे मे नाबार्ड की पुनर्वित्त सुविधा नीति मे आवश्यक परिवर्तन करके ग्रामीण बैंको की वित्तीय स्थिति को सुधारने की आवश्यकता है।

20. समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत गरीबो को दिये जाने वाले ऋणो की वापसी लगभग शून्य है। कृषको को कृषि सयत्रो के लिए दिये जाने वाले ऋण की नियमित वापसी का प्रावधान किया गया था, जिसे धीरे-धीरे अब शिथिल कर दिया गया है।

21 बैंक का कार्यभार उनके कर्मचारियो की सख्या के अनुपात मे बहुत अधिक बढता गया है। कई ग्रामीण बैंक शाखाओ मे तो स्थिति की दयनीयता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उनमे केवल एक कर्मचारी हैं तथा नियन्त्रण की कोई व्यवस्था नहीं है।

22 मात्र सरकारी लक्ष्यो को पूरा करने की दृष्टि से तेजी से शाखाओ के विस्तार को बैंको का सगठन उचित ढग से विनियमित नहीं कर पाया। इन बैंकों मे

प्राय ऐसे कर्मचारियो की नियुक्ति हो गयी जो पूरी तरह से या तो प्रशिक्षित नहीं थे या उन्हे ग्रामीण समस्याओ का कोई ज्ञान नहीं था। इस प्रकार के बेलगाम विस्तार के कारण ऋणो के आवेदन पत्रो की जॉच, ऋणो की स्वीकृति एव भुगतान ऋणो के भुगतान के पश्चात की कार्यवाहीं विस्तार के कारण ऋणो के आवेदन पत्रो की जॉच, ऋणो की स्वीकृति एव भुगतान, ऋणो के भुगतान के पश्चात की कार्यवाही निगरानी तथा ऋणो की वापसी आदि के मामलो मे बैको की कार्यक्षमता के स्तर मे भारी गिरावट आयी है।

23. अब तक उपलब्ध ऑकडो के आधार पर मार्च 1996 के अन्त तक 196 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की 14497 शाखाओ मे से अधिकाश शाखाए मुख्य रूप से कुछ ही राज्यो, यथा- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश मे ही थी, शेष अन्य राज्यो मे इनका विस्तार बहुत ही कम हुआ है अत इनके विस्तार मे क्षेत्रीय असमानताये व्यात है जो उचित नही है।

24. आज देश के अन्दर कार्य कर रहे अधिकाश क्षेत्रीय ग्रामीण बैक घाटे पर चल रहे है जबकि यह आशा की जाती है कि अपनी स्थापना के 23 वर्षो के पश्चात वे अपना एक सशक्त आधार तैयार कर लेगे। अब तक कार्य कर रहे बैंको मे लगभग 90 प्रतिशत बैंकों को हानि उठानी पड रहीं है। इन बैंकों को

जीवन-क्षम बनाने की अविलम्ब आवश्यकता है। इस दिशा मे व्यापारिक बैको एव नाबार्ड के मदद की आवश्यकता है तथा कुशल प्रबन्ध प्रशासन एव मितव्ययिता की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है।

25 प्रारम्भ मे इन बैको के सचालन के लिए प्रतिनियुक्त प्रवर्तक बैको के अनुभवहीन अधिकारियो तथा ग्रामीण बैको के अल्प प्रशिक्षित अधीनस्थो द्वारा कोष प्रबधन की खामियो के कारण इन्हे कोष का उचित लाभ नहीं मिला पाया।

परिकल्पना की पुष्टि:

इस प्रकार विभिन्न अध्यायो के समग्र अवलोकन से यह परिलक्षित होता है कि ग्रामीण बैक अपने उद्दश्यो को पूरा करने मे सफल रहे है। ग्रामीण बैक की स्थापना बैक विहीन क्षेत्रो मे हुई है। बैक ग्रामीण क्षेत्रो मे विद्यमान निष्क्रिय पूँजी को गतिशील बनाने मे सक्षम हुए है। क्षेत्रीय ग्रामीण बैक द्वारा साहूकारो, सहकारी बैंको तथा अन्य व्यापारिक बैको के कमियो को दूर किया गया है। इससे यह प्रतीत होता है कि हमार परिकल्पना की पुष्टि हुई है।

सुझाव :

क्षेत्रीय ग्रामीण बैक यदि इन कारको के प्रति सवेदनशील हो तो आर्थिक विकास और तेजी से होगा। इस दिशा मे प्रयास प्रारम्भ करने हेतु निम्न सुझाव है -

1 केवल सस्थागत स्रोतो से ही ऋण उपलब्ध होना चाहिए, गैर सस्थागत स्रोतो पर ऋण सबधी निर्भरता पूर्णतया समाप्त होनी चाहिए। सस्थागत ऋणो का वितरण इस प्रकार होना चाहिए कि धनी और निर्धन दोनो प्रकार के किसान इससे लाभान्वित हो सके। इसके द्वारा कृषि की कुशलता व उत्पादकता को बढाना चाहिए।

2 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको का प्रबध व सचालन प्रशिक्षित, निष्ठावान व वचनबद्ध व्यक्तियो द्वारा होनी चाहिए, जिससे सस्थागत वित्त को सफल बनाया जा सके।

3. बैंको द्वारा कृषि ऋण पर ब्याज की दरे कम होनी चाहिए और किसानों के विभिन्न वर्गों के लिए ब्याज की अलग-2 दरे होनी चाहिए। छोटे-छोटे किसानो को नई तकनीकी व अच्छी खेती के तौर तरीको आदि के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

4 छोटे व सीमान्त किसानो और भूमिहीन श्रमिको के लिए अनुत्पादक ऋण भी आवश्यक है। इसलिए इस स्तर पर इस प्रकार की ऋण सुविधाए उपलब्ध करानी चाहिए ताकि लोगो को बन्धुवा मजदूर बनने से रोका जा सके ।

5. ग्रामीण बैको को भी व्यावसायिक बैको की तरह सभी प्रकार के बैकिग व्यवसाय मे शामिल होने की छूट होनी चाहिए।

6 बैको को छोटे किसानो को ऋण देते समय जमानत देने मे अधिक जोर न दिया जाए बल्कि इस बात का ध्यान रखा जाए कि कृषको की ऋण चुकाने की क्षमता कैसी है।

7 इन बैको का शाखा विस्तार कुछ ही क्षेत्रो/प्रान्तो मे केन्द्रित न करके सम्पूर्ण देश मे किया जाना चाहिए जिससे कि क्षेत्रीय असतुलन की समस्या को कम किया जा सके।

8 वित्तीय समस्या के सम्बन्ध मे इन बैंको को रिजर्व बैंक तथा अन्य प्रायोजक बैंको से रियायती दरो पर आवश्यकतानुसार वित्त उपलब्ध कराया जाना चाहिए। ऋणो की वसूली की समस्या के निदान हेतु ऋण केवल उत्पादक कार्यो के लिए ही दिये जायें और ऋणो के प्रयोग व वापसी पर कठोर

नियत्रण लगाया जाना चाहिए। लाभार्थियो का चयन करते समय इनकी ऋण वापसी प्रवृत्ति का भी आकलन कर लेना चाहिए ।

9 कृषको, कृषि श्रमिको, सीमान्त कृषको एव दस्तकारो आदि से ग्रामीण बैको को सतत् सम्पर्क बनाये रखना चाहिए जिससे कि उन पर एक दबाव बना रहे कि उन्हे ऋण वापसी भी करना है। इसके साथ ही साथ ऋण सम्बन्धी नीति के सही निर्धारण एव सचालन मे अन्य वित्तीय अभिकरणो से जो कि इस क्षेत्र मे कार्यरत है, समन्वय रखना चाहिए।

10. इन बैको की शाखाओ को चाहिए कि जहॉ वे काम कर रहे है, वहॉ पर अधिक से अधिक बचतो को अपनी ओर आकर्षित करे और यदि आवश्यक हो तो उन्हे पुरस्कार आदि प्रोत्साहन के लिए देने की भी व्यवस्था करे ।

11 बैंक कर्मचारियो को लगन, निष्ठा एव ईमानदारी से कार्य करने के लिए उनकी वेतन विसगतियो, सुविधाओ एव प्रोन्नति सम्बन्धी समस्याओं का निदान करना चाहिए जिससे कि वे सही दिशा मे कार्य करे एव जनता में बैंक की प्रतिष्ठा को बनाये रख सके। इसका यह भी प्रभाव होगा कि अधिक कुशल कर्मचारी इस ओर आकर्षित होगे।

12 इन बैकों को अपनी लागत घटाकर एव कार्य कुशलता बढाकर हानियो को कम करने का प्रयास करना चाहिए जिससे कि इनकी जीवन क्षमता बनी रह सके। इनको चाहिए कि लाभार्थियो को आवश्यकता पडने पर सेवाएँ प्रदान करे एव समय-समय पर उनकी समस्याओ का निदान करते रहना चाहिए जिससे कि बाद मे ऋण आदायगी मे कोई असुविधा न हो ।

13 इन बैको की ब्याज दरे डाकघरो की ब्याज दरो के नजदीक होनी चाहिए जिससे प्रतियोगिता कम हो सके। इन्हे अपने घरेलू बचत खातो पर लाटरी द्वारा पुरस्कार देने एव क्षेत्रीय परिस्थितियो के अनुसार विशष सावधि बचत योजनाओ के सचालन की छूट दी जानी चाहिए।

14 ऋण प्राप्त करने की कठिनाइयो को न्यूनतम करने का प्रयास किया जाना चाहिए जिससे किसान की साहूकारो पर निर्भरता समाप्त हो सके।

विकास की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उपकरण बनना और बने रहना दुर्जेय कार्य है। समर्पण, पूर्ण गभीरता, समस्याओ के समाधान के प्रयास के बिना यह सभव नहीं है। भारत मे नियोजित ग्रामीण विकास नीति अपनाये जाने के कारण इनके विकास व विस्तार का महत्व और भी बढ जाता है। इन बैंकों के पूर्णतया सफल होने मे समस्या इन बैंकों के कार्यों के ठीक प्रकार से क्रियान्वयन न होने की है। जिन

उद्देश्यो व लक्ष्यो को लेकर इन बैको की स्थापना की गयी है, एव जिन तरीको व प्रक्रियाओ को अपनाया गया है, वह उचित होते हुए भी उचित क्रियान्वयन के अभाव म पूरे नहीं हो पा रहे है। क्रियान्वयन पक्ष को मजबूत व निष्पक्ष बनाया जाये और साथ ही ग्रामीण जनता की मानसिकता मे परिवर्तन किया जाये तो सम्भव है कि ये बैंक ग्रामीण इलाको का नक्शा ही बदल दे, और भारतीय ग्राम व ग्रामीण आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हा जाये ।

नीतिगत उपायः

1 वसूली की खराब दर की स्थानीय समस्या के कारण क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की शुद्ध-मालियत और जमाराशियो मे आयी कमी को देखते हुए भारतीय रिजर्व बैक ने भारत सरकार के परामर्श से वर्ष 1993-94 के दौरान कई नीतिगत उपाय किये। इसमें अन्य बातो के साथ-साथ निम्न लिखित उपाय भी शामिल है।

(क) हानि में चल रही शाखाओ के स्थान परिवर्तन की अनुमति ।

(ख) वर्ष 92-93 के दौरान जिन 70 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों का सवितरण दो करोड रूपये से कम था उन्हें सेवा क्षेत्र दृष्टिकोण के उत्तरदायित्वों से मुक्त करना और

(ग) वर्तमान 40 प्रतिशत की सीमा मे से गैर- लक्ष्यगत समूह के उधारकर्ताओ को 60 प्रतिशत तक नए ऋण प्रदान करने की अनुमति।

2 भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैको को 22 अक्टूबर, 1997 से 25,000 रूपये से 2 लाख तक की उधारियो पर ब्याज दर स्वय निर्धारित करने की छूट प्रदान कर दी गई है, किन्तु इसकी अधिकतम सीमा 13 5 प्रतिशत वार्षिक होगी, 3 वर्ष से अधिक अवधि के सावधि ऋणो के लिए बैको को अलग से प्राइम लैण्डिग रेट (PLR) निर्धारित करने की छूट दी गयी है। अभी तक इन बैको द्वारा प्रदत्त 25000 रूपये तक 12प्रतिशत तथा 25,000 रूपये से 2 लाख रूपये तक के उधार पर 13 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज निर्धारित था तथा 2 लाख से अधिक के ऋणो पर ब्याज दर निर्धारित करने को वे स्वतन्त्र थ ।

3 क्षेत्रीय ग्रामीण बैको की इस सरचना को फिर से ठीक करने की प्रक्रिया के रूप मे केन्द्र सरकार के 1996-97 के बजट मे 200 करोड रूपये की राशि रखी गयी और 1997-98 के उनके बजट में इसके लिए 269 86 करोड रूपये की और व्यवस्था की गयी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की पुन सरचना प्रक्रिया को स्थायी बनाने के लिए आय निर्धारण का विवेकपूर्ण मानदड तथा

1995-96 से लागू परिसपत्ति वर्गीकरण और 1996-97 से व्यवस्था मानदडो की बात क्षेत्रीय ग्रामीण बैको पर भी लागू कर दी गयी। क्षेत्रीय ग्रामीण बैको को नयी शाखाए खोलने की अनुमति प्रदान की गयी । इसके लिए जिन केन्द्रो मे उनके कारोबार की अच्छी गुजाइश है उन केन्द्रो के वर्तमान कर्मचारियो को ऐसी शाखाओ मे काम पर लगाया जा सकता है।[2]

इस समय सारी दुनिया जबरदस्त आर्थिक बदलाव के दौर से गुजर रही है। अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र मे नयी नीतियॉ और कार्यक्रम बनाये तथा चलाये जा रहे है। आर्थिक पुनर्गठन के इस दौर मे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको को भी अपने काम काज के तौर तरीकों मे परिवर्तन करना होगा। उन्हे आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद सस्थाओ के रूप मे अपने आपको स्थापित करना होगा। इधर सरकार ने नाबार्ड के माध्यम से ग्रामीण साख प्रणाली मे सुधार के लिए पहल की है। आशा करनी चाहिए कि इससे क्षेत्रीय ग्रामीण बैंको की वर्तमान स्थिति मे बदलाव आयेगा और वे ग्रामीण विकास मे बेहतर भूमिका निभा सकेगें ।

आज पूरे विश्व मे ज्यादा अर्थशास्त्री इस बात को स्वीकार करते है कि बाग्लादेश ग्रामीण बैंक जैसे ढाचे की मदद के बिना ग्रामीण वित्तीय जरूरतो को पूरा नही किया जा सकता बॉग्लादेश। के ग्ग्रमीण। बैंको की सफलता का अदाज केवल

---

2. भारतीय रिजर्व बैंक बुलेटिन परिशिष्ट, सितम्बर 1997 पृष्ठ 9 व 10

इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि इनमे आज तक ऋण वसूली 98 फीसदी तक है। वहाँ की सरकार का मानना है कि वित्तीय प्रबधन के मामले मे महिलाए पुरूषो की तुलना मे कही अधिक गभीर होती है।

अत भारत सरकार को भी बाग्लादेश की तर्ज पर ऋण कार्यक्रम बनाना चाहिए तथा महिलाओ को अत्यधिक ऋण प्रदान करना चाहिए क्योकि वह वित्तीय प्रबन्धन मे पुरूषो से कहीं अधिक श्रेष्ठ होती है। ग्रामीण बैंको को अधिक आर्थिक अवलम्बन प्रदान करना उनके लिए अहितकर होगा । अत उन्हे स्वय आर्थिक रूप से शक्तिशाली होने देना चाहिए तथा वित्तीय अनुशासन का पूर्णतया पालन कराना चाहिए ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

BIBLIOGRAPHY

AUTHOR	BOOKS TITLE
Agarwal, B.P.	"Commercial Banking in India after Nationalisation", Classical Publishing Company, New Delhi, 1982
ANAND, S.C.	Handbook on Regional Rural Banks

Birla Institute of Scientific Research, New Delhi (Ed) "Banks Since Nationalisation" Allied Publishers Private LImited, New Delhi, 1981

BHANDARI, M.C.	Report of the Committee on Restructiving of RRBs (Summary of Report)
Chaubey, B.N.	"Principles and Practices of cooperative Banking in India", Asia Publishing House, 1968.
Conant, charles A.	"A History of Modern Banks of Issues"
Datta, S.K.	Service conditions and Discline Code in RRBs.
Desai, Vasant	Indian Banking . "Nature and Problems" Himalaya Publishing House, Bombay, 1979

Datta, S.K. Service conditions and discipline Code in RRBs

Dutt, V. "Banks Nationalisation in Perspective" Publications Division, GOI, New Delhi, 1970.

Desai, S.S.M. "Rural Banking in India" Himalaya Publishing House, Bombay, 1983

Desai, V. K. "Rural Economics" Himalaya Publications Bombay

Elias, A.H. "Operational problems of Rural Banking" Vora & Co Publishers Bombay, 1967

Eastern Book Co. Regional Rural Banks Act 1976

Ghosh, D.N. "Banking Policy in India" Allied publishers, Pvt Ltd , New Delhi, 1979.

Horne, H. Oliver "A History of Savings Banks" Oxford, University Press, London, 1947.

Joshi, N.C. "Indian Banking" Ashish Publishing House, New Delhi, 1978.

Jain, L.C. : "Indigenous Banking in India" Macillan London, 1929

Kamble, N.D. "Poverty withın poverty" Sterlıng Publıshers Pvt Ltd , New Delhı, 1979

Kalkundrikar, A.B. RRB & Economic Development

Kabra, K.N. and Suresh R.R. "Publıc Sector Bankıng ın Indıa" People's Publıshıng House, New Delhi, 1970

Krishnaswamy, O.R. "Fundamentals of Cooperatıon"

Kripashankar : "Economic Development of Uttar Pradesh" Arthık Ahusandhan Kendra, Allahabad, 1970.

Mathur, B.S. "Cooperative in Indıa" Sahıtya Bhawan, Agra, 1977.

Misra, R.P. Sundaram, K.V. "Multi-level. Planning and Integrated Rural Development" Herıtage Publıshers, New Delhı, 1980

Mathur, O.P. "Public Sector Banks in Indıa's Economy" Sterling Publishers Pvt. Ltd , New Delhı, 1978

Muranjan, S.K. "Modern Bankıng in Indıa", New Book Company Kumala Publıshing House, Bombay, 1952

Nigam, B.M.L. "Banking Law and Practice" Vani Educational Books, Ghaziabad, 1985

Nigam B.M.L. "Financial Analysis Techniques for Banking Division" Somaiya Publication Ltd Bombay, 1979

Nigam B.M.L. "Banking and Economic Growth" Vora & Company, Bombay, 1967

NABARD "Statistics and Regional Rural Banks March, 1996.

NABARD "Development Through Credit" 1982

Naidu, L.K. "Bank Finance and Rural Development" 1985

Panandikar, S.G. & Nithanji, D.M. "Banking in India" Orient Longman Ltd Bombay 12th Edn 1975

Plumpre, A.F.W. "Central. Banking in the British Divisions".

Pandey, K.L. "Development of Banking in India Since 1949-1968" Scientific Book Agency, Delhi, 1970

Panda, R.K. "Agricultural Indebtedness and Institutional Finance" Chugh Publications, Allahabad, 1985.

Pany, R.K.	"Institutional Credit of Agriculture, in India", Chugh Publications, Allahabad, 1985
Rao, b. Ramchandra	"Current Trends in Indian Banking" Deep & Deep Publications, New Delhi, 1984
Rao, M.K.	"Management of Central Co-operative Banks"
Reddy, A.G.N.	"Rural Dynamics Development" Chugh Publications, "Allahabad.
Singh, Prabhu, N.	"Role of Development Banks in Planned Economy". Vikas Publishing House Ltd. Delhi, 1974
Sunil Kumar	Regional Rural Banks & Rural Development
Shylendra, H.S.	Institutional Reforms and Rural Poor . A case of Regional Rural Banks
Shekhar, K.C.	"Banking Theory and Practice" Vikas Publishing House Pvt Ltd. New Delhi, 1974.
Singh, S. and Chauhan, V.S.	"Regionalisation for Rural Development in India" Shree Publishing House, Delhi, 1984.

Sharma, H.C.	"Growth of Banking in a Developing Economy" Sahitya Bhawan, Agra, 1969
Simha, S.L.N.	"Reforms of the Indian Banking System" Orient Longman Ltd Madras 1973
Sharma H.C.	"Nationalisation of Banks in India" Sahitya Bhavan, Agra, 1970
Savage, D.T.	"Money and Banking"
Sarkar, K.C.	"Cooperative Movement in United Provincess "
Sharma, H.C. **Sharma R.K.**	"Banking Law & Practice" Sahitya Bhavan Agra, 1993
Singh, J.P.	"Supply of Demand for Agricultural credit", Chugh Publications, Allahabad 1985
Shankar, K.	"Socialisation of Bank in India" Lokbharati Publications, Allahabad, 1968
Sayers, R.S.	"Lloyds Bank in the History of Monetary System"
Thingalaya, N.K.	"On Bankers and Economists" Macmillan India Ltd. New Delhi, 1981
Trescott, P.B.	"Money Banking and Economic Welfare"

Thomas, Rollin, G. "Our Modern Banking and Monetary System"

Varde, S.D. "Management Studies in Banks" National Institute of Bank Management, Bombay, 1976

Vashya, M.C. "Money Banking and Public Finance" Ratan Prakashan Mandir" Agra 1989

Vyas, M.R. Evaluation and Management of RRBs

White, Horace "Money and Banking"

REPORTS :

GOVERNMENT OF INDIA

(1) Report of the Rural Banking Enquiry Committee (1950)

(2) Report of the Banking Commission (1972)

(3) Report of the Working Group on Regional Rural Banks (1975)

RESERVE BANK OF INDIA :-

(1) Annual Reports on Currency and Finance.

(2) Annual Reports on Trend and Progress of Banking in India"

(3) Banking Statistics

(4) Reserve Bank of India Bulletin

(5) Report of the All India Rural Credit Review Committee (1969)

(6) Reviews of the Cooperative Movement in India

(7) Report of the Review Committee (Dantawala Committee (1979)

ACTS AND RULES :

(1) National Bank for Agriculture & Rural Development Act 1981 with 82 & 84 Regulation

(2) Regional Rural Banks Act, 1976

(3) Reserve Bank of India Act, 1934

(4) U P. Agricultural Credit Act, 1973 with Rules

NATIONAL BANK FOR AGRICULTURE AND RURAL DEVELOPMENT :

(1) Statistics on Regional Rural Banks

(2) Report on the Committee in Control over Branches of RRB' (1983)

OTHER REPORT AND PATRIKAS :

(1) Socio-economic Patrikas Allahabad

ANNUAL REPORT :

(2) Allahabad Kshertiya Gramin, Bank, Annual report

(3) Annual Report of District-Cooperative Bank Allahabad

(4) Statistical Diary

(Economic and Statistical Department State Planning Commission U P Lucknow)

(5) Yojana

(6) Kurukshetra

(7) Birds View

(8) I.B A. Bulletin.

JOURNALS AND PERIODICALS :

(1) Business India, Bombay

(2) Commerce Bombay

(3) Journals of the Indian Bankes Association, Bombay.

(4) The Banker, New Delhi

(5) National Bank News Review, Nabard, Bombay

NEWS PAPERS :

(1) The Economic Times, New Delhi

(2) The Hindustan Times, New Delhi

THESIS SUBMITTED FOR D. PHIL, IN UNIVERSITY OF ALLAHABAD.

(1) Swaroop, L	Resource Mobilisation for Economic Development in Uttar Pradesh
(2) Mehrotra, P N.	Role of Financial Institutions in Economic Development.
(3) Srivastava, A P	A study of Cooperative Credit in U P Since Indendence
(4) Ansari Mohd Salman	Working of hte Regional Rural Banks in Eastern Uttar Pradesh

तालिकायें

STATEMENT NO. 1 - PROGRESS OF REGIONAL RURAL BANKS

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

Sl No	AS AT THE END OF	NO OF RRBs	DISTTs COVERED	NO OF BRANCHES	DEPOSITS (AMOUNT)	OUTSTANDING ADVANCES (AMOUNT)	C D RATIO	AVERAGE PER RRB		AVERAGE PER BRANCH	
								DEPOSITS (AMOUNT)	O/S ADVANCES (AMOUNT)	DEPOSITS (AMOUNT)	O/S ADVANCES (AMOUNT)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	DEC. 75	6	12	17	20	10	50	3 33	1.67	1.18	0.59
2	JUN 76	19	31	112	120	150	125	6.32	7.89	1 07	1.34
3	DEC. 76	40	84	489	772	702	91	19 30	17.55	1.58	1 44
4	JUN. 77	48	99	767	1566	1958	125	32.63	40.79	2 04	2.55
5	DEC. 77	48	99	1187	3304	4235	128	68.83	88.23	2 78	3 57
6	JUN. 78	48	99	1424	6597	6597	100	137.44	137.44	4 63	4.63
7	DEC. 78	51	102	1753	7411	12202	165	145 31	239.25	4 23	6.96
8	JUN. 79	56	107	1990	9825	17305	[illegible]	175.45	309.02	4 94	8.70
9	DEC. 79	60	111	2420	12322	16741	136	205 37	279.02	5.09	6.92
10	JUN. 80	73	130	2735	16367	18116	111	224.21	248.16	5.98	6.62
11	DEC. 80	85	144	3279	19983	24338	122	235 09	286.33	6.09	7.42
12	JUN. 81	102	167	3784	25285	30245	120	247.89	296.52	6.68	7.99
13	DEC. 81	107	182	4795	33600	40659	121	314.02	379.99	7.01	8.48
14	JUN. 82	121	207	5393	38223	46259	121	315.89	382.31	7 09	8.58
15	DEC. 82	124	214	6191	50226	57711	115	405.05	465.41	8.11	9.32
16	JUN. 83	142	249	6812	53487	62370	117	376.67	439.23	7.85	9 16
17	DEC. 83	150	265	7795	67785	75084	111	451.90	500.56	8.70	9 63
18	JUN. 84	162	286	8727	77434	85997	111	477 99	530.85	8.87	9.85
19	DEC. 84	173	307	10245	95997	108077	113	554 90	624.72	9.37	10.55
20	JUN. 85	183	322	12139	105704	118835	112	577 62	649.37	8 71	9.79
21	DEC. 85	188	333	12606	128582	140767	109	683 95	748.76	10 20	11.17
22	JUN 86	194	343	12755	144351	154034	107	744 08	793.99	11.32	12 08
23	DEC 86	194	351	12838	171494	178484	104	883.99	920.02	13 36	13.90
24	JUN. 87	196	362	13076	190968	193353	101	974 33	986 49	14.60	14 79
25	DEC. 87	196	363	13353	230582	223226	97	1176 44	1138 91	17.27	16.72
26	JUN. 88	196	365	13586	245591	242864	95	1253.02	1239 10	18 08	17.88
27	DEC. 88	196	369	13920	296588	280429	95	1513.20	1430.76	21 31	20 15
28	MAR. 89	196	369	14079	311858	291825	94	1591.11	1488 90	22 15	20.73
29	SEP. 89	196	370	14279	346799	315493	91	1769 38	1609.66	24.29	22.09
30	MAR. 90	196	372	14443	415052	355404	86	2117.61	1813 29	28.74	24.61
31	SEP. 90	196	380	14511	426752	355517	83	2177.31	1813.86	29 41	24.50
32	MAR. 91	196	381	14527	498924	360927	72	2545.53	1841.46	34 34	24.85
33	SEP. 91	196	385	14531	514133	380360	74	2623.13	1940.61	35.38	26.18
34	MAR. 92	196	392	14539	586783	409086	70	2993.79	2087.17	40.36	28.14
36	MAR. 93	196	398	14543	693813	462673	67	3539.86	2360.58	47.71	31.81
38	MAR. 94	196	408	14542	882651	525302	60	4503.32	2680.11	60.70	36.12
40	MAR. 95	196	425	14509	1115001	629096	56	5688.78	3209.67	76.85	43.36
42	MAR. 96	196	427	14497	1418790	750502	53	7238.72	3829.09	97.87	51.77

STATEMENT No. 3 - SPONSOR BANK-WISE DISTRIBUTION OF DEPOSITS, ADVANCES, BORROWINGS, STAFF DEPUTED, ETC. OF REGIONAL RURAL BANKS (AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

NAME OF THE SPONSOR BANK	NO. OF RRBs	NO. OF DISTS COVERED	NO. OF BRANCHES	DEPOSITS (AMOUNTS)	ADVANCES (O/S OF SP.RRBs) (AMOUNTS)	BORROWINGS FROM SPON. BANKS (AMOUNTS)	% OF SP. BANK'S FINANCE TO O/S ADV. OF ITS SP. RRB	STAFF DEPUTED BY SPONSOR BANKS		
								OFFICERS	OTHERS	TOTAL
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
ALLAHABAD	7	10	504	56867.64	21886.15	583.83	2.67	19	-	19
ANDHRA	3	5	153	12908.09	10195.65	1404.39	13.77	14	-	14
B.O.B	19	31	1249	119844.32	58443.72	1423.82	2.44	26	-	26
B.O.I	16	30	991	94414.67	33434.10	1121.87	3.36	53	-	53
B.O.M	3	8	312	28306.39	16787 89	1314.81	7.83	6	-	6
B.O.RAJ.	1	2	61	4451.00	1519 00	32.00	2.11	3	-	3
CANARA	8	12	693	69310 75	60580.18	6442.70	10.63	20	-	20
CORPN	1	2	44	3527.45	3342.90	609.90	18.24	3	-	3
C.B.I	23	43	1791	135744.97	63432 72	869.40	1.37	29	-	29
DENA	4	7	253	21805.81	11212.38	321.62	2.87	8	-	8
INDIAN	4	5	145	12468.26	11506.13	2338.51	20 32	14	-	14
I.O.B	3	9	309	24698.72	18728 62	2470.42	13.19	8	-	8
J&K BANK	2	6	188	16567.18	3567.73	88.25	2.47	6	-	6
P.N.B	19	45	1273	145019.12	62215.17	1491.22	2.40	47	-	47
P&S BK	1	3	22	3127.74	1576.00	50.42	3 20	6	-	6
SYNDICATE	10	20	1039	135759.22	119399.75	12033.89	10.08	24	-	24
S.B.B.J	3	5	208	19932.73	5341.91	108.89	2.04	12	-	12
S.B.H	4	4	164	16973.27	12846.39	1258.49	9.80	15	-	15
S.B.I	30	84	2378	210448.34	97027.48	6364.94	6.56	139	-	139
S.B.IND	1	2	23	1804.00	871.18	0.00	00.00	3	-	3
S.B.M	2	5	202	15746.38	11765.60	1022.68	8.69	12	-	12
S.B.P	1	3	41	3471.66	2434.78	244.55	10.04	6	-	6
S.B.S	3	6	136	8436.70	3909.95	513.42	13.13	13	-	13
UNION	4	9	403	69459.84	23109.57	267.00	1.16	15	-	15
U.B.I	11	43	1019	107500.64	56937.18	939.96	1.65	17	-	17
U.C.O	11	25	802	74702.15	35006.89	507.51	1.45	36	-	36
U.P.S.C.B	1	2	69	3997.00	2377.00	50.00	2.10	0	-	0
VIJAYA	1	1	25	1496.28	1046.52	34.10	3.26	2	-	2
ALL INDIA	196	427	14497	1418790.32	750502.54	43908.59	5.85	556	-	556

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS

(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABLISHMENT	NO. OF DISTS. COVD.	NO.OF BRANCHES	DEPOSITS		OUTSTANDING CREDIT		OVERDUE ADVANCES		% OF O/Ds TO ADV.	CD RATIO (%)
					NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1	HARYANA KSH GR BANK	02/10/75	5	90	226414	12071.84	58970	5548.62	26945	2003.88	36.1	46
2	GURGAON GRAMIN BANK	28/03/76	4	118	552281	28256.00	111001	9984.00	82828	5200.00	52.1	35
3	HISSAR-SIRSA KSH CR BK	02/10/84	2	44	63140	3986.00	19883	2927.00	10175	326 00	11.1	73
4	AMBALA KURUKSHETRA GR BK	18/01/85	4	39	67611	4276.30	19116	2515.00	9874	256.26	10.2	59
	HARYANA		15	291	909446	48590.14	208970	20974.62	129822	7786.14	37.1	43
5	HIMACHAL GRAMIN BANK	23/12/76	3	102	309358	14955.55	40664	3936 50	10166	548.28	13.9	26
6	PARVATIYA GRAMIN BANK	02/11/85	1	27	40343	2371.95	7349	811.73	3223	65.76	8.1	34
	HIMACHAL PRADESH		4	129	349701	17327.50	48013	4748.23	13389	614.04	12.9	27
7	JAMMU RURAL BANK	12/03/76	4	94	215933	10102 00	25908	2385.00	13066	611.00	25.6	24
8	ELLAQUI DEHATI BANK	16/07/79	6	85	144700	3558.00	36860	1572.00	9215	393 00	25.0	44
9	KAMRAZ RURAL BANK	16/06/81	2	94	121240	6465.18	14073	1182.73	9763	543 16	45 9	18
	JAMMU & KASHMIR		12	273	481873	20125.18	76841	5139.73	32044	1547.16	30 1	26
10	SHIVALIK KSH GR BK	31/03/83	3	41	105868	5654.65	28744	2133 00	17051	468.63	22 0	38
11	KAPURTHALA-FEROZPUR KSH GR B	30/03/83	2	43	80761	4205 27	28352	2534 68	23777	1222.21	48 2	60
12	GURDASPUR-AMRITSAR KSH GR BK	30/03/83	2	54	127673	6436.00	35967	3072.38	8515	1066 63	34 7	48
13	MALWA GRAMIN BANK	?? 02/86	3	41	45004	3471.66	20660	2434 78	2040	55.21	2 3	70
14	FARIDKOT-BHATINDA KSH GR BK	22/03/86	3	22	36171	3127.74	9763	1576.00	5468	275 52	17.5	50
	PUNJAB		13	201	395477	22895.32	123486	11750.84	56851	3088.20	26.3	51
15	JAIPUR NAGAUR ANCH GR BANK	02/10/75	3	143	230120	15300 00	53861	3711 34	40310	1134.19	30 6	24
16	MARWAR GRAMIN BANK	06/09/76	3	136	300913	16276 34	49436	3746.09	26228	611.23	16 3	23
17	SHEKHAWATI GR BANK	07/10/76	2	100	253376	11449 00	81077	6731.00	53778	1219.00	18.1	59
18	MARUDHAR KSH GR BK	29/03/79	1	60	94684	3231 95	16678	988.88	13593	341 57	34.5	31
19	ALWAR-BHARATPUR ANCH GR BK	28/02/81	3	90	118481	7020 21	48753	2649.31	12188	971.01	36.7	38
20	ARAVALI KSH GR BK	02/10/81	3	64	108392	4299 12	31570	2292.22	21960	566.83	24.7	53
21	HADOTI KSH GR BANK	14/10/82	3	102	113268	8712.00	51373	4259 00	28094	1029.00	24.2	49
22	MEWAR ANCH GR BANK	25/01/83	2	61	77416	4451.00	24484	1519.00	14652	276.00	18.2	34
23	THAR ANCH GR BANK	31/01/83	3	71	72670	3537 38	23197	1351.18	18301	504.27	37.3	38
24	BUNDI-CHITTORGARH KSH GR BK	23/03/84	2	69	115618	4100 18	32869	3192 06	10580	247.00	7.7	78
25	BHILWARA-AJMER KSH GR BK	24/03/84	2	53	87788	4748 12	38567	3610 51	18788	541.48	15.0	76
26	DUNGARPUR-BANSWARA KSH GR BK	25/03/84	2	44	58107	2386 77	20874	1155.56	5219	288.89	25 0	48
27	SRIGANGANAGAR KSH GR BK	31/03/84	1	44	46671	2817 07	12220	1324 82	6096	280.50	21.2	47
28	BIKANER KSH GR BK	25/03/85	1	28	26286	839 32	5827	271.00	5432	164.12	60.6	32
	RAJASTHAN		31	1065	1703790	89168.46	490786	36801.97	275219	8175.09	22.2	41
	NORTHERN REGION		75	1959	3840287	198106.60	948096	79415.39	507325	21210.63	26.7	40
29	ARUNACHAL PRADESH RURAL BANK	30/11/83	5	19	33116	1223.60	9341	421 30	1101	45.96	10 9	34

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS (AS AT THE END OF MARCH 1996) -----CONTD

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABLISHMENT	NO. OF DISTS. COVD.	NO. OF BRANCHES	DEPOSITS		OUTSTANDING CREDIT		OVERDUE ADVANCES		% OF O/Ds TO ADV.	CD RATIO (%)
					NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
	ARUNACHAL PRADESH		5	19	33116	1223.60	9341	421.30	1101	45.96	10.9	34
30	PRAGJYOTISH GAONLIA BANK	06/07/76	9	172	764165	20374 54	149752	11933 16	122573	5747 53	48.2	59
31	LAKHIMI GAONLIA BANK	29/07/80	5	100	411825	8400 52	69756	3587 42	49356	1101 50	30.7	43
32	CACHAR GRAMIN BANK	31/03/81	3	44	99390	2360.76	20870	980 05	16276	546.69	55.8	42
33	LANGPI DEHANGI RURAL BANK	27/01/82	2	43	74899	1883 19	21585	832 09	6205	136.46	16.4	44
34	SUBANSIRI GAONLIA BANK	30/03/82	4	45	129577	2936 02	19645	1142 80	15244	681.92	59.7	39
	ASSAM		23	404	1479856	35955 03	281608	18475.52	209654	8214.10	44.5	51
35	MANIPUR RURAL BANK	28/05/81	8	29	44733	821 31	7835	455 05	7351	322 15	70 8	55
	MANIPUR		8	29	44733	821.31	7835	455.05	7351	322.15	70.8	55
36	KHASI JAINTIA RURAL KA BANK	29/12/81	4	51	90430	6223 10	20767	1186 88	7920	288 14	24 3	19
	MEGHALAYA		4	51	90430	6223.10	20767	1186.88	7920	288.14	24.3	19
37	MIZORAM RURAL BANK	27/09/83	3	54	41418	2833 12	10393	1009.25	5457	210 67	20.9	36
	MIZORAM		3	54	41418	2833.12	10393	1009.25	5457	210.67	20.9	36
38	NAGALAND RURAL BANK	30/03/83	7	8	3546	244 58	1188	84 98	483	29 82	35 1	35
	NAGALAND		7	8	3546	244 58	1188	84.98	483	29.82	35.1	35
39	TRIPURA GRAMIN BANK	21/12/76	3	90	357601	12203 50	208187	9576 48	192126	7862.89	82.1	78
	TRIPURA		3	90	357601	12203.50	208187	9576.48	192126	7862.89	82.1	78
	NORTH-EASTERN REGION		53	655	2050700	59504.24	539319	31209.46	424092	16973.73	54.4	52
40	BHOJPUR ROHTAS GR BK	26/12/75	4	157	591486	24252.00	178135	9319.00	123069	2738.00	29.4	38
41	CHAMPARAN KSH GR BK	21/03/76	2	148	272939	9182 00	95956	3454.00	71939	1071.00	31.0	38
42	MAGADH GRAMIN BANK	10/11/76	4	165	402991	20324.11	193027	8195.70	93857	2889.60	35.3	40
43	KOSI KSH GRAMIN BK	23/12/76	7	164	251910	9628 33	128739	3748 58	19170	556.40	14.8	39
44	VAISHALI KSH GR BK	10/03/77	3	189	384265	13949 24	191612	7048.69	144840	1614.00	22.9	51
45	MONGHYR KSH GR BK	12/03/77	3	104	217727	10203.16	116976	5246 22	108518	3891.34	74.2	51
46	SANTHAL PARGANAS GR BK	30/03/77	5	101	246278	10752.41	169699	3446 56	87094	1036.17	30.1	32
47	MADHUBANI KSH GR BK	31/03/79	1	89	134292	4149 71	43394	2065.04	40997	1736.61	84.1	50
48	NALANDA GRAMIN BANK	31/03/79	1	66	169091	5912.00	64174	2894.00	55004	1523.00	52.6	49
49	SINGHBHUM KSH GR BK	31/03/79	1	77	166152	6477.00	81710	2375.00	71054	1439.00	60.6	37
50	MITHILA KSH GR BANK	14/03/80	1	80	120550	4847.75	50348	2416.64	17848	349.08	14.4	50
51	SAMASTIPUR KSH GR BK	12/05/80	1	73	102745	5627.69	40256	1712.93	37277	648.44	37.9	30
52	PALAMAU KSH GR BANK	15/05/80	2	75	109273	7061.00	103126	3099.00	59358	1864.00	60.1	44
53	RANCHI KSH GR BANK	21/06/80	3	81	130923	5953 57	48331	1805 33	20833	215.80	12.0	30
54	GOPALGANJ KSH GR BK	27/03/81	1	59	130470	6454 00	43321	1868 00	34251	739 00	39 6	29

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS -----CONTD.
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABL-ISHMENT	NO. OF DISTS. COVD.	NO.OF BRAN-CHES	DEPOSITS		OUTSTANDING CREDIT		OVERDUE ADVANCES		% OF O/Ds TO ADV.	CD RATIO (%)
					NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
55	SARAN KSH GRAMIN BK	28/03/81	1	64	136517	5158.00	55165	2218.00	13791	554.50	25.0	43
56	SIWAN KSH GRAMIN BK	31/03/81	1	69	150747	7702.92	51820	2390.00	30019	519.16	21.7	31
57	GIRIDIH KSH GR BANK	30/06/84	2	27	43356	1898.00	13347	705.00	10229	329.34	46.7	37
58	HAZARIBAGH KSH GR BK	19/11/84	3	31	51634	3086.00	15681	730.00	3298	56.00	7.7	24
59	PATALIPUTRA GR BANK	27/11/84	1	21	23882	1280.04	6477	410.82	5086	165.92	40.4	32
60	BHAGALPUR-BANKA KSH GR BK	22/03/85	2	24	40093	1889.50	10914	717 64	2729	179.41	25.0	38
61	BEGUSARAI KSH GR BK	23/03/85	1	21	25012	1262.37	9149	493.98	5172	115.53	23.4	39
	BIHAR		50	1885	3902333	167050.80	1711357	66360.13	1055433	24231.30	36.5	40
62	PURI GRAMIN BANK	25/02/76	3	100	225770	7454.96	118338	4998.62	20315	733.25	14.7	67
63	BOLANGIR ANCH GR BK	10/04/76	7	155	389192	9862.14	158270	5499.39	131029	1427.07	25.9	56
64	CUTTACK GRAMIN BANK	11/10/76	4	121	421972	11712.27	195584	9083.29	81728	1949.80	21.5	78
65	KORAPUT PANCHABATI GR BK	13/11/76	4	90	218715	8161.00	196278	4856.00	52877	1021.00	21.0	60
66	KALAHANDI ANCH GR BK	26/05/80	4	77	121576	3865.00	99248	2504.00	40094	206.20	8.2	65
67	BAITARANI GR BANK	23/06/80	2	90	216973	6284.96	86946	2778.71	33236	173.04	6.2	44
68	BALASORE GR BANK	06/08/80	2	63	191475	3409.73	40674	3076.84	10169	828.79	26.9	90
69	RUSHIKULYA GR BK	14/02/81	2	75	161060	5787 43	82705	3340.53	29846	733.42	22 0	58
70	DHENKANAL GR BK	12/08/81	1	48	110837	3950.51	58028	2871.11	20412	736.83	25 7	73
	ORISSA		29	819	2057570	60488.00	1036071	39008.49	419706	7809.40	20.0	64
71	GAUR GRAMIN BANK	02/10/75	4	143	399971	15108 00	248248	8373.00	162926	3962.00	47 3	55
72	MALLABHUM GR BK	09/04/76	3	176	743869	21498 00	265112	10029.00	92885	2882 00	28.7	47
73	MAYURAKSHI GR BK	16/08/76	1	65	263011	7771 57	94718	3546 55	48592	771.48	21 8	46
74	UTTAR BANGA KSH GR BK	07/03/77	3	111	308019	10863.00	215670	6286 79	174623	2954 58	47 0	58
75	NADIA GRAMIN BANK	27/08/80	1	65	172782	6104.35	70166	2836 83	19998	930.04	32 8	46
76	SAGAR GRAMIN BANK	24/09/80	2	115	408087	14437.64	133385	5540.39	65544	2600.77	46 9	38
77	BARDHAMAN GR BANK	25/11/80	2	90	255217	10783.26	111394	4358 39	37643	689 15	15.8	40
78	HOWRAH GRAMIN BANK	12/06/82	2	59	159611	7154.00	59310	2685.02	33370	1120.42	41 7	38
79	MURSHIDABAD GR BK	17/11/84	1	40	102871	3256.00	44832	2483 00	30380	749.25	30.2	76
	WEST BENGAL		19	864	2813438	96975.82	1242835	46138.97	665961	16659.69	36.1	48
	EASTERN REGION		98	3568	8773341	324514.62	3990263	151507.59	2141099	48700.39	32.1	47
80	KSHETRIYA GR BK HOSHANGABAD	20/01/76	2	92	128700	7479.00	64204	4402.00	16051	1184 00	26.9	59
81	BILASPUR-RAIPUR KSH GR BK	20/10/76	2	150	212224	10160.00	76960	3314 00	21178	480 00	14.5	33
82	REWA-SIDHI GR BANK	20/12/76	2	83	229508	12040.75	60455	5365.45	26365	1045 46	19.5	45
83	BUNDELKHAND KSH GR BK	26/03/77	2	83	159735	7077.00	67665	2880.00	51658	1311.00	45.5	41
84	SHARDA GRAMIN BANK	31/03/79	1	59	176124	5444.55	37845	1837.31	9782	419.36	22.8	34
85	SURGUJA KSH GR BK	24/10/79	1	83	150415	6476.15	53724	2429.84	41550	1506.64	62.0	38
86	BASTAR KSH GR BK	15/12/79	1	62	89783	4035.00	32683	888.16	6286	30.79	3.5	22
87	DURG-RAJNANDGAON GR BK	12/03/80	2	107	205441	10427.74	107385	5842.73	52838	871.88	14.9	56
88	JHABUA-DHAR KSH GR BK	20/06/80	2	86	184896	6545.91	60528	4035 53	44417	1408.00	34.9	62
89	RAIGARH KSH GR BK	31/01/81	1	67	91561	3913.40	33426	1384.53	19333	539.75	39.0	35
90	SHIVPURI-GUNA KSH GR BK	28/03/81	2	59	83719	5318.00	25725	1764.00	6431	947.33	53.7	33

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS ----CONTD.

(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABLISHMENT	NO. OF DISTS. COVD.	NO.OF BRANCHES	DEPOSITS		OUTSTANDING CREDIT		OVERDUE ADVANCES		% OF O/Ds TO ADV	CD RATIO (%)
					NO OF A/Cs	AMOUNT	NO OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
91	DAMOH-PANNA-SAGAR KSH GR BK	30/03/81	3	77	105935	4394 [illegible]	31612	1513 00	23221	787 70	52 1	34
92	DEWAS-SHAJAPUR KSH GR BK	30/03 82	2	59	94430	4953 0[illegible]	23100	1649 07	2907	103 89	6 3	33
93	NIMAR KSH GR BANK	26/06/82	2	75	102173	6373 45	56487	3495 79	5164	224 76	6 4	55
94	MANDLA-BALAGHAT KSH GR BK	14/11/82	2	57	137930	3055 14	21021	781 03	12117	320 95	41 1	26
95	CHHINDWARA-SEONI KSH GR BK	20/01/83	2	71	100159	4353 14	38810	2187 17	7599	326 49	14 9	50
96	RAJGARH-SEHORE KSH GR BK	23/03/83	2	46	54344	3162 00	21879	1352 76	2617	95 61	7.1	43
97	SHAHDOL KSH GR BK	23/06/83	1	46	82994	2739.46	16268	890 11	4067	535 60	60 2	32
98	RATLAM-MANDSAUR KSH GR BK	14/11/83	2	45	76205	3706.01	22732	1801 08	8128	168 04	9 3	49
99	CHAMBAL KSH GR BK	11/02/84	2	51	45407	2233 64	24684	1550 16	812	60 84	3 9	69
100	MAHAKAUSHAL KSH GR BK	01/04/84	2	41	69014	1678.91	14868	736 44	14099	435 06	59 1	44
101	INDORE-UJJAIN KSH GR BK	19/11/84	2	39	55244	2207 19	16110	1145 55	10864	421.15	36 8	52
102	GWALIOR-DATIA KSH GR BK	19/09/85	2	-32	34296	2236 00	14263	1154 00	8929	233.00	20 2	52
103	VIDISHA-BHOPAL KSH GR BK	31/03/86	2	23	23838	1804 00	6358	871 18	2931	160 36	18 4	48
	MADHYA PRADESH		44	1593	2694075	121813 44	928792	53270.89	399344	13617.66	25 6	44
104	PRATHAMA BANK	02/10/75	2	164	788105	[illegible]76 00	207749	20641 00	60165	3241.00	15 7	81
105	GORAKHPUR KSH GR BK	02/10/75	4	200	962343	35317 00	207063	11579.00	55487	1584 00	13.7	33
106	SAMYUT KSH GR BK	06/01/76	3	160	728963	33404 00	107989	7845.00	38939	1150.00	14 7	23
107	BARABANKI GR BK	27/03/76	1	90	358142	12541 00	67309	3062.00	16827	765 50	25.0	24
108	RAEBARELI KSH GR BK	29/03/76	1	74	291210	9201.47	56654	2704.38	14164	775.00	28.7	29
109	FARRUKHABAD GR BK	29/03/76	1	84	243771	12436 00	72470	3956.00	57398	822.00	20.8	32
110	BHAGIRATH GR BK	19/09/76	1	108	717326	17563.80	88035	4660.69	18256	1037.97	22.3	27
111	BALLIA KSH GR BK	25/12/76	2	89	265722	11500.22	80489	5257.99	57056	1814.56	34.5	46
112	SULTANPUR KSH GR BK	08/02/77	1	93	490724	14682 00	102027	6645.00	40225	1444.00	21.7	45
113	AVADH GRAMIN BANK	07/03/77	3	113	569920	17531.00	96027	4847.48	44354	542.69	11.2	28
114	KANPUR KSH GR BK	27/02/80	2	104	295182	13122 00	85083	5974.00	61134	1010.90	16.9	46
115	SRAVASTI GR BK	04/03/80	1	88	336031	9457.07	78664	4874.00	19666	354.60	7.3	52
116	ETAWAH KSH GR BK	18/03/80	1	53	111836	4564 00	42749	2694.00	25342	453.14	16.8	59
117	KISAN GRAMIN BANK	19/05/80	1	58	113350	3832.97	33419	1795.69	17990	405.00	22.6	47
118	KSHETRIYA KISAN GR BK	20/05/80	2	69	159781	3997.00	39650	2377.00	9913	539.00	22.7	59
119	KASHI GRAMIN BANK	28/07/80	2	79	235802	11088.35	69454	4883 69	49565	1415.87	29.0	44
120	BASTI GRAMIN BANK	01/08/80	2	104	390098	11204.00	123037	4192.00	36920	1027.75	24.5	37
121	ALLAHABAD KSH GR BK	23/08/80	1	92	258974	11007.00	75613	5622.00	68051	2749.00	48.9	51
122	PRATAPGARH KSH GR BK	25/08/80	1	71	286181	8724.08	43014	2971.34	34998	862.96	29.0	34
123	FAIZABAD KSH GR BK	05/09/80	1	67	285116	8580.10	40022	2743 14	23046	681.73	24.9	32
124	FATEHPUR KSH GR BK	06/09/80	1	55	122721	4598.00	30610	1860.00	7653	465.00	25.0	40
125	BAREILLY KSH GR BK	27/09/80	2	82	175481	6435.62	42651	2788.76	13550	772.00	27.7	43
126	DEVI PATAN KSH GR BK	17/01/81	1	72	211794	8539.00	50727	2490.00	12682	476.72	19.1	29
127	ALIGARH KSH GR BK	22/03/81	1	91	276632	11961.80	58377	6578.68	14594	1644.67	25.0	55
128	TULSI GRAMIN BANK	23/03/81	1	79	230238	7325.55	51877	2877.48	41316	983.90	34.2	39
129	ETAH GRAMIN BANK	29/03/81	1	58	191694	5608.76	45469	3385.74	14637	363.00	10.7	60
130	GOMTI GRAMIN BANK	30/03/81	2	81	346855	12926.74	61943	5015.43	25890	893.63	17.8	39
131	CHHATRASAL GR BANK	30/03/82	3	82	190458	6861.31	51739	2862.81	31958	661.17	23.1	42
132	RANI LAKSHMI BAI KSH GR BK	31/03/82	2	46	90746	3212.92	29686	1688.27	7422	311.45	18.4	53
133	VIDUR GRAMIN BANK	18/01/83	2	38	85158	3359 44	22354	1530.17	5589	426 50	27.9	46
134	SHAHJAHANPUR KSH GR BK	24/03/83	1	35	69224	2821.09	16307	1441 55	4077	360 39	25 0	51

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS —CONTD.

(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABL-ISHMENT	NO. OF DISTS. COVD.	NO OF BRAN-CHES	DEPOSITS NO. OF A/Cs	DEPOSITS AMOUNT	OUTSTANDING CREDIT NO. OF A/Cs	OUTSTANDING CREDIT AMOUNT	OVERDUE ADVANCES NO. OF A/Cs	OVERDUE ADVANCES AMOUNT	% OF O/Ds TO ADV.	CD RATIO (%)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
135	NAINITAL-ALMORA KSH GR BK	26 03,83	2	57	88011	4090.75	23155	2396 30	5789	376.69	15.7	59
136	VINDHYAVASINI GR BK	30,03 83	2	42	153118	5350 00	43683	3093.00	10921	567.14	18.3	58
137	SARAYU GRAMIN BANK	09 08 83	1	46	178010	4865 36	25378	1680.86	8542	349.67	20.8	35
138	JAMUNA GRAMIN BANK	02 12 83	2	46	114751	4733 13	30801	2515.10	22292	581.59	23.1	53
139	MUZAFFARNAGAR KSH GR BK	27 07 84	1	25	58068	2480 14	15924	1241.45	3981	153.20	12.3	50
140	PITHORAGARH KSH GR BK	27 03 85	1	25	40800	3049 54	7024	1057.94	1935	53.92	5.1	35
141	GANGA-YAMUNA GR BK	29 03 85	3	42	66911	2822 00	13223	1048.00	7803	159.00	15.2	37
142	ALAKNANDA GR BANK	31 08 85	2	51	55905	2821 59	9286	576.63	4254	102.89	17.8	20
143	HINDON GRAMIN BANK	28 03 87	2	22	44030	1771 08	9285	602.58	6323	238.37	39.6	34
	UTTAR PRADESH		66	3035	10679182	380963.48	2356016	156056.15	1000701	32617.57	20.9	41
	CENTRAL REGION		110	4628	13373257	502776.92	3284808	209327.04	1400045	46235.23	22.1	42
144	KUTCH GRAMIN BANK	26,12/78	1	43	53951	4137 00	14621	1271.00	9822	353.84	27.8	31
145	JAMNAGAR GRAMIN BK	26 12 78	2	53	78875	4259 52	28418	1981 87	9370	320.27	16.2	47
146	BANASKANTHA-MEHSANA GR BK	29,11,81	2	73	119971	4384.00	46805	2679.00	17462	450.37	16.8	61
147	PANCHMAHAL GR BANK	30,03,82	2	63	149323	4233.81	42346	3288 27	10587	822.07	25.0	78
148	SURENDRANAGAR-BHAVNAGAR GR B	15,12,83	2	42	37515	1996.00	14755	1113.00	3835	165.00	14 8	56
149	VALSAD-DANGS GR BK	23 02;84	2	40	83259	3410 52	32040	2091.06	14347	394.79	18 9	61
150	SURAT-BHARUCH GR BK	28,02 84	2	40	78702	3625 83	30639	2643 16	14622	293.59	11.1	73
151	SABARKANTHA-GANDHINAGAR GR B	09 08,84	2	30	54795	2857 07	15916	1419 65	8582	249.62	17.6	50
152	JUNAGADH-AMRELI GR BK	02 11 84	2	41	37823	2181 18	11431	815 08	6522	496 13	60 9	37
	GUJARAT		17	425	694214	31084.93	236971	17302.09	95149	3545.68	20.5	56
153	MARATHWADA GR BANK	26,03 76	5	233	391124	20343 78	153957	12394 62	50561	2601.07	21 0	61
154	AURANGABAD-JALNA GR BK	07 12 82	2	53	140678	5313 00	35423	3878 00	7762	416.00	10 7	73
155	CHANDRAPUR-GADCHIROLI GR BK	04 02 83	2	60	136466	4279 86	33675	1591 22	17087	450 78	28 3	37
156	AKOLA GRAMIN BANK	16 10 83	1	47	75766	2704 80	25646	1701 49	13023	447 46	26.3	63
157	RATNAGIRI-SINDHUDURG GR BK	19 11,83	2	39	85848	2701.52	17103	1299 94	6552	155 40	12.0	48
158	SOLAPUR GRAMIN BANK	21 01 84	1	35	67817	2021 18	13862	1575 19	5018	235.24	14 9	78
159	BHANDARA GRAMIN BANK	06 02,84	1	45	104938	2508 94	21552	1065 06	7358	163.89	15.4	42
160	YAVATMAL GRAMIN BANK	29 01 85	1	24	34882	2609.40	15587	1593 41	11373	247.62	15.5	61
161	BULDHANA GRAMIN BANK	17 10,85	1	26	38507	1441 06	12765	1235 70	4784	180.48	14.6	86
162	THANE GRAMIN BANK	30 03 86	1	26	40682	2649.61	9988	515 27	3611	74.71	14.5	19
	MAHARASHTRA		17	588	1116708	46573.15	339558	26849.90	127129	4972.65	18.5	58
	WESTERN REGION		34	1013	1810922	77658.08	576529	44151.99	222278	8518.33	19.3	57
163	NAGARJUNA GR BK	30,04 76	2	148	405412	14142 91	129490	6511 54	32373	880.48	13.5	46
164	RAYALSEEMA GR BK	06,08,76	3	142	670178	18043 41	248480	19439 87	116335	6896.64	35.5	108
165	SRI VISAKHA GR BK	30 09,76	3	168	667411	19640 00	395575	12637 00	126043	2128.00	16.8	64
166	SREE ANANTHA GR BK	01,11,79	1	70	276028	10272.18	82730	8216.48	14926	957.65	11.7	80
167	SRI VENKATESWARA GR BK	22,03,81	1	71	276246	6431.40	76263	5354.57	44908	1483.15	27.7	83
168	SRI SARASWATHI GR BK	30,03,82	1	71	116969	7915.51	82229	4818 37	27760	944.08	19.6	61

STATEMENT NO. 4 - REGION/STATE/BANK-WISE DISTRIBUTION OF OFFICES, DEPOSITS, OUTSTANDING ADVANCES AND OVERDUES OF REGIONAL RURAL BANKS -----CONTD.

(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. NO.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	DATE OF ESTABL-ISHMENT	NO OF DISTS. COVD.	NO.OF BRAN-CHES	DEPOSITS		OUTSTANDING CREDIT		OVERDUE ADVANCES		% OF O/Ds TO ADV.	CD RATIO (%)
					NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO. OF A/Cs	AMOUNT	NO OF A/Cs	AMOUNT		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
169	SANGAMESHWRA GR BK	31/03/82	1	65	115359	5498 00	82516	5168 00	27598	1065 00	20 6	94
170	MANJIRA GR BK	31/03/82	1	64	171415	5460 04	112799	6879 59	20699	802 10	11 7	126
171	PINAKINI GR BK	11/06/82	2	83	287122	7273 00	100627	[illegible]247 32	17259	1110.85	15 3	100
172	KAKATHIYA GR BK	28/06/82	1	43	75280	2552 08	61870	2733 98	28744	1100 08	40 2	107
173	CHAITANYA GR BK	25/03/83	1	45	132392	4435 83	41790	3462 58	21040	1067.55	30 8	78
174	SHRI SATHAVAHANA GR BK	28/03/83	1	46	83129	4600.26	68285	4119 58	34014	1242.61	30 2	90
175	GOLCONDA GR BK	15/02/85	1	22	28889	2031 50	20610	1139 44	5153	284.86	25.0	56
176	SRIRAMA GR BK	21/02/85	1	25	64702	2426 00	33007	2769 00	12910	451.00	16 3	114
177	KAMAKADUGRA GR BK	28/03/86	1	27	51570	2715.31	26802	2422 89	6723	346.48	14 3	89
178	GODAVARI GRAMIN BANK	11/04/87	2	33	75268	2684 83	28240	3392.54	7060	401.67	11 8	126
	ANDHRA PRADESH		23	1123	3497370	116122.26	1591313	96312.75	543544	21162.20	22.0	83
179	TUNGABHADRA GR BK	25/01/76	2	161	682550	19249 00	194125	17218 00	91811	3449 00	20 0	89
180	MALAPRABHA GR BK	16/08/76	2	209	773049	21929 99	233773	25444 12	117636	8107 54	31 9	116
181	CAUVERY GR BK	02/10/76	2	115	295707	8552 00	105469	7185 00	51943	2824 00	39 3	84
182	KRISHNA GR BK	01/12/78	2	112	237641	9377.00	90845	5864.00	25280	754 00	12 9	63
183	CHITRADURGA GR BK	05/08/81	1	96	213798	5721 44	68888	5236 35	40263	2084 94	39 8	92
184	KALPATHARU GR BK	31/03/82	3	87	228403	7194 38	65918	4580 60	54432	1210 39	26 4	64
185	KOLAR GR BK	16/02/83	1	66	208611	5602.00	58200	4485.00	14550	713.00	15 9	80
186	BIJAPUR GR BK	31/03/83	1	84	335295	8756 00	71557	9338 00	23995	1252 00	13.4	107
187	CHICKMAGALUR-KODAGU GR BK	28/04/84	2	44	65418	3527.45	24262	3342 90	9630	401.09	12.0	95
188	SAHYADRI GR BK	06/09/84	1	28	75826	2086.62	17383	2163 31	8826	460 43	21.3	104
189	NETRAVATI GR BK	11/10/84	1	22	50366	1115.86	10490	844 32	2512	74 06	8.8	76
190	VARADA GR BK	12/10/84	1	25	58623	2134 78	12167	2324 64	3865	170 79	7.3	109
191	VISVESHWARAYA GR BK	27/03/85	1	25	54560	1496 28	15369	1046 52	7706	379 50	36 3	70
	KARNATAKA		20	1074	3279847	96742.80	968446	89072.76	452449	21880.74	24.6	92
192	SOUTH MALABAR GR BK	11/12/76	3	147	1073594	14348.00	302719	18998 00	64293	3776 00	19.9	132
193	NORTH MALABAR GR BK	12/12/76	3	122	660707	12402.00	228960	15920 00	47977	1909.00	12 0	128
	KERALA		6	269	1734301	26750.00	531679	34918.00	112270	5685.00	16.3	131
194	PANDYAN GR BK	09/03/77	5	161	370589	13293.25	176515	10858 89	67548	2016.67	18.6	82
195	ADHIYAMAN GR BK	27/12/85	1	25	67370	1739.91	28803	1868.99	7269	274.46	14.7	107
196	VALLALAR GR BK	19/06/86	2	22	59732	1581.64	23594	1859.68	3505	139.95	7.5	118
	TAMILNADU		8	208	497691	16614.80	228912	14587.56	78322	2431.08	16.7	88
	SOUTHERN REGION		57	2674	9009209	256229.86	3320350	234891.07	1186585	51159.02	21.8	92
	ALL INDIA		427	14497	38857716	1418790.32	12659365	750502.54	5881424	192797.33	25.7	53

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	C U R R E N T		S A V I N G S		T E R M		T O T A L	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	HARYANA KSH GR BANK	1594	115.92	172577	4637.66	52243	7318 26	226414	12071.84
2	GURGAON GRAMIN BANK	3258	192.00	493334	10146.00	55689	17918.00	552281	28256.00
3	HISSAR-SIRSA KSH GR BK	404	176.00	50033	1112.00	12703	2698 00	63140	3986.00
4	AMBALA KURUKSHETRA GR BK	311	25.40	51856	1282.12	15444	2968.78	67611	4276.30
	HARYANA	5567	509.32	767800	17177.78	136079	30903.04	909446	48590.14
5	HIMACHAL GRAMIN BANK	1521	101.59	201067	4443 83	106770	10410 13	309358	14955 55
6	PARVATIYA GRAMIN BANK	348	119 62	23658	753 87	16337	1498 46	40343	2371.95
	HIMACHAL PRADESH	1869	221.21	224725	5197.70	123107	11908.59	349701	17327.50
7	JAMMU RURAL BANK	6402	329 00	164494	4141 00	45037	5632 00	215933	10102.00
8	ELLAQUI DEHATI BANK	3312	136.00	65133	1640.00	76255	1782 00	144700	3558.00
9	KAMRAZ RURAL BANK	9045	942.81	86176	3407 03	26019	2115.34	121240	6465 18
	JAMMU & KASHMIR	18759	1407.81	315803	9188.03	147311	9529.34	481873	20125.18
10	SHIVALIK KSH GR BK	696	154 67	92357	2608.31	12815	2891 67	105868	5654.65
11	KAPURTHALA-FEROZPUR KSH GR BK	736	198.92	71915	1603 93	8110	2402 42	80761	4205.27
12	GURDASPUR-AMRITSAR KSH GR BK	846	400.00	109390	2898 00	17437	3138 00	127673	6436 00
13	MALWA GRAMIN BANK	502	281.01	33793	1322.88	10709	1867 77	45004	3471.66
14	FARIDKOT-BHATINDA KSH GR BK	488	197.90	31032	781.01	4651	2148 83	36171	3127 74
	PUNJAB	3268	1232.50	338487	9214.13	53722	12448.69	395477	22895 32
15	JAIPUR NAGAUR ANCH GR BANK	8348	853 63	165297	5675 26	56475	8771 11	230120	15300 00
16	MARWAR GRAMIN BANK	2509	1225 22	210288	4682.33	88116	10368.79	300913	16276 34
17	SHEKHAWATI GR BANK	2374	70.00	206446	4430 00	44556	6949.00	253376	11449 00
18	MARUDHAR KSH GR BK	6331	167.54	68031	839 13	20322	2225 28	94684	3231.95
19	ALWAR-BHARATPUR ANCH GR BK	1837	325.76	89734	2784.13	26910	3910 32	118481	7020.21
20	ARAVALI KSH GR BK	2332	250.45	85435	1424.31	20625	2624.36	108392	4299.12
21	HADOTI KSH GR BANK	2648	772.00	82949	3747.00	27671	4193.00	113268	8712.00
22	MEWAR ANCH GR BANK	1578	91.00	53428	1188.00	22410	3172 00	77416	4451.00
23	THAR ANCH GR BANK.	2760	147.57	48750	1446.24	21160	1943.57	72670	3537.38
24	BUNDI-CHITTORGARH KSH GR BK	1507	151 51	95975	1162.24	18136	2786.43	115618	4100.18
25	BHILWARA-AJMER KSH GR BK	3302	304.70	61666	1340.59	22820	3102 83	87788	4748.12
26	DUNGARPUR-BANSWARA KSH GR BK	1655	67.47	44474	934.26	11978	1385 04	58107	2386.77
27	SRIGANGANAGAR KSH GR BK	286	294.53	33733	647.46	12652	1875 08	46671	2817.07
28	BIKANER KSH GR BK	103	16.02	20225	241.81	5958	581.49	26286	839.32
	RAJASTHAN	37570	4737.40	1266431	30542.76	399789	53888.30	1703790	89168.46
	NORTHERN REGI	67033	8108.24	2913246	71320.40	860008	118677.96	3840287	198106.60
29	ARUNACHAL PRADESH RURAL BANK	229	52.45	23537	774 98	9350	396.17	33116	1223.60

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS ----CONTD.
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	C U R R E N T		S A V I N G S		T E R M		T O T A L	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	ARUNACHAL PRADESH	229	52.45	23537	774.98	9350	396 17	33116	1223 60
30	PRAGJYOTISH GAONLIA BANK	102918	2507 46	521198	10902 90	140049	6964 18	764165	20374 54
31	LAKHIMI GAONLIA BANK	38997	658.52	293527	4182.28	79301	3559 72	411825	8400 52
32	CACHAR GRAMIN BANK	406	95.85	78886	1132.49	20098	1132.42	99390	2360.76
33	LANGPI DEHANGI RURAL BANK	688	190.20	62104	996.63	12107	696.36	74899	1883.19
34	SUBANSIRI GAONLIA BANK	12134	272.85	91874	1559.21	25569	1103 96	129577	2936.02
	ASSAM	155143	3724.88	1047589	18773.51	277124	13456.64	1479856	35955.03
35	MANIPUR RURAL BANK	1464	78.70	40382	268.90	2887	473 71	44733	821.31
	MANIPUR	1464	78.70	40382	268.90	2887	473.71	44733	821.31
36	KHASI JAINTIA RURAL KA BANK	964	1659.75	74435	2446 73	15031	2116 62	90430	6223.10
	MEGHALAYA	964	1659.75	74435	2446.73	15031	2116.62	90430	6223.10
37	MIZORAM RURAL BANK	199	379 24	39130	1638.96	2089	814 92	41418	2833.12
	MIZORAM	199	379.24	39130	1638.96	2089	814.92	41418	2833.12
38	NAGALAND RURAL BANK	113	30 66	2971	139.05	462	74 87	3546	244.58
	NAGALAND	113	30.66	2971	139.05	462	74.87	3546	244.58
39	TRIPURA GRAMIN BANK	26090	2679.86	276599	4212.82	54912	5310 82	357601	12203.50
	TRIPURA	26090	2679.86	276599	4212.82	54912	5310.82	357601	12203.50
	NORTH-EASTERN REGION	184202	8605.54	1504643	28254.95	361855	22643.75	2050700	59504.24
40	BHOJPUR ROHTAS GR BK	4023	1316 00	476858	11317.00	110605	11619.00	591486	24252.00
41	CHAMPARAN KSH GR BK	1001	207.00	206997	4156.00	64941	4819.00	272939	9182.00
42	MAGADH GRAMIN BANK	1911	505.67	309980	10785.35	91100	9033.09	402991	20324.11
43	KOSI KSH GRAMIN BK	1540	632.11	180650	4030.05	69720	4966.17	251910	9628.33
44	VAISHALI KSH GR BK	783	261.80	296451	6320.11	87031	7367.33	384265	13949.24
45	MONGHYR KSH GR BK	821	564.68	178028	5411.18	38878	4227.30	217727	10203.16
46	SANTHAL PARGANAS GR BK	788	898.07	184732	6423.62	60758	3430.72	246278	10752.41
47	MADHUBANI KSH GR BK	572	127.73	106453	1667.30	27267	2354.68	134292	4149.71
48	NALANDA GRAMIN BANK	3558	250.00	144968	2607.00	20565	3055.00	169091	5912.00
49	SINGHBHUM KSH GR BK	672	510.00	147406	3075.00	18074	2892.00	166152	6477.00
50	MITHILA KSH GR BANK	490	150.71	97679	2259.84	22381	2437.20	120550	4847.75
51	SAMASTIPUR KSH GR BK	908	399.64	81339	3095.67	20498	2132.38	102745	5627.69
52	PALAMAU KSH GR BANK	875	228.00	81678	4505.00	26720	2328.00	109273	7061.00
53	RANCHI KSH GR BANK	581	435.49	105059	2992.94	25283	2525.14	130923	5953.57
54	GOPALGANJ KSH GR BK	325	196.00	107692	3704 00	22453	2554.00	130470	6454.00

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS ----CONTD.
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	CURRENT		SAVINGS		TERM		TOTAL	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
55	SARAN KSH GRAMIN BK	289	27.00	109941	2294.00	26287	2837.00	136517	5158.00
56	SIWAN KSH GRAMIN BK	569	174.87	113380	3370.97	36798	4157.08	150747	7702.92
57	GIRIDIH KSH GR BANK	205	40.00	35485	914.00	7666	944.00	43356	1898.00
58	HAZARIBAGH KSH GR BK	159	234.00	41235	1648.00	10240	1204.00	51634	3086.00
59	PATALIPUTRA GR BANK	209	21.62	18993	490.71	4680	767.71	23882	1280.04
60	BHAGALPUR-BANKA KSH GR BK	463	190.12	32146	903.94	7484	795.44	40093	1889.50
61	BEGUSARAI KSH GR.BK	167	24.69	19949	582.00	4896	655.68	25012	1262.37
	BIHAR	20909	7395.20	3077099	82553.68	804325	77101.92	3902333	167050.80
62	PURI GRAMIN BANK	3645	203.16	182557	2820.68	39568	4431.12	225770	7454.96
63	BOLANGIR ANCH GR BK	2801	920.03	334528	5213.87	51863	3728.24	389192	9862.14
64	CUTTACK GRAMIN BANK	4642	282.10	337053	4979.70	80277	6450.47	421972	11712.27
65	KORAPUT PANCHABATI GR BK	1714	2245.00	184465	3506.00	32536	2410.00	218715	8161.00
66	KALAHANDI ANCH GR BK	1190	1046.00	106492	1719.00	13894	1100.00	121576	3865.00
67	BAITARANI GR BANK	314	44.05	178699	2747.96	37960	3492.95	216973	6284.96
68	BALASORE GR BANK	866	77.87	156968	1283.74	33641	2048.12	191475	3409.73
69	RUSHIKULYA GR BK	2861	129.36	120434	1635.18	37765	4022.89	161060	5787.43
70	DHENKANAL GR BK	265	41.40	85087	1156 59	25485	2752.52	110837	3950.51
	ORISSA	18298	4988.97	1686283	25062 72	352989	30436.31	2057570	60488.00
71	GAUR GRAMIN BANK	34406	287.00	234109	6457 00	131456	8364.00	399971	15108 00
72	MALLABHUM GR BK	1465	138.00	567866	9514.00	174538	11846.00	743869	21498.00
73	MAYURAKSHI GR BK	758	137.78	194843	3074.15	67410	4559.64	263011	7771 57
74	UTTAR BANGA KSH GR BK	4156	308.00	220902	5348.00	82961	5207 00	308019	10863 00
75	NADIA GRAMIN BANK	54	100.79	94128	3095 89	78600	2907.67	172782	6104.35
76	SAGAR GRAMIN BANK	2180	95.58	322646	6943.50	83261	7398 56	408087	14437.64
77	BARDHAMAN GR BANK	1217	75.96	189190	4887.95	64810	5819.35	255217	10783.26
78	HOWRAH GRAMIN BANK	1479	94.00	120426	3455 00	37706	3605.00	159611	7154.00
79	MURSHIDABAD GR BK	562	34.00	67690	1291.00	34619	1931.00	102871	3256.00
	WEST BENGAL	46277	1271.11	2011800	44066.49	755361	51638.22	2813438	96975.82
	EASTERN REGION	85484	13655.28	6775182	151682.89	1912675	159176.45	8773341	324514.62
80	KSHETRIYA GR BK HOSHANGABAD	3867	277.00	97569	3230 00	27264	3972.00	128700	7479.00
81	BILASPUR-RAIPUR KSH GR BK	5198	1124.00	160081	3890 00	46945	5146.00	212224	10160.00
82	REWA-SIDHI GR BANK	1756	494.13	180584	5379 22	47168	6167.40	229508	12040.75
83	BUNDELKHAND KSH GR BK	6329	596.00	112808	2503 00	40598	3978.00	159735	7077.00
84	SHARDA GRAMIN BANK	2946	172.09	143018	1882 25	30160	3390.21	176124	5444.55
85	SURGUJA KSH GR BK	3189	448.03	110766	2988.82	36460	3039.30	150415	6476.15
86	BASTAR KSH GR BK	3505	258.00	63471	2271 00	22807	1506 00	89783	4035.00
87	DURG-RAJNANDGAON GR BK	4503	399.08	162282	5256 44	38656	4772 22	205441	10427.74
88	JHABUA-DHAR KSH GR BK	10592	323 75	145155	2540 18	29149	3681 98	184896	6545.91
89	RAIGARH KSH GR BK	4501	306.03	62044	1810 41	25016	1796 96	91561	3913.40
90	SHIVPURI-GUNA KSH GR BK	3312	448 00	55605	1785 00	24802	3085.00	83719	5318.00

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS ----CONTD.
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	CURRENT		SAVINGS		TERM		TOTAL	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
91	DAMOH-PANNA-SAGAR KSH GR BK	2533	198 00	80771	1497.00	22631	2699.00	105935	4394.00
92	DEWAS-SHAJAPUR KSH GR BK	614	119.00	77176	1780.00	16640	3054.00	94430	4953.00
93	NIMAR KSH GR BANK	3194	409.66	78909	2652 45	20070	3311.34	102173	6373.45
94	MANDLA-BALAGHAT KSH GR BK	2663	590.29	115565	1124.92	19702	1339.93	137930	3055.14
95	CHHINDWARA-SEONI KSH GR BK	3342	549.23	77937	1577.71	18880	2226.20	100159	4353.14
96	RAJGARH-SEHORE KSH GR BK	3916	178.00	33916	1178.00	16512	1806.00	54344	3162.00
97	SHAHDOL KSH GR BK	1029	152.14	68930	1171.85	13035	1415.47	82994	2739.46
98	RATLAM-MANDSAUR KSH GR BK	1501	151.89	55252	1225.53	19452	2328.59	76205	3706.01
99	CHAMBAL KSH GR BK	714	103.02	33598	771.64	11095	1358.98	45407	2233.64
100	MAHAKAUSHAL KSH GR BK	780	83.93	60066	661.46	8168	933.52	69014	1678.91
101	INDORE-UJJAIN KSH GR BK	708	170.72	46326	827.63	8210	1208.84	55244	2207 19
102	GWALIOR-DATIA KSH GR BK	788	155.00	25258	757.00	8250	1324.00	34296	2236.00
103	VIDISHA-BHOPAL KSH GR BK	500	98.49	18555	667.36	4783	1038.15	23838	1804.00
	MADHYA PRADESH	**71980**	**7805.48**	**2065642**	**49428.87**	**556453**	**64579.09**	**2694075**	**121813.44**
104	PRATHAMA BANK	47240	892.00	639160	15611.00	101705	9073.00	788105	25576.00
105	GORAKHPUR KSH GR BK	8743	932.00	766846	19703.00	186754	14682.00	962343	35317.00
106	SAMYUT KSH GR BK	2002	1777.00	586486	16251.00	140475	15376.00	728963	33404.00
107	BARABANKI GR BK	3440	523.00	304956	6934.00	49746	5084.00	358142	12541.00
108	RAEBARELI KSH GR BK	51683	292.23	237074	4384.27	2453	4524.97	291210	9201.47
109	FARRUKHABAD GR BK	2562	1286.00	203223	6214.00	37986	4936.00	243771	12436.00
110	BHAGIRATH GR BK	2674	1236.42	633663	9937.75	80989	6389.63	717326	17563.80
111	BALLIA KSH GR BK	1919	108.20	197803	5569.58	66000	5822.44	265722	11500.22
112	SULTANPUR KSH GR BK	8630	287.00	454360	7154.00	27734	7241.00	490724	14682.00
113	AVADH GRAMIN BANK	4077	859.00	485911	9201.00	79932	7471.00	569920	17531.00
114	KANPUR KSH GR BK	1688	518.00	235650	6401.00	57844	6203.00	295182	13122.00
115	SRAVASTI GR BK	1860	449.48	295282	5325.33	38889	3682.26	336031	9457.07
116	ETAWAH KSH GR BK	746	55.00	90987	2180.00	20103	2329.00	111836	4564.00
117	KISAN GRAMIN BANK	1103	80.98	98735	2079.17	13512	1672.82	113350	3832.97
118	KSHETRIYA KISAN GR BK	2258	79.26	13114	1861.18	144409	2056.56	159781	3997.00
119	KASHI GRAMIN BANK	768	608.60	188819	4787.30	46215	5692.45	235802	11088.35
120	BASTI GRAMIN BANK	1926	314.00	266793	6913.00	121379	3977.00	390098	11204.00
121	ALLAHABAD KSH GR BK	1049	490.00	216547	5472.00	41378	5045.00	258974	11007.00
122	PRATAPGARH KSH GR BK	1126	241.62	242745	4578.35	42310	3904.11	286181	8724.08
123	FAIZABAD KSH GR BK	1736	204.87	241399	4619.92	41981	3755.31	285116	8580.10
124	FATEHPUR KSH GR BK	850	157.00	97876	2536.00	23995	1905.00	122721	4598.00
125	BAREILLY KSH GR BK	1149	193.10	154569	3315.15	19763	2927.37	175481	6435.62
126	DEVI PATAN KSH GR BK	2287	808.00	183590	5090.00	25917	2641.00	211794	8539.00
127	ALIGARH KSH GR BK	1636	180.06	232266	4645.33	42730	7136.41	276632	11961.80
128	TULSI GRAMIN BANK	2057	644.72	188171	3751.21	40010	2929.62	230238	7325.55
129	ETAH GRAMIN BANK	1639	131.38	168559	2411.43	21496	3065.95	191694	5608.76
130	GOMTI GRAMIN BANK	1425	460.70	292598	5710.21	52832	6755.83	346855	12926.74
131	CHHATRASAL GR BANK	3503	638.28	163521	3656.01	23434	2567.02	190458	6861.31
132	RANI LAKSHMI BAI KSH GR BK	850	129.40	73473	1432.49	16423	1651.03	90746	3212.92
133	VIDUR GRAMIN BANK	13955	215.45	60428	1933.58	10775	1210.41	85158	3359.44
134	SHAHJAHANPUR KSH GR BK	1066	55.28	58467	1583 49	9691	1182 32	69224	2821 09

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS ----CONTD.
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	CURRENT		SAVINGS		TERM		TOTAL	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
135	NAINITAL-ALMORA KSH GR BK	1070	136.08	66805	1566.07	20136	2388.60	88011	4090 75
136	VINDHYAVASINI GR BK	3046	571.00	126453	2153.00	23619	2626.00	153118	5350.00
137	SARAYU GRAMIN BANK	1168	156.52	157112	3038.56	19730	1670.28	178010	4865.36
138	JAMUNA GRAMIN BANK	1517	118.76	93630	1594.57	19604	3019.80	114751	4733 13
139	MUZAFFARNAGAR KSH GR BK	262	12.95	50360	1453.16	7446	1014.03	58068	2480.14
140	PITHORAGARH KSH GR BK	200	80.32	29831	1351.90	10769	1617.32	40800	3049.54
141	GANGA-YAMUNA GR BK	1335	184.00	51303	901.00	14273	1737.00	66911	2822.00
142	ALAKNANDA GR BANK	503	100.32	40573	1271.50	14829	1449.77	55905	2821.59
143	HINDON GRAMIN BANK	435	58.89	35377	976.44	8218	736.35	44030	1771 68
	UTTAR PRADESH	187183	16266.87	8724515	195547.95	1767484	169148.66	10679182	380963.48
	CENTRAL REGION	259163	24072.35	10790157	244976.82	2323937	233727.75	13373257	502776.92
144	KUTCH GRAMIN BANK	793	50.00	39329	1371.00	13829	2716.00	53951	4137.00
145	JAMNAGAR GRAMIN BK	216	24.60	62711	1558.07	15948	2676 85	78875	4259.52
146	BANASKANTHA-MEHSANA GR BK	21239	76.95	97718	1765.47	1014	2541 58	119971	4384.00
147	PANCHMAHAL GR BANK	1069	42.35	124801	1769 13	23453	2422 33	149323	4233.81
148	SURENDRANAGAR-BHAVNAGAR GR BK	345	74 00	27730	668 00	9440	1254 00	37515	1996.00
149	VALSAD-DANGS GR BK	597	165.32	70266	1830.12	12396	1415 08	83259	3410.52
150	SURAT-BHARUCH GR BK	691	70.43	66578	1898.34	11433	1657 06	78702	3625.83
151	SABARKANTHA-GANDHINAGAR GR BK	714	150.24	43062	1092 00	11019	1614.83	54795	2857.07
152	JUNAGADH-AMRELI GR BK	239	47 39	29189	681 73	8395	1452.06	37823	2181 18
	GUJARAT	25903	701.28	561384	12633.86	106927	17749.79	694214	31084.93
153	MARATHWADA GR BANK	10317	1547.14	320493	11611.11	60314	7185 53	391124	20343.78
154	AURANGABAD-JALNA GR BK	2111	274 00	127341	3608.00	11226	1431.00	140678	5313 00
155	CHANDRAPUR-GADCHIROLI GR BK	958	89.09	114038	2287.33	21470	1903.44	136466	4279.86
156	AKOLA GRAMIN BANK	720	136 61	65270	1614 02	9776	954.17	75766	2704.80
157	RATNAGIRI-SINDHUDURG GR BK	494	102.50	71144	1050 21	14210	1548.81	85848	2701.52
158	SOLAPUR GRAMIN BANK	660	122.20	57549	756.58	9608	1142.40	67817	2021 18
159	BHANDARA GRAMIN BANK	703	37 81	87967	1037 04	16268	1434.09	104938	2508.94
160	YAVATMAL GRAMIN BANK	952	92.29	27244	1620.13	6686	896.98	34882	2609.40
161	BULDHANA GRAMIN BANK	925	29.19	29922	797.41	7660	614.46	38507	1441 06
162	THANE GRAMIN BANK	866	135 88	33715	1764.73	6101	749.00	40682	2649 61
	MAHARASHTRA	18706	2566.71	934683	26146.56	163319	17859.88	1116708	46573.15
	WESTERN REGION	44609	3267.99	1496067	38780.42	270246	35609.67	1810922	77658.08
[illegible]	NAGARJUNA GR BK	76568	3096.32	296284	5326 02	32560	5720.57	405412	14142.91
164	RAYALSEEMA GR BK	3068	499 46	440062	5070.47	227048	12473 48	670178	18043.41
165	SRI VISAKHA GR BK	4823	2277.00	557120	5394.00	105468	11969.00	667411	19640.00
166	SREE ANANTHA GR BK	918	98.88	186624	2899.53	88486	7293.77	276028	10272.18
167	SHRI VENKETESHWARA GR BK	4262	177.80	235947	1671 60	36037	4582 00	276246	6431 40
168	SRI SARASWATHI GR BK	5816	401.43	74234	2639 38	36919	4874.70	116969	7915 51

STATEMENT No. 5 - REGION/STATE/BANK-WISE CLASSIFICATION OF DEPOSITS ----CONTD
(AS AT THE END OF MARCH 1996)

(AMOUNT IN LAKHS OF RUPEES)

SR. No.	NAME OF THE RRB/STATE/REGION	CURRENT		SAVINGS		TERM		TOTAL	
		ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT	ACCOUNTS	AMOUNT
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
169	SANGAMESHWRA GR BK	1187	719 00	81370	1604 00	32802	3175 00	115359	5498 00
170	NANJIRA GR BK	1806	188 57	124072	1568 47	45537	3703 00	171415	5460.04
171	PINAKINI GR BK	1020	419 00	175002	2081 00	111100	4773 00	287122	7273 00
172	KAKATHIYA GR BK	930	407.74	57101	811 07	17249	1333 27	75280	2552.08
173	CHAITANYA GR BK	586	191 41	107159	1124 94	24647	3119 48	132392	4435.83
174	SHRI SATHAVAHANA GR BK	1375	464.84	64476	1291 97	17278	2843.45	83129	4600.26
175	GOLCONDA GR BK	488	181 64	22950	644 18	5451	1205 68	28889	2031 50
176	SRIRAMA GR BK	833	76 00	53145	670 00	10724	1680 00	64702	2426.00
177	KANAKADURGA GR BK	761	96 77	42452	795 33	8357	1823 21	51570	2715 31
178	GODAVARI GRAMIN BANK	221	46 01	60711	603 58	14336	2035 24	75268	2684.83
	ANDHRA PRADESH	104662	9341 87	2578709	34195 54	813999	72584.85	3497370	116122.26
179	TUNGABHADRA GR BK	54547	1327 00	438259	6147 00	189744	11775.00	682550	19249 00
180	MALAPRABHA GR BK	43043	364.53	497488	7961 41	232518	13604 05	773049	21929 99
181	CAUVERY GR BK	1723	1401 00	269433	2203 00	24551	4948 00	295707	8552 00
182	KRISHNA GR BK	4176	417 00	186124	3584 00	47341	5376 00	237641	9377 00
183	CHITRADURGA GR BK	3516	178 91	156751	1846 99	53531	3695.54	213798	5721.44
184	KALPATHARU GR BK	788	685.35	197077	2748 99	30538	3760.04	228403	7194.38
185	KOLAR GR BK	10494	172.00	154203	2086.00	43914	3344 00	208611	5602 00
186	BIJAPUR GR BK	277	28.00	217477	3182.00	117541	5546.00	335295	8756.00
187	CHICKMAGALUR-KODAGU GR BK	3185	100.68	48182	1422 11	14051	2004.66	65418	3527 45
188	SAHYADRI GR BK	486	99.24	61945	688.06	13395	1299.32	75826	2086.62
189	NETRAVATI GR BK	246	19 87	42605	371 66	7515	724 33	50366	1115.86
190	VARADA GR BK	6443	76.12	34735	429.83	17445	1628 83	58623	2134.78
191	VISVESHWARAYA GR BK	2064	60.57	42854	538.20	9642	897.51	54560	1496 28
	KARNATAKA	130988	4930.27	2347133	33209.25	801726	58603.28	3279847	96742.80
192	SOUTH MALABAR GR BK	4408	951.00	954901	5676.00	114285	7721.00	1073594	14348 00
193	NORTH MALABAR GR BK	73800	605.00	494862	4372.00	92045	7425.00	660707	12402.00
	KERALA	78208	1556.00	1449763	10048.00	206330	15146.00	1734301	26750.00
194	PANDYAN GR BK	15274	325.85	277320	4153.96	77995	8813.44	370589	13293.25
195	ADHIYAMAN GR BK	1457	45.69	54607	697.78	11306	996.44	67370	1739.91
196	VALLALAR GR BK	343	81.83	47967	604 80	11422	895.01	59732	1581.64
	TAMILNADU	17074	453.37	379894	5456.54	100723	10704.89	497691	16614.80
	SOUTHERN REGION	330932	16281.51	6755499	82909.33	1922778	157039.02	9009209	256229.84
	ALL INDIA	971423	73990 91	30234794	617924.81	7651499	726874 60	38857716	1418790.3